

# अनुवाददीपिका ।

अर्थात्

संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत में  
अनुवाद करने की रीतियों का वर्णन ।

प्रथम भाग ।

वाराणसीस्थ राजकीय संस्कृत विद्यालय के अध्यापक  
पण्डित शीतलाप्रसाद त्रिपाठी ने

बनाया ।

SouH  
TRI



29/24

SANSKRIT—HINDI COMPOSITION

BY

PANDIT SITALĀ PRASĀDA  
SENIOR PROFESSOR SANSKRIT COLLEGE, BENARES.

Part I.

*All rights reserved*

PRINTED AND PUBLISHED BY  
E. J. LAZARUS & Co., BENARES.  
UNDER THE DIRECTIONS OF THE DEPARTMENT OF  
PUBLIC INSTRUCTION, U. P. OF AGRA AND OUDH

1903.



## सूचना ।

संस्कृत पाठशालाओं के अध्यापकों को चाहिये कि प्रथमा परिचा के प्रथम विभाग अर्थात् चौथी श्रेणी के विद्यार्थियों को इस ग्रन्थ के आरम्भ से लेकर उपसर्ग और अच्चाय\* रहित, प्रथम पाठ, मध्यम विभाग अर्थात् तीसरी श्रेणी के विद्यार्थियों को विभक्त्यर्थ† रहित दूसरा पाठ, और उच्च विभाग अर्थात् दूसरी और पहिली श्रेणी के विद्यार्थियों को विभक्त्यर्थ‡ रहित तीसरा और विभक्त्यर्थ§ रहित चौथा पाठ, पढ़ावें । और इस पहिली श्रेणी के विद्यार्थियों को इस ग्रन्थ के आरम्भ से लेकर उन के निज पाठ के अन्त तक जितना पढ़ाया गया हो उस सब का अच्छा अभ्यास करावें । और पढ़ाने के समय संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने के लिये इस ग्रन्थ के वाक्यों से व्यतिरिक्त और भी सुगम २ वाक्य दिया करें जिस में उन की शक्ति बड़े ।

प्रथमपरीक्षार्थ मध्यमा परिचा के पहिले वर्ष के विद्यार्थियों को उपसर्ग अच्चाय और सम्पूर्ण पाचवां पाठ, दूसरे वर्ष के विद्यार्थियों को दूसरे पाठ का विभक्त्यर्थ और सम्पूर्ण छठवां पाठ, तीसरे वर्ष के विद्यार्थियों को तीसरे पाठ का विभक्त्यर्थ और सम्पूर्ण सातवां पाठ, चौथे वर्ष के विद्यार्थियों को चौथे पाठ का विभक्त्यर्थ और सम्पूर्ण आठवां पाठ, पढ़ावें । और इन प्रत्येक वर्षों के विद्यार्थियों को भी इस ग्रन्थ के आरम्भ से लेकर उन के निज २ पाठों के अन्त तक जितना पढ़ाया गया हो, प्रति वर्ष में, उस सम्पूर्ण का अच्छा अभ्यास करावें । और पूर्ववत् अनुवाद करने के लिये उतरोत्तर कुछ कठिन २ वाक्य भी दिया करें जिस में उन की शक्ति क्रम २ से बढ़ती जाय ।

\* पृष्ठ १४ पंक्ति १ से पृष्ठ २० पंक्ति १४ तक उपसर्ग और अच्चाय हैं ।

† पृष्ठ ५१ पंक्ति १४ से पृष्ठ ६० के अन्त तक विभक्त्यर्थ हैं ।

‡ पृष्ठ ७८ पंक्ति १ से पृष्ठ ८० के अन्त तक विभक्त्यर्थ हैं ।

§ पृष्ठ ६८ पंक्ति ५ से १० पृष्ठ के अन्त तक विभक्त्यर्थ हैं ।





## भूमिका ।

संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थी यद्यपि व्याकरण आदि शास्त्रों के अनेक ग्रन्थ पढ़ जाते हैं परन्तु संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद करने की बहुत ही अल्प सामर्थ्य रखते हैं । यदि उन को उक्त भाषाओं में से एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने के लिये दो चार वाक्य भी दिये जायें तो उस की रीतियों के न जानने के कारण प्रायः घबड़ा जाते हैं और यदि किसी प्रकार कुछ किया भी तो वह बहुधा अशुद्ध और असङ्गत होता है । इस परम न्यूनता के दूर करने के लिये वाराणसीस्थ राजकीय संस्कृतविद्यालय के प्रधानाधिपति विविधविद्याविचारवाचस्पति विज्ञवर श्रीमान वेनिस साहेब महाशय के आज्ञानुसार मैंने इस ग्रन्थ के बनाने का आरम्भ किया और इस का नाम अनुवाददीपिका रक्खा । सम्प्रति इस का प्रथम भाग बन कर प्रकाशित हुआ है । इस भाग में संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं के बहुत से ऐसे विषय लिखे गये हैं जो उन भाषाओं के परस्पर अनुवाद करने में अत्यन्त उपकारक हैं । यदि इस के पढ़ने से संस्कृत के छात्रों का कुछ भी उपकार होगा तो मैं अपना परिश्रम सर्वथा सफल समझूंगा ।



श्रीगणेशाय नमः ॥

## अनुवाददीपिका ॥

—१००३१११००००—

सोरठा ।

हिय धरि नन्दकुमार, छात्रन के उपकार-हित ।

बरनत मति अनुसार, कछुक रीति अनुवाद की ॥

इस पुस्तक में संस्कृत से हिन्दी और हिन्दी से संस्कृत में उल्था करने की कुछ रीतें कही जायंगी ॥

संस्कृत के षण्डित(छ कारक) मानते हैं(कर्ता कर्म करण सम्प्रदान अपादान और अधिकरण) परन्तु हिन्दी के वैयाकरण अपादान के आगे सम्बन्ध और अधिकरण के आगे सम्बोधन को जोड़ कर आठ कारक स्वीकार करते हैं ॥

संस्कृत में तीन लिङ्ग हैं पुलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक-लिङ्ग । परन्तु हिन्दी में दो ही लिङ्ग हैं पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग । संस्कृत के नपुंसकलिङ्ग के शब्द बहुधा हिन्दी के पुलिङ्ग शब्दों में अन्तर्गत हो जाते हैं ॥

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में शब्द के आगे(सात विभक्तियां जोड़ी जाती हैं, प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, और सप्तमी ॥)

संस्कृत में तीन वचन हैं(एकवचन द्विवचन और बहुवचन)। परन्तु हिन्दी में दो ही वचन हैं एकवचन और बहुवचन । हिन्दी में बहुवचन ही से कहीं दो पदार्थ और कहीं दो से अधिक समझे जाते हैं । जैसे । बालको पठतः । लड़के पढ़ते हैं ।

बालकाः पठन्ति । लड़के पढ़ते हैं । यहां हिन्दी में बहुवचन ही से पहिले वाक्य में दो लड़के और दूसरे में दो से अधिक समझे जाते हैं । क्योंकि हिन्दी में द्विवचन नहीं होता । कहीं २ द्वित्वकी स्पष्टता के लिये विशेष्य के साथ “दोनों” अथवा “दो” शब्द को जोड़ते हैं । जैसे बालकौ क्रीडतः । दोनों लड़के खेलते हैं । अथवा दो लड़के खेलते हैं । ऐसे ही कहीं २ बहुत्व की स्पष्टता के लिये, “लोग” “सब” इत्यादि शब्दों का प्रयोग करते हैं । जैसे । ब्राह्मणा भुञ्जते । ब्राह्मण लोग भोजन करते हैं । अथवा धावन्ति । घोड़े सब दौड़ते हैं ॥

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में धातु दो प्रकार के होते हैं सकर्मक और अकर्मक । सकर्मक उस धातु को कहते हैं जिस के व्यापार और फल भिन्न २ स्थानों में हों । जैसे । यच्चदत्तस्तपडुलान् पचति । यच्चदत्त चावल पकाता है । यहां पकाने का व्यापार अर्थात् काम यच्चदत्त में है और उस का फल अर्थात् चावल का केमल होना चावल में है । इस लिये संस्कृत में “पच” और हिन्दी में “पकाना” दोनों धातु सकर्मक हैं । और जिस के व्यापार और फल दोनों एक ही ठौर रहते हैं उस धातु को अकर्मक कहते हैं । जैसे । बालकः शेते । लड़का सोता है । यहां सोने का व्यापार अर्थात् काम लड़के में है और उसका फल भी लड़के ही में है । इस लिये संस्कृत में “शे” और हिन्दी में “सोना” दोनों धातु अकर्मक हैं ॥

संस्कृत में धातुओं को दस गणों में विभाग करते हैं । ये गण ये हैं । भ्यादि, अदादि, जुहोत्यादि, दिवादि, स्यादि तुदादि, हधादि, मनादि, प्रणादि और घ्रादि । जो धातु जिस गण के आदि में पड़ा रहता है वह उसी के नाम से पुकारा जाता है । हिन्दी में ऐसा विभाग नहीं है ॥

जैसे संस्कृत में सकर्मक धातु के आगे कर्ता और कर्म अर्थ में और अकर्मक धातु के आगे कर्ता और भाव अर्थ में लकार के स्थान में तिप् आदि प्रत्यय स्थापन करके कर्तृवाच्य-तिङन्तक्रिया कर्मवाच्यतिङन्तक्रिया और भाववाच्यतिङन्तक्रिया बनाई जाती हैं जैसे ही हिन्दी में भी कर्तृप्रधानक्रिया कर्मप्रधान-क्रिया और भावप्रधानक्रिया बनती हैं। भेद इतना है कि हिन्दी में लकारों का विधान नहीं होता ॥

संस्कृत में कर्तृवाच्यतिङन्तक्रिया के धातु तीन प्रकार के होते हैं। परस्मैपदी आत्मनेपदी और उभयपदी। जिन धातुओं के आगे परस्मैपद अर्थात् तिप् आदि प्रत्यय स्थापन किये जाते हैं वे परस्मैपदी जिन के आगे आत्मनेपद अर्थात् त आदि प्रत्यय जोड़े जाते हैं वे आत्मनेपदी और जिन के आगे दोनों प्रकार के प्रत्यय लगाये जाते हैं वे उभयपदी कहाते हैं। हिन्दी में ये भेद नहीं हैं ॥

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में क्रिया के मुख्य काल तीन हैं धर्तमान भूत और भविष्य। धर्तमान उस काल को कहते हैं जिस की क्रिया का आरम्भ तो हुआ हो पर उस की समाप्ति न हुई हो। जैसे। विष्णुमित्रो लिखति। विष्णुमित्र लिखता है। इस से ज्ञात होता है कि विष्णुमित्र ने लिखने का आरम्भ तो किया है पर उस का लिखना अभी तक समाप्त नहीं हुआ है। अर्थात् वह लिखता जाता है। भूत उस काल को कहते हैं जिस की क्रिया की समाप्ति हुई हो। जैसे। यज्ञदत्तोऽलेखीत्। यज्ञदत्त ने लिखा। इस से समझ पड़ता है कि यज्ञदत्त ने लिखना समाप्त किया। भविष्य उस काल को कहते हैं जिस की क्रिया का आरम्भ होनेवाला हो। जैसे। रामदत्तो लेखिष्यति। रामदत्त लिखेगा। इस से प्रकाश होता है कि रामदत्त लिखने का आरम्भ करेगा ॥



जैसे संस्कृत में जहां कर्ता का वाचक “युष्मद्” शब्द रहता है वहां कर्तृवाच्यतिङन्तक्रिया में मध्यमपुरुष जहां “अस्मद्” शब्द रहता है वहां उत्तमपुरुष और जहां उन दोनों से भिन्न कोई शब्द रहता है वहां प्रथमपुरुष होता है तैसे ही हिन्दी में जहां कर्ता का बोधक “तू” शब्द रहता है वहां कर्तृप्रधानक्रिया में मध्यमपुरुष जहां “मैं” शब्द रहता है वहां उत्तमपुरुष और जहां उन दोनों से भिन्न कोई शब्द रहता है वहां प्रथमपुरुष होता है। और दोनों भाषाओं में कर्ता के अनुसार उक्त क्रियाओं के वचन होते हैं। अर्थात् संस्कृत में यदि कर्ता एकवचनान्त हो तो क्रिया एकवचनान्त यदि कर्ता द्विवचनान्त हो तो क्रिया द्विवचनान्त यदि कर्ता बहुवचनान्त हो तो क्रिया बहुवचनान्त होती है। और हिन्दी में यदि कर्ता एकवचनान्त हो तो क्रिया एकवचनान्त यदि कर्ता बहुवचनान्त हो तो क्रिया बहुवचनान्त होती है ॥

संस्कृत में कर्ता के लिङ्ग के अनुसार कर्तृवाच्यतिङन्तक्रिया के रूप नहीं पलटते। परन्तु हिन्दी में विधिक्रिया को और सम्भावनाक्रिया को और होना धातु की है, हैं, हो, हूँ इन चार क्रियाओंको छोड़ कर इतर सकल कर्तृप्रधान क्रियाओं के रूप बदल जाते हैं। जैसे। बालकः पठति। लड़का पढ़ता है। बालिका पठति। लड़की पढ़ती है। यहां संस्कृत में कर्ता के लिङ्ग के अनुसार “पठति” क्रिया का रूप नहीं बदला। परन्तु हिन्दी में जहां पुल्लिङ्ग कर्ता है वहां “पढ़ता है” और जहां स्त्रीलिङ्ग कर्ता है वहां “पढ़ती है” होगया ॥

**पहिला पाठ।**

कर्ता कारक।

कर्ता उसे कहते हैं जिस में व्यापार हो अर्थात् जो प्रधान-क्रिया को करे। जैसे। यज्ञदत्तः पचति। यज्ञदत्त पकाता है।

यहां यज्ञदत्त कर्ता है। क्योंकि एकाने का काम अर्थात् बूल्हे में लकड़ी रखना इत्यादि उसी के अधीन है।

संस्कृत में कर्तृवाच्यतिङन्तक्रिया और हिन्दी में कर्तृ-प्रधानक्रिया के कर्ता के आगे प्रथमा विभक्ति जोड़ी जाती है। संस्कृत में प्रथमा विभक्ति के बहुधा विसर्ग आदि चिन्ह रहते हैं। परन्तु हिन्दी में उस का कोई चिन्ह नहीं रहता। जैसे। उक्त उदाहरण में संस्कृत में यज्ञदत्त शब्द के आगे विसर्ग चिन्ह है पर हिन्दी में उस का कोई चिन्ह नहीं है। कभी २, ने चिन्ह आता है इस की व्यवस्था आगे लिखेंगे।

संस्कृत में प्रथमा विभक्ति ।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सु	औ	जस्

प्रथम आदि पुरुषों के सर्वनाम ॥

संस्कृत में तद् युष्मद् और अस्मद् शब्द हिन्दी में वह तू और मैं शब्द ॥

		पुल्लिङ्ग ॥	
	एक. पु.	म. पु.	उ. पु.
	सं:	त्थम्	अहम्
एक.	यह	तू.	मैं
द्वि.	तौ	युवाम्	आयाम्
बहु.	वे दोनों	तुम दोनों	हम दोनों
बहु.	ते	यूयम्	वयम्
बहु.	वे	तुम	हम

ऊपर लिखे हुए शब्दों में से संस्कृत में युष्मद् और अस्मद् शब्द के रूप स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में भी वैसे ही

होते हैं जैसे पुल्लिङ्ग में। हिन्दी में समस्त सर्वनामों के रूप पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में समान होते हैं ॥

		स्त्रीलिङ्ग ।	
प्रथम पु०		मध्यम पु०	उत्तम पु०
एकव०	मा	पुल्लिङ्गवत्	पुल्लिङ्गवत्
एकव०	घह	"	"
द्विव०	तं	"	"
बहुव०	वे दोनों	"	"
बहुव०	ताः	"	"
बहुव०	वे	"	"
		नपुंसकलिङ्ग ।	
प्रथम पु०		मध्यम पु०	उत्तम पु०
एकव०	तत्	पुल्लिङ्गवत्	पुल्लिङ्गवत्
एकव०	घह	"	"
द्विव०	ते	"	"
बहुव०	वे दोनों	"	"
बहुव०	तानि	"	"
बहुव०	वे	"	"

संस्कृत में अस धातु । अदादि । परस्मैपदी । अकर्मक । वर्तमान काल । लट् लकार । कर्तृवाच्यतिङन्तक्रिया । हिन्दी में होना धातु । अकर्मक । वर्तमान काल । कर्तृप्रधानक्रिया ।

संस्कृत में प्रथम आदि पुरुषों के परस्मैपदसञ्ज्ञक प्रत्यय ।

प्रथम पु०	मध्यम पु०	उत्तम पु०
एकव०	तिप्	सिप्
		मिप्

द्विप.	तस्	थस्	थस्
षण्णुप.	मि	थ	मस्

क्रियाओं के रूप ।

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकव.	अस्ति	असि	अस्मि
एकप.	है	है	हूँ.
द्विप.	स्ताः	स्थः	स्यः
षण्णुप.	हैं	हो	हैं
षण्णुप.	सन्ति	स्थ	स्मः
षण्णुप.	हैं	हो	हैं.

जैसे संस्कृत में ऊपर लिखी हुई क्रियाओं के रूप कर्ता के लिङ्ग के अनुसार नहीं पलटते वैसे ही हिन्दी में भी नहीं पलटते । इस लिये एक २ संस्कृत क्रिया के नीचे एक ही एक हिन्दी क्रिया लिखी गई हैं । क्योंकि पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों में उन के रूप तुल्य होते हैं ।

संस्कृत वाक्य ।

पुलिङ्ग ।

सोऽस्ति	त्वमसि	अहमस्मि
तौ स्तः	युवां स्थः	आवां स्यः
ते सन्ति	यूयं स्थ	वयं स्मः
	स्त्रीलिङ्ग ।	

सास्ति	त्वमसि	अहमस्मि
ते स्तः	युवां स्थः	आवां स्यः
ताः सन्ति	यूयं स्थ	वयं स्मः

## नपुंसकलिङ्ग ।

तदस्ति	त्यमसि	अहमस्मि
ते स्तः	युवां स्यः	आवां स्वः
तानि सन्ति	यूयं स्य	वयं स्मः

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

संस्कृत में भू धातु । भ्वादि । हिन्दी में होना धातु ।

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकव.	भवति	भवसि	भवामि
द्वय.	होता है	होता है	होता हूँ
एकव.	होती है	होती है	होती हूँ
द्विप.	भवतः	भवथः	भवावः
बहुव.	होते हैं	होते हो	होते हैं
बहुव.	होती हैं	होती हो	होती हैं
बहुव.	भवन्ति	भवथ	भवामः
बहुव.	होते हैं	होते हो	होते हैं
बहुव.	होती हैं	होती हो	होती हैं

संस्कृत में ऊपर लिखी हुई क्रियाओं के रूप कर्ता के लिङ्ग के अनुसार नहीं बदलते । परन्तु हिन्दी में यदि कर्ता पुल्लिङ्ग हो तो एकवचन में क्रिया के पूर्वभाग के अन्त का आकार वैसा ही बना रहता है बहुवचन में उस को ए होजाता है । और यदि स्त्रीलिङ्ग हो तो एकवचन और बहुवचन दोनों में उस को दीर्घ ईकार होता है । इस कारण संस्कृत की एक एक क्रिया के नीचे हिन्दी की दो २ क्रिया लिखी गई हैं । एक पुल्लिङ्ग की दूसरी स्त्रीलिङ्ग की । धातुप्रचरना में यथा उचित प्रयोग करना चाहिये ।

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

वह होता है      तू होता है      मैं होता हूँ  
वे दोनों होते हैं      तुम दोनों होते हो      हम दोनों होते हैं  
वे होते हैं      तुम होते हो      हम होते हैं

स्त्रीलिङ्ग ।

वह होती है      तू होती है      मैं होती हूँ  
वे दोनों होती हैं      तुम दोनों होती हो      हम दोनों होती हैं  
वे होती हैं      तुम होती हो      हम होती हैं

नपुंसक के बदले में पुल्लिङ्ग ।

वह होता है      तू होता है      मैं होता हूँ  
वे दोनों होते हैं      तुम दोनों होते हो      हम दोनों होते हैं  
वे होते हैं      तुम होते हो      हम होते हैं

इन हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो ।

संस्कृत में कृ धातु । तनादि । उभयपदी । सकर्मक ।  
हिन्दी में करना धातु । सकर्मक ।

परस्मैपदी के रूप ॥

	प्रथम पु०	मध्यम पु०	उत्तम पु०
एकव०	करोति	करोषि	करोमि
एकव०	करता है	करता है	करता हूँ
एकव०	करती है	करती है	करती हूँ
द्विव०	कुरुतः	कुरुथः	कुरुयः
बहुव०	करते हैं	करते हो	करते हैं

यद्गुय·	करती हैं	करती हो	करती हैं
यद्गुय·	कुर्वन्ति	कुस्य	कुर्मः
यद्गुय·	करते हैं	करते हो	करते हैं
यद्गुय·	करती हैं	करती हो	करती हैं

संस्कृत वाक्य ।

पुलिङ्ग ।

स करोति	त्वं करोषि	अहं करोमि
तौ कुस्तः	युवां कुस्यः	आवां कुर्वः
ते कुर्वन्ति	यूयं कुस्य	वयं कुर्मः

स्त्रीलिङ्ग ।

सा करोति	त्वं करोषि	अहं करोमि
ते कुस्तः	युवां कुस्यः	आवां कुर्वः
ताः कुर्वन्ति	यूयं कुस्य	वयं कुर्मः

नपुंसकलिङ्ग ।

तत् करोति	त्वं करोषि	अहं करोमि
ते कुस्तः	युवां कुस्यः	आवां कुर्वः
तानि कुर्वन्ति	यूयं कुस्य	वयं कुर्मः

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

संस्कृत में यद्य धातु । भ्वादि । आत्मनेपदी । अकर्मक ।  
हिन्दी में बढना धातु । अकर्मक ॥

संस्कृत में प्रथम आदि पुरुषों के आत्मनेपदसञ्ज्ञक प्रत्यय ।

	प्रथम पु	मध्यम पु	उत्तम पु
शक्य·	त्	थास्	इट्
द्विव·	आताम्	आथाम्	वाहि
यद्गुय·	म्	ध्वम्	महिङ्

## क्रियाओं के रूप ।

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकव.	एधते	एधसे	एधे
एकव.	बढ़ता है	बढ़ता है	बढ़ता हूँ
एकव.	बढ़ती है	बढ़ती है	बढ़ती हूँ
द्विव.	एधेते	एधेथे	एधावहे
बहुव.	बढ़ते हैं	बढ़ते हो	बढ़ते हैं
बहुव.	बढ़ती हैं	बढ़ती हो	बढ़ती हैं
बहुव.	एधन्ते	एधध्ये	एधामहे
बहुव.	बढ़ते हैं	बढ़ते हो	बढ़ते हैं
बहुव.	बढ़ती हैं	बढ़ती हो	बढ़ती हैं

## हिन्दी वाक्य ।

## पुल्लिङ्ग ।

वह बढ़ता है	तू बढ़ता है	मैं बढ़ता हूँ
वे दोनों बढ़ते हैं	तुम दोनों बढ़ते हो	हम दोनों बढ़ते हैं
वे बढ़ते हैं	तुम बढ़ते हो	हम बढ़ते हैं

## स्त्रीलिङ्ग ।

वह बढ़ती है	तू बढ़ती है	मैं बढ़ती हूँ
वे दोनों बढ़ती हैं	तुम दोनों बढ़ती हो	हम दोनों बढ़ती हैं
वे बढ़ती हैं	तुम बढ़ती हो	हम बढ़ती हैं

## नपुंसक के बदले पुल्लिङ्ग ।

वह बढ़ता है	तू बढ़ता है	मैं बढ़ता हूँ
वे दोनों बढ़ते हैं	तुम दोनों बढ़ते हो	हम दोनों बढ़ते हैं
वे बढ़ते हैं	तुम बढ़ते हो	हम बढ़ते हैं



इन हिन्दी वाक्यों का संस्कृत उल्था करो ।

अज्ञानत पुल्लिङ्ग शब्द ।

राम=राम ।

अन्य=दूसरा ।

एक द्वि बहु

अन्यः । अन्यैः । न्ये ।

रामः । रामो रामाः ।

अन्यतर=दो में से एक ।

राम । दोनों राम । राम ।

अन्यतरः । अन्यतरो । अ-

सर्व=सब ।

न्यतरे ।

सर्वः । सर्वैः । सर्वे ।

इतर=दूसरा ।

एक=एक ।

इतरः । इतरो । इतरे ।

एकः ।

पूर्व=अगला । पुरुष का ।

संख्यावाची नित्य एकवचनान्त ।

पूर्वः । पूर्वा । पूर्वं । पूर्वाः ।

द्वि=दो ।

मुनि=मुनि ।

दो ।

मुनिः । मुनी । मुनयः ।

नित्य द्विवच ।

पति=स्वामी ।

उभ=दो ।

पतिः । पती । पतयः ।

उभो ।

सखि=मित्र ।

नित्य द्विवच-

सखा । सखायो । सखायः ।

अनेक=कई एक ।

कति=कै । कितने ।

अनेके ।

कति ।

नित्य बहुवच ।

नित्य बहुवच- ।

त्रि=तीन ।

सुधी=परिदल ।

त्रयः ।

सुधीः । सुधीयो । सुधीयः ।

नित्य बहुवच- ।

साधुः=सज्जन ।

कतर= दो में से कौन ।

साधुः । साधू । साधवः ।

कतरः । कतरो । कतरे ।

स्वयम्भू=ब्रम्हा ।

कतम=बहुतों में से कौन ।

स्वयम्भूः । स्वयम्भुवो । स्वय-

कतमः । कतमो । कतमे ।

भुवः ।

दातृ=दाता । गो=बेल, स्त्रीलिङ्ग में गो=गाय गो ।  
 दाता । दातारो । दातारः । गोः । गात्रो । गात्रः ।  
 भ्रातृ-भाई ।

भ्राता । भ्रातारो । भ्रातरः ।

धातु ॥

स्त्रिह. दिवा. पर. अक.=प्रीति क. । सृज. तुदा. परस्मै. सक. सिरजना ।  
 स्त्रिह्यति । स्त्रिह्यतः । स्त्रि. सृजति । सृजतः । सृजन्ति ।  
 ह्यन्ति । दा जुहो. उभय. सक.=देना ।

विद. अदा. पर. सक.=जानना । ददाति । दतः । ददति ।  
 वेति । वितः । विदन्ति । जल्प. भ्या. परस्मै. सक.=बोलना ।

दिश. (उपपूर्वक.) तुदा. उभय. सक. जल्पति । जल्पतः । जल्पन्ति ।  
 =उपदेश क. । उपदिशति । चर. भ्या. पर. सक.=चलना । चरना ।  
 उपदिशतः । उपदिशन्ति । चरति । चरतः । चरन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

रामोऽस्ति । सर्वो भवति अनेके सन्ति । मुनिः करोति ।  
 पतिरेधते । सखा स्त्रिह्यति । कति सन्ति । सुधीर्वति । साधुरुपदि-  
 शति । स्वयम्भूः सृजति । दाता ददाति भ्राता जल्पति । गोश्व-  
 रति । रामो भवतः । मुनय उपदिशन्ति । साधवो जल्पन्ति । चयो  
 भवन्ति । दातार एधन्ते । सर्वे सन्ति । पतयः स्त्रिह्यन्ति । द्वौ  
 स्तः । सखायो भवतः । रामो कुरुतः । मुनी वितः । दातारो दतः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ॥

स्मरण रखना चाहिये कि भू आदि धातुओं के जो सत्ता  
 अर्थान् होना आदि अर्थ लिखे हैं वे उपलक्षणमात्र हैं । स्थलवि-  
 शेष में उन के और भी अर्थ होते हैं । जैसे । यागात् स्वर्गो  
 भवति । यज्ञ से स्वर्ग होता है । यहाँ भू धातु का अर्थ उत्पन्न  
 होना है ॥

बहुत स्थानों में उपसर्गों के योग से धातुओं के अर्थ बदल जाते हैं । जैसे । भू धातु का अर्थ होना है परन्तु प्र उपसर्ग के संबन्ध से उस का अर्थ समर्थ होना हो जाता है । जैसे । यज्ञदत्तः प्रभवति । यज्ञदत्त समर्थ होता है । इत्यादि ॥

उपसर्ग ।

प्र=प्रकर्ष ।	आङ्=घोड़ा । अभिव्याप्ति । म-
परा=विपरीत । उलटा ।	र्यादा ।
अप=विशेष । त्याग ।	नि=अत्यन्त ।
सम्=भली भांति ।	अधि=अधिकता । अतिशय ।
अनु=पीछे ।	अपि=भी । प्रश्न ।
अव=निश्चय । अनादर ।	अति=अतिशय । प्रशंसा ।
निस्=निषेध । निश्चय ।	सु=अच्छा । अत्यन्त । बिना श्रम ।
निर्=निषेध । निश्चय । बाहर	उद्=ऊपर । उत्कर्ष ।
होना ।	अभि=सम्मुख । चारों ओर से ।
दुस्	प्रति=सम्मुख । बदले में ।
दुर्	परि=सत्र ओर । छोड़ कर ।
दुः	उप=समीप ।
वि=विगत । विशेष ।	

इन उपसर्गों के और भी अर्थ होते हैं वे आगे स्पष्ट होंगे ।

अध्यय ॥

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में बहुत से शब्द ऐसे हैं जिन में लिङ्ग संख्या और कारक के चिन्ह नहीं पाये जाते उन को अध्यय कहते हैं । जैसे ।

म्यर्=म्यगं । परलोक ।	पुनर्=फिर । विशेष
अन्तर्=भीतर । चित्त ।	सनुत्तर्=गुप्त हो ।
प्रात्तर्=सबेरा ।	उच्चैस्=ऊँचा । बड़ा ।

नीचेस्=नीचा । अल्प । छोटा । हेतो=कारण ।  
 शनेस्=धीरे २ । देर करके । इद्दा=प्रकाय ।  
 ऋधक्=सत्य । धीरे २ । अद्दा=स्पष्ट । निश्चय । साक्षात् ।  
 ऋते=छोड़ कर । बिना । सामि=आधा । जुगुप्सित ।  
 युगपद्=एक ही काल में । वतिप्रत्ययान्त शब्द भी अव्यय  
 आरात्=दूर । समीप । होते हैं । जैसे । ब्राह्मणश्च ।  
 पृथक्=अनेक रूप । सचियवत् । इत्यादि ।

बिना । मिज्जो

सना  
 सनत् } नित्य ।  
 सनात् }

उपधा=भेद ।

तिरस्=अन्तर्धान । तिष्ठो ।

अनादर ।

अन्तरा=मध्य । बिना ।

अन्तरेण=छोड़ कर । बिना ।

ज्योक्=बहुत काल प्रश्न । शीघ्र ।  
 अय ।

कस्=जल । भाया । निन्दा । मुख ।

शम्=मुख ।

सद्दसा=असांचक । अविचार में ।

बिना=छोड़ कर ।

नाना=अनेक । बिना ।

स्यस्ति=मङ्गल । स्थीकारमूषक ।

स्यधा=पितरों को देने में ।

अलम्=भूषण । यम । मामर्घ्यं ।

निवारण । निषेध ।

ह्यस्=पिछला दिन ।

श्वैस्=आगामी दिन ।

दिवा=दिन ।

राशे=रात ।

सायम्=सांफ । दिन का अन्त ।

चिरम्=बहुत काल ।

मनाक् } थोड़ा ।  
 ईपत् }

जोयम्=सुख । चुपचाप ।

तूष्णीम्=चुपचाप । मौन ।

बहिस् } बाहर । बाहर का ।  
 अबस् }

समया=समीप । मध्य ।

निरुपा=समीप ।

स्ययम्=आप ही ।

पृथा=व्यर्थ । निरर्थक ।

नक्तम्=रात ।

नञ्=निषेध । अभाय ।

घण्ट		अथ=अनन्तर । आरम्भ । प्रश्न
श्रीघण्ट	देवताओं को हविर्दान में ।	विकल्प ।
घोषट		आम्=शीघ्र । अल्प ।
अन्यत्=अन्य ।		आम्=स्वीकार । हां ।
अस्ति=होना ।		प्रतान्=स्तानि । थकाहट ।
उपांगु=अप्रकाश उच्चारण । गोप्य ।	प्रशान्=समान ।	
क्षमा=सहना ।	प्रतान् =विस्तार ।	
विहायसा=आक्राय ।	मा	} निषेध । शङ्का ।
दोषा=रात ।	माह्	
मृषा	} झूठ ।	यह स्वरादि आकृतिगण है
मिथ्या		अर्थात् इस रूप के चार भी
मुधा=ध्यर्थ ।		जो शब्द मिलें उन को भी
पुरा=पहिले । पूर्व काल में ।		अध्यय जानो । जैसे ।
मियो	} एकान्त । साथ । अन्योन्य ।	कामम्=स्यच्छन्दता ।
मिथस्		प्रकामम्=अतियय ।
प्रायस्=बहुतायत से । बहुधा ।	भूयस्=फिर ।	
मुहुस्=फिर फिर । धार धार ।	साम्प्रतम्=उचित । अब ।	
प्रधाहुकम्=समान काल । ऊपर ।	परम्=किन्तु ।	
आप्यंहलम्=धलात्कार से ।	साक्षात्=प्रत्यक्ष ।	
अभीष्टम्=पुनः पुनः ।	अत्यन्त । साधि=सिद्धा ।	
सह	} साथ ।	सत्यम्=कुछ स्वीकार ।
साकम्		} शीघ्र ।
साहम्		
नमस्=प्रणाम ।	संयत्=यथं ।	
द्विक्=ढोड़ कर ।	अयश्यम्=निरस्य ।	
धिक्=निन्दा । धिक्कारना ।	उपा=रात ।	

भटिति	कुवित्=बाहुल्य । प्रशंसा ।
भगिति } शीघ्र ।	नेत्=शङ्का । निषेध । विचार ।
तरसा }	समुच्चय ।
सुष्टु=अच्छा ।	चेत्=यदि ।
दुष्टु=बुरा ।	चण्=यदि ।
सु=अच्छा ।	कच्चित्=प्रश्न ।
कु=निकम्बु । घोडा ।	यव=अमर्षे । निन्दा । आश्चर्य्य ।
अञ्जसा=यथार्थे । शीघ्र ।	अनिश्चय ।
मिथु=दोनों ।	नह=प्रत्यारम्भ ।
अस्तम्=विनाश ।	हन्त । हर्षे । खेद । कृपा ।
स्थाने=उचित ।	धाक्धारम्भ ।
वाम्=कुछ अच्छा ।	माकिः
सुदि=शुक्र पक्ष ।	माकीम् } छोड़ कर ।
वदि=कृष्ण पक्ष ।	नकिः
इत्यादि ।	यावत् } समयता । अवधि । परि-
च=और । अर्थात् समुच्चय, अ-	तावत् } माण । निश्चय ।
न्वाचय, इतरैतरयोग, स-	त्वै=विशेष । वितर्क ।
माहार । [समुच्चय । द्वे=वितर्क ।	
घा=विकल्प । उपमा । निश्चय ।	रै=दान । अनादर ।
ह=प्रसिद्धि ।	तुम्=तुकारना ।
अह=पूजा ।	सयाहि=देखो ।
यव=निश्चय । अनिश्चय ।	खलु=निषेध । धाक्धारम्भ ।
यवम्=येसे ही ।	निश्चय ।
नूनम्=निश्चय । वितर्क ।	किल=धाने । मिथ्या ।
यश्वत्=पुनःपुनः । नित्य । साथ ।	म्भ=भूतकाल सूचक । पादपूरण ।
कुपत्=प्रश्न । प्रशंसा ।	आदह=आरम्भ । हिंसा । निन्दा ।

जो शब्द उपसर्ग विभक्ति और स्वर के तुल्य हों उनको भी अव्यय जानो। जैसे। अवदत्तम्, यहां अव । अहं युः, अस्ति घीरा, यहां अहं और अस्ति । अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ औ औ, यहां अकार आदि वर्ण, क्रम से उपसर्ग विभक्ति और स्वर के सदृश हैं। वस्तुतः उपसर्ग विभक्ति और स्वर नहीं हैं।

पशु=भली भांति । -शब्दों को भी अव्यय जानो ।

शुक्रम्=शीघ्र । जैसे ।

यथाकथा च=अनादर ।

यत् } हेतु ।  
तत् }

पाद

आहोस्वित्-अथवा ।

प्याद्

सीम=सब और से होना ।

अहं

सुकम्=अतिशय ।

हैं

सम्बोधन में ।

अनुक्रम्=वितर्क ।

हे

शम्भ्यद्=अन्तः करण । अनुकूलता ।

भोः

घ=पादपूरण । सदृश्य । की नहीं ।

अये

घ=हिंसा । शिपरीत क्रम । पाद-

तुल्य

पूरण ।

दिष्ट्या=आनन्द ।

विषु=अनेक ।

चटु } प्रिय वाक्य ।  
चाटु }

एकपदे=अकस्मात् ।

हूम्=घुड़कना ।

पुत्=कुत्सा निन्दा ।

इव=सदृश्य ।

आसः=इस से भी ।

अद्यत्वे=अत्र ।

यह चकार आदि भी आकृतिगण इति=कि । इस प्रकार से ।

हे । अयात् इस रूप के और- समाप्ति । हेतु ।

जिन तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों के आगे सब विभक्ति न आवे अयात् एकवचन ही आवे उन को भी अव्यय कहते हैं । इन तद्धित

प्रत्ययों का परिगणन कौमुदी में यों किया है। जैसा। तसिल् प्रत्यय से लेकर पाशप् के पूर्व तक। शस् प्रत्यय से लेकर "समासान्ता" इस सूच के पूर्व तक। अम्। आम्। कृत्वसुच। सुच। धा। तसि। वति। ना नाञ्। उन में से थोड़े प्रसिद्ध शब्द नीचे लिखते हैं।

कुतः=कहाँ से। क्यों। अधुना=अब। इस समय।

यतः=जहाँ से। क्योंकि। इदानीम्=अब।

ततः=वहाँ से। उस से। तदानीम्=तब।

अतः=यहाँ से। इस से। यर्हि=कब।

इतः=इस से। यहाँ से। इधर। तर्हि=तब। तो।

बहुतः=बहुतों से। कर्हि=कब।

परितः=सब ओर से। परेद्यवि=दूसरा दिन।

अभितः=दोनों ओर से। अद्य=आज।

कुच=कहाँ। किस में। पूर्वद्युः=पिछला दिन।

यच=जहाँ। जिस में। अन्यद्युः=अन्य दिन।

तच=वहाँ। उस में। उम्येद्युः=दोनों दिन।

अच=यहाँ। इस में। तथा=उस प्रकार से। तैसे।

बहुच=बहुतों में। यथा=जिस प्रकार से। जैसे।

इह=यहाँ। इस में। इत्थम्=इस प्रकार से। ऐसे।

क=कहाँ। किस में। कथम्=किस प्रकार से। कैसे।

सदा } बहुतः=बहुत।

सर्वदा } सब काल में। नित्य। जैसे। बहुशो ददाति।

एकदा=एक समय। बहुत देता है। इत्यादि।

अन्यदा=अन्य समय में। अल्पशः थोड़ा।

कदा=कब। किस समय। जैसे। अल्पशो ददाति।

तदा=तब। उस समय। थोड़ा देता है। इत्यादि।

एतर्हि=इस काल में। आदितः=आदिमें। पहिले।



मध्यतः=बीच में ।

पृष्ठतः=पीछे ।

अन्ततः=अन्त में ।

पार्श्वतः=दहिने । बायें ।

मकारान्त और एजन्त जो कृत् प्रत्यय वह जिस शब्द के अन्त में हो उस को भी अव्यय कहते हैं । जैसे । स्मारं स्मारम्, चार चार स्मरण करके । यहां स्मृ धातु से णमुल् प्रत्यय हुआ है ॥ जीवसे, जीना । यहां जीव धातु से असे प्रत्यय है ॥ पिवथ्ये, पीना । यहां पी धातु से शध्ये प्रत्यय है ॥

क्त्वा, तेषुन् और कसुन् ये प्रत्यय जिन शब्दों के अन्त में हों उन को भी अव्यय कहते हैं । जैसे । कृत्वा, करके । यहां कृधातु से क्त्वा प्रत्यय है ॥ उदेतोः, उदय । यहां उत्पूर्वक इण् धातु से तोसुन् प्रत्यय है ॥ विष्टपः, गमन । यहां विपूर्वक सृप् धातु से कसुन् प्रत्यय है ॥

अध्ययीभाव समास को भी अव्यय कहते हैं । जैसे । अधिहरि, हरि मे । इत्यादि ॥

विशेषण और विशेष्य ।

जिस के कहने से किसी वस्तु में कुछ विशेष अर्थात् भेद पाया जाय उसे विशेषण और जिस में वह विशेष पाया जाय उसे विशेष्य कहते हैं । जैसे । नीलमुत्पलम् । काला कमल । यहां काला विशेषण और कमल विशेष्य है । क्योंकि काले के कहने से कमल में विशेष अर्थात् और कमलों से भेद पाया जाता है ।

विशेषण प्राय विशेष्य के पूर्य रहता है ।

जहां कहीं केवल विशेषण रहता है वहां विशेष्य ऊपर से समझा जाता है । जैसे । मूर्खा दुःखमनुभवन्ति । मूर्ख दुःख भोगते हैं । यहां मनुष्य इस विशेष्य का ऊपर से बोध होता है ।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में प्राय जो लिङ्ग

वचन और विभक्ति विशेष्य में रहती हैं वेई लिङ्ग वचन और विभक्ति विशेषण में भी आती हैं । जैसे । उत्तमः पुरुषः । अच्छा पुरुष । उत्तमा स्त्री । अच्छी स्त्री । उत्तमं कुलम् । अच्छा कुल । धनवान् मनुष्य । धनी मनुष्य । धनवन्तो मनुष्यो । दोनों धनी मनुष्य । धनवन्तो मनुष्याः । धनी मनुष्य । सुन्दरो बालकः । सुन्दर बालक । सुन्दरं वाक्यम् । सुन्दर बालक को । सुन्दरेण बालकेन । सुन्दर बालक से । इत्यादि ॥

संस्कृत में जहां विशेषण और विशेष्य का समांस नहीं होता वहां उन दोनों के आगे बहुधा विभक्ति के चिह्न रहते हैं । परन्तु हिन्दी में विशेष्य ही के आगे वे चिह्न रहते हैं विशेषण के आगे उन का लोप हो जाता है । जैसे । नीलमुत्पलमानय । काले कमल को लाओ । यहाँ संस्कृत में नील और उत्पल इन दोनों शब्दों के आगे द्वितीया विभक्ति के एकवचन के चिह्न हल् मकार हैं । परन्तु हिन्दी में केवल कमल शब्द के आगे द्वितीया का चिह्न "को" है । काला शब्द के आगे उसका लोप हुआ है । हिन्दी में काले को कमल को लाओ यह बोलना अशुद्ध है । हिन्दी में पुल्लिङ्ग विशेष्य का यदि आकारान्त विशेषण हो तो कर्ता कारक की प्रथमा विभक्ति के केवल बहुवचन में और इतर सकल विभक्तियों के दोनों वचनों में विशेषण के अन्त आकार को एकार हो जाता है । जैसे । भला बालक । भले बालक । भले बालक को । भले बालकों को । भले बालक से । भले बालकों से इत्यादि ।

यदि स्त्रीलिङ्ग विशेष्य का आकारान्त विशेषण हो तो सब विभक्तियों के दोनों वचनों में विशेषण के अन्त आकार को दीर्घ ईकार होता है । और इस ईकार में विभक्ति के वचनों के कारण कुछ विकार नहीं होता । जैसे । अच्छी घोड़ी । अच्छी घोड़ियां । अच्छी घोड़ी को । अच्छीघोड़ियों को । अच्छीघोड़ी

से । अच्छी घोड़ियों से । इत्यादि । हिन्दी में अच्छियां घोड़ियां यह बोलना अशुद्ध है । एक पुल्लिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग विशेष्य के जितने आकारान्त विशेषण होंगे उन सब के लिये पूर्वोक्त नियम जानो । जैसे छोटा मोटा काला पिल्ला । छोटे मोटे काले पिल्ले । छोटे मोटे काले पिल्ले को । इत्यादि । छोटी मोटी काली लाठी । छोटी मोटी काली लाठियां । छोटी मोटी काली लाठी को इत्यादि ।

आकारान्त से भिन्न समस्त विशेषण ज्यों के त्यों बने रहते हैं उन में कुछ विकार नहीं होता । जैसे । सुन्दर लड़का । सुन्दर लड़के । सुन्दर लड़के को । इत्यादि ।

#### क्रियाविशेषण ।

जिस के कहने से किसी क्रिया अर्थात् काम में कुछ विशेष पाया जाय उसे क्रियाविशेषण कहते हैं । जैसे । अश्वः शीघ्रं धावति । घोड़ा शीघ्र दौड़ता है । यहां शीघ्र इस के कहने से घोड़े के दौड़ने में शीघ्रता पाई जाती है ।

संस्कृत में क्रियाविशेषण में नपुंसकलिङ्ग और द्वितीया का शक्यचन रहता है । जैसे । मन्दं व्रजति । धीरे चलता है । सुस्वरं पठति । अच्छे स्वर से पढ़ता है । मधुरं हंसति । मधुर हंसता है । उच्चैर्ब्रूयति । ऊंचे स्वर से बोलता है । मुखं स्वपिति । मुख से सोता है । इत्यादि ॥

#### उद्देश्य और विधेय ।

जिस के विषय में कुछ विधान करते हैं वह उद्देश्य और जो विधान क्रिया जाता है वह विधेय कहलाता है । जैसे । मूर्ध्न्यस्तपति । मूर्ध्न्य तपता है । यहां मूर्ध्न्य उद्देश्य और उस का तपना विधेय है । मूर्ध्न्या मन्टे भवति । मूर्ध्न्य मन्द होता है । यहां मूर्ध्न्य उद्देश्य और उस का मन्द होना विधेय है । प्राह्वणः

शूद्रो भवति । ब्राह्मण शूद्र होता है । यहां ब्राह्मण उद्देश्य और उस का शूद्र होना विधेय है ।

वाक्य में सर्वदा उद्देश्यबोधक पद पहिले और विधेयबोधक पद उस के पीछे रहता है ।

अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

रमा=लक्ष्मी । रमा नाम स्त्री । धेनु=दुधार गो ।

रमा । रमे । रमाः । धेनुः । धेनूँ धेनवः ।

रमा । दोनों रमा । रमा । वधूः=बहू ।

(सर्वा) । वधूः । वध्वौ । वध्वः ।

सर्वा सर्वे । सर्वः । भू=भौ ।

(चि) तिस्रः । भूः । भुवौ । भुवः ।

मति=बुद्धि । दुहितृ=लड़की । बेटी ।

मतिः । मती मतयः । दुहिता । दुहितरौ । दुहितरः ।

नदी=नदी । स्वसृ=बहन । भगिनी ।

नदी । नद्यौ । नद्यः । स्वसा । स्वसारौ स्वसारः ।

श्री=लक्ष्मी । शोभा । द्यौ=स्वर्ग । आकाश ।

श्रीः । श्रियौ । श्रियः । द्यौः । द्यावौ । द्यावः ।

स्त्री=स्त्री । नौ=नाव ।

स्त्री । स्त्रियौ । स्त्रियः । नौ । नावौ नावः ।

कोप ।

निर्मल=स्वच्छ । प्रसन्न=सन्तुष्ट ।

धातु ।

लस. विपूर्वक. भ्या. पर. अक.=शो. स्फुर. तुदा.पर.अक.=प्रकाशक. ।

भित हो. । विलास क. । स्फुरति । स्फुरतः । स्फुरन्ति ।

विलसति । विलसतः । विल- वृध. भ्या. आत्म. अक.=बढ़ना ।

सन्ति । वर्द्धते । वर्द्धते । वर्द्धन्ते ।

हृय- द्विवा- परस्मै- अक- = प्रसन्न हो- क्रीड- भ्वा- पर- अक- = खेलना ।  
 हृष्यति । हृष्यतः । हृष्यन्ति । क्रीडति । क्रीडतः । क्रीडन्ति ।  
 चप- भ्वा- आत्म- अक- = लज्जाना । स्या- भ्वा- पर- अक- = रहना । खडा  
 चपते । चपेत । चपन्ते । रहना ।  
 शुभ- भ्वा- आत्म- अक- = शोभिन् हो- तिष्ठ- तिष्ठति । तिष्ठतः । तिष्ठन्ति ।  
 शोभते । शोभेते शोभन्ते । गम्- भ्वा- पर- सक- = चलना ।  
 गच्छति । गच्छतः । गच्छन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

सूर्याः प्रसन्नाः सन्ति । रमा विलसति । मतिराशु स्फुरति ।  
 नदी शनैर्बहते । शीरेधते । स्त्री हृष्यति । धेनुश्चरति । धधूस्त्रपते ।  
 भूः शोभते । दुहिता क्रीडति । स्वसा तिष्ठति । द्योर्निर्मलास्ति ।  
 नोः शनैर्गच्छति । रमे तिष्ठतः । मत्तयो बहन्ते । नद्यो निर्मला  
 भवन्ति । शियः शोभन्ते । तिष्ठः स्थियस्तिष्ठन्ति । धध्वो हृष्यन्ति ।  
 स्यसारः क्रीडन्ति । नाशो गच्छन्ति । तत्र स्थियो न सन्ति । धध्वो क्व  
 गच्छतः । अहं तत्र गच्छामि । त्वं कुत्र तिष्ठसि । अहं तत्र तिष्ठामि ।  
 धेनवः क्व चरन्ति ॥

एन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

ज्ञान = ज्ञान ।

( कतम )

ज्ञानम् । ज्ञाने । ज्ञानानि । कतमम् । कतमे । कतमानि ।

ज्ञान । ज्ञानो ज्ञान । ज्ञान । ( अन्य )

( मयं ) ।

अन्यम् । अन्ये । अन्यानि ।

मयम् । मयं । मयादि । ( अन्यतर )

( तत्कर )

अन्यतरम् । अन्यतरे । अन्य-

कतम् । कतरे । कतरादि । तरादि ।

( इतर )	वारि । वारिणि । वारीणि ।
इतरत् । इतरे । इतराणि । दधि=दही ।	
( पूर्व )	दधि । दधिनी । दधीनि ।
पूर्वम् । पूर्वे । पूर्वाणि ।	मधु=सहत । सुप्परस । मद्य ।
वारि=जल ।	मधु । मधुनी । मधूनि ।

कोष ।

दुग्ध- दूध । मधुर- मीठा ।

संस्कृत वाक्य ।

ज्ञानमस्ति । सर्वे मिथ्या भवति । कतरदस्ति । अन्यत्रास्ति ।  
पूर्वे स्तः । वारि निर्मलं भवति । दुग्धं दधि भवति । निर्मलानि  
ज्ञानानि शोभन्ते । वारीणि शनैर्वर्द्धन्ते मधूनि । मधुराणि सन्ति ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

इतलन पुल्लिङ्ग शब्द ।

दुह्=दूहनेवाला ।	षप्=छ ।
धुक । धुग् । दुहो । दुहः	षट् ।
दूहनेवाला । दोनों दूहने-	नित्य बहुवच- ।
वाले । दूहनेवाले ।	अष्टन्=आठ ।
अनदुह्=बैल ।	अष्टो । अष्ट ।
अनद्वान् । अनद्वौहो । अन-	नित्य बहुवच- ।
द्वौहः ।	क्षिम्=कोन । क्या ।
चतुर=चार ।	कः । को । के ।
चत्वारः ।	कोन । कोन दोनों । कोन ।
नित्य बहुवचनान्त ।	इदम्=यह ।
पञ्चन्=पाँच ।	अयम् । इमो । इमे ।
पञ्च ।	यद् । ये दोनों । ये ।
नित्य बहुवच- ।	

यत्=जा ।	अग्निमथ्=आग मथनेवाला ।
यः । यौ । ये ।	अग्निमत् । अग्निमथौ ।
जो । जो दोनों । जो ।	अग्निमथः ।
एतद्=यह ।	प्राच्.=भली भांति चलनेवाला ।
एतः । एतौ । एतं ।	प्राङ् । प्राञ्चौ । प्राञ्चुः ।
यह । ये दोनों । ये ।	प्राच्=भली भांति पूजनेवाला ।
अदस्=यह वह ।	प्राङ् । प्राञ्चौ । प्राञ्चुः ।
असौ । अमू । अमी ।	उदच्=ऊपर गमन करनेवाला ।
यह । ये दोनों । ये ।	उदङ् । उदञ्चौ । उदञ्चुः ।
वह । वे दोनों । वे ।	महत्=बड़ा । श्रेष्ठ ।
सम्राज्=चक्रवर्ती ।	महान् । महान्तौ । महान्तः ।
सम्राट् । सम्राड् । सम्राजो ।	महिमन्=महत्त्व । बड़ाई ।
सम्राजः ।	महिमा । महिमनौ । महिमानः ।
भूमृत्=पर्वत । राजा ।	यज्वन्=यज्ञ करनेवाला ।
भूमृत् । भूमृतौ । भूमृतः ।	यज्या । यज्यानौ । यज्यानः ।
भयत्=आप ।	युवन्=जवान । युवा ।
भवान् । भवन्तौ । भवन्तः ।	युवा । युवानौ । युवानः ।
धीमत्=बुद्धिमान ।	राजन्=राजा ।
धीमान् । धीमन्तौ । धीमन्तः ।	राजा । राजानौ । राजानः ।
गच्छत्=चलता हुआ ।	दण्डिन्=सत्र्यासी । दण्डधारी ।
गच्छन् । गच्छन्तौ । गच्छन्तः ।	दण्डी । दण्डिनौ । दण्डिनः ।
प्रशाम्=शान्त ।	पार्थन्=राह ।
प्रशान् । प्रशामौ । प्रशामः ।	पन्थाः । पन्थानौ । पन्थानः ।
बुध्=परिण्डन ।	वेधस्=ग्रहणा ।
भुत् । भुद् । बुधौ । बुधः ।	वेधाः । वेधसौ । वेधसः ।

विद्वस्=पण्डित । गरीयान् । गरीयांसो । गरीयांसः ।  
 विद्वान् । विद्वान्सो । विद्वान्सः । पुमस्=पुरुष ।  
 गरीयस्=अत्यन्त भारी । श्रेष्ठ । पुमान् । पुमान्सो । पुमान्सः ।  
 धातु ।

नद- भ्वा- पर-अक.=उकारना । सद- प्रपूर्वक- तुदा- पर- अक.=  
 नदति । नदतः । नदन्ति । प्रसन्न हो- । निर्मल हो- ।

शास-अदा-पर-सक.=शासन क- । प्रसीदति । प्रसीदतः । प्रसीदन्ति ।  
 शास्ति । शिष्टः । शासति । रक्ष- भ्वा- पर- सक.=पालन क- ।

चल-भ्वा-पर-अक.=हिलना । चलना । रक्षति । रक्षतः । रक्षन्ति ।  
 चलति । चलतः । चलन्ति । भ्रम- परिपूर्वक- भ्वा- उभ- अक.=

मृश- विपूर्वक- तुदा- पर- सक.= भ्रमण करना ।  
 विचार क- । परिभ्रमति । परिभ्रमतः ।

विमृशति । विमृशतः । विमृ- परिभ्रमन्ति ।  
 शन्ति । वृत- भ्वा- आत्म- अक.=होना ।

भुञ्ज-रुधा-आत्मने-सक.=खाना । वर्तते । वर्तते । वर्तन्ते ।  
 भुङ्क्ते । भुञ्जते । भुञ्जते । अर्ह-भ्वा-पर-अक.=पूजित होना ।

अर्हति । अर्हतः । अर्हन्ति ।  
 संस्कृत वाक्य ।

धुगस्ति । अनङ्गान् नदति । सम्राट् शास्ति । भूमृच  
 चलति । धीमान् विमृशति । गच्छन् भुङ्क्ते । प्रशान् प्रसीदति ।  
 मुदुपदिशति । अग्निमत्तिष्ठति । प्राङ् शोभते । महानर्हति । महिमा  
 वर्तते । यज्वा हृष्यति । युवा विलसति । राजा रक्षति । दण्डो  
 परिभ्रमति । निर्मलः पन्थाः शोभते । वेधाः करोति । विद्वान् वेति ।  
 गरीयान् पूज्यो भवति । पुमान् वर्तते । चत्वारः पुमांसः सन्ति ।  
 पञ्च साधवो भुञ्जते । षट् शास्त्राणि वर्तन्ते । अष्टौ दण्डिनो



गच्छन्ति । तत्र कोऽस्ति । अयं विद्वानस्ति । यो वेति स करोति ।  
 एष क्रीडति । असौ वपते । धीमन्तो राजानः सम्यक् शासति ।  
 विद्वांसः सर्वत्र पूज्या भवन्ति । घयं न चलामः । ते विमृ-  
 शन्ति । आवां रक्षावः । ते सर्वे पूज्याः सन्ति । त्वं क्व घर्त्तसे ।  
 घयं न परिभ्रमामः ॥

इन वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिव्=आकाश । स्वर्ग ।	घाच्=वचन ।
दोः । दिवौ । दिवः ।	घाक् । घाचो । घाचः ।
आकाश । दोनों आकाश ।	सृज्=माला ।
आकाश ।	सृक् । सृग् । सृजे । सृजः ।
(चतुर्)	त्विष्=दीप्ति । कान्ति ।
चतस्रः ।	त्विट् । त्विड् । त्विषौ ।
(क्रिम्)	त्विष्पः ।
का । के । काः ।	गिर्=घाणो ।
(इदम्)	गौः । गिरौ । गिरः ।
इयम् । इमे । इमाः ।	आपद्=विपत्ति ।
(यद्)	आपत् । आपदौ । आपदः ।
या । ये । याः ।	अप्=जल ।
(यत्)	आपः ।
यथा । यती । यताः ।	नित्य बहुवच ।
(अटम्)	दिग्=दिशा ।
असौ । अमू । अमूः ।	दिक् । दिग् । दिशो । दिशः ।

धातु ।

सृ-प्रपूर्वक-भ्वा-पर-अक- = खेलना । नश्य-दिवा-पर-अक- = नष्ट हो ।

प्रसरति । प्रसरतः । प्रसरन्ति । नश्यति । नश्यतः । नश्यन्ति ।

स्ने-भ्वा-पर-अक- = मुर्काना ।

स्नायति । स्नायतः । स्नायन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

• द्योः शोभते । वाक् प्रसरति । सङ्स्नायति । त्विट् स्फुरति ।  
गीर्बिलसति । आपन्नश्यति । दिशः प्रसीदन्ति । चतस्रो दिशः  
सन्ति । इयं कास्ति । या दिङ्मिर्मला भवति सा शोभते । एषा गीर्म-  
धुरास्ति । असौ क्व गच्छति । त्वं कासि ॥

इन वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

(घार्) = जल ।

(अदस्)

घाः । घारी । घारि ।

अदः । अमू । अमूनि ।

जल । देनों जल । जल ।

(चतुर्)

(धीमत्)

चत्वारि ।

धीमत् । धीमती । धीमन्ति ।

(किम्)

(महत्)

किम् । के । कानि ।

महत् । महती । महान्ति ।

(इदस्)

जगत् = संसार ।

इदस् । इमे । इमानि ।

जगत् । जगती । जगन्ति ।

(यद्)

धामन् = गृह । स्थान । तेज ।

यत् । ये । यानि ।

धाम । धामनी । धामानि ।

(यत्तद्)

कर्मन् = कर्म । काम । कारवार ।

यत्तत् । यते । एतानि ।

कर्म । कर्मणी । कर्माणि ।

अहन्=दिन ।

हविस्=घृत आदि होम की वस्तु ।

अहः । अहनी । अह्नी ।

हविः । हविषी । हवीषि ।

अहानि ।

धनुस्=धनुष ।

पयस्=जल । दूध ।

धनुः । धनुषी । धनूषि ।

पयः । पयषी । पयांसि ।

संस्कृत वाक्य ।

वाः शनैर्निर्मलं भवति । धीमन् कुलं वर्द्धते । महद्दाम  
शोभते । जगन्नश्यति । कर्माणि न प्रसरन्ति । अहर्वर्द्धते । पयो  
मधुरमस्ति । अष हविर्नास्ति । धनुः स्फुरति । चत्वारि धामानि  
शोभन्ते । इदं किमस्ति । त्वं तत्र गच्छसि किम् । यदस्ति तद्व-  
षति । इमानि दिनानि निर्मलानि सन्ति । एतत् किमस्ति ।  
अदः पयो वर्तते ॥

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हिन्दी वाक्य ।

दोनों राम करते हैं । सब हैं । दोनों मुनि जानते हैं ।  
दोनों दाता देते हैं । सब होता है । राम है । मित्र प्रीति करता  
है । स्वामी बढ़ता है । परिवर्त जानता है । ब्रह्मा सिरधता है ।  
मुनि करता है । दोनों राम होते हैं । सज्जन उपदेश करता  
है । दाता देता है । कितने हैं । तीन होते हैं । सज्जन बोलते  
हैं । मुनि उपदेश करते हैं । भारे बोलता है । दाता बढ़ते हैं ।  
बोल करता है । स्वामी प्रीति करते हैं । दोनों मित्र होते हैं ।  
करे शक हैं । दो हैं ॥

दुधार गो चरती है । नाथ धीरे र चलती है । लक्ष्मी  
बढ़ती है । दुधार गो कहां चरती हैं । सब प्रसन्न हैं । स्त्री प्रसन्न  
होती है । मुट्टि शीघ्र प्रकाश करती है । आकाश स्वच्छ है । रमा

विलास करती है । नदी धीरे २ बढ़ती है । तीन स्त्रियां रहती हैं । नदियां स्वच्छ होती हैं । बहन रहती है । लक्ष्मी बढ़ती है । भोग शोभित होती है । दोनों रमा रहती हैं । बहू प्रसन्न होती हैं । वहां स्त्रियां नहीं हैं । लड़की खेलती है । बुद्धि बढ़ती है । बहन खेलती हैं । दोनों बहू कहां जाती हैं । मैं वहां जाती हूँ । नाव चलती हैं । तू कहां रहती है । मैं वहां रहती हूँ ॥

सहत मीठे हैं । दूध दही होता है । ज्ञान है । बल धीरे २ बढ़ते हैं । स्वच्छ ज्ञान शोभित होते हैं । दही मीठे हैं । जल स्वच्छ होता है । सब झूठ होता है । दोनों में से कौन है । और कौन नहीं है । अगले दोनों हैं ॥

पण्डित जानता है । यज्ञ करनेवाला प्रसन्न होता है । चलता हुआ खाता है । राजा रवा करता है । छ शास्त्र हैं । महत्त्व बढ़ता है । चक्रवर्ती शासन करता है । पण्डित उपदेश करता है । दूहनेवाला है । शान्त प्रसन्न होता है । बेल डकारता है । पर्वत नहीं हिलता । आग मथनेवाला खड़ा है । बुद्धिमान विचार करता है । दण्डी परिभ्रमण करता है । गुषा विलास करता है । स्वच्छ राह शोभित होती है । पण्डित सब ठौर पूज्य होते हैं । ब्रह्मा करता है । जो जानता है वह करता है । अति श्रेष्ठ पूज्य होता है । पुरुष है । वहां कौन है । बुद्धिमान राजा भली भांति शासन करते हैं । हम दोनों रवा करते हैं । पांच सज्जन भोजन करते हैं । वे सब पूज्य हैं । यह खेलता है । हम नहीं चलते । आठ टंडी जाते हैं । चार पुरुष हैं । यह पण्डित है । यह लजाता है । वे विचार करते हैं । श्रेष्ठ पूजित होता है । भली भांति गमन करनेवाला शोभित होता है । हम भ्रमण नहीं करते । तू कहां है ॥

कान्ति प्रकाश करती है । विपत्ति नष्ट होती है । आकाश शोभित होता है । वाणी खिलास करती है । माला मुर्झाती है । दिशा निर्मल होती है । वाणी फैलती है । यह कौन है । चार दिशा हैं । जो दिशा निर्मल होती है वह शोभित होती है । तू कौन है । यह वाणी मीठी है । यह कहां जाती है ॥

धनुष प्रकाश करता है । बड़ा गृह शोभित होता है । जल मीठा है । तू यहां जाता है । क्या संसार नष्ट होता है । चार गृह शोभित होते हैं । जो है यह होता है । कारबार नहीं फैलते । यह क्या है । जल धीरे २ निर्मल होता है । दिन बढ़ता है । ये दिन निर्मल हैं । बुद्धिमान कुल बढ़ता है । यह क्या है । यह जल है । यहां होम की वस्तु नहीं है ॥

इन वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो ।

हिन्दी शब्द ।

हिन्दी में हलन्त शब्द नहीं होते केवल स्वरान्त होते हैं । हिन्दी शब्दों के अन्त में प्रायः ये आठ स्वर रहते हैं अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ ॥

हम ऊपर कह आये हैं कि हिन्दी में दो ही लिङ्ग हैं पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग । हिन्दी में एकारान्त शब्दों को छोड़ कर जो केवल पुलिङ्ग होते हैं शेष सकल स्वरान्त शब्द पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग के भेद से प्रत्येक दो २ प्रकार के हैं ।

हिन्दी में पुलिङ्ग शब्दों में से केवल दीर्घ आकारान्त शब्दों के अन्त आकार को कर्ता कारक की प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में एकार होता है । और स्त्रीलिङ्ग शब्दों में से ह्रस्व अकारान्त शब्दों के अन्त अकार को अनुनासिक एकार और दीर्घ आकारान्त शब्दों के अन्त आकार को अनुनासिक आकार और

ह्रस्व इकारान्त शब्दों के अन्त इकार के आगे यां और दीर्घ इकारान्त शब्दों के अन्त इकार को ह्रस्व इकार और उसके आगे यां होता है । शेष संमंसल पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग स्यरान्त शब्द एकवचन और बहुवचन दोनों में व्यों के त्यों बने रहते हैं अर्थात् उन के अन्त स्यर में कुछ विकार नहीं होता । जैसे ॥

## पुल्लिङ्ग ।

एकवच.	बहुवच.
बालक	बालक
लड़का	लड़के
मुनि	मुनि
माली	माली
साधु	साधु
भालू	भालू
चाब्रे	चाब्रे
काटो	काटो

## स्त्रीलिङ्ग ।

घात	घातें
गेया	गेयां
तिथि	तिथियां
नदी	नदियां
धेनु.	धेनु
बहू	बहू
सरसो	सरसों

हिन्दी के कई एक पैदाकरण कहते हैं कि स्थीलिङ्ग में दीर्घ आकारान्त शब्द के अन्त आकार को कर्ता कारक की प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में अनुनासिक नहीं होता किन्तु एकवचन और बहुवचन दोनों में समान रूप होते हैं। यही हमारा भी मत है ॥

संस्कृत में कितने पुल्लिङ्ग शब्द ऐसे हैं जो आप तो दीर्घ आकारान्त नहीं हैं पर प्रथमा विभक्ति के एकवचन में उन के रूप विसर्ग सहित अथवा विसर्ग रहित दीर्घ आकारान्त होते हैं। जैसे। चन्द्रमस् का चन्द्रमाः। राजन् का राजा। पितृ का पिता। सखि का सखा। इत्यादि। इन शब्दों के ये रूप हिन्दी में पुल्लिङ्ग दीर्घ आकारान्त शब्द गिने जाते हैं। जैसे। चन्द्रमा। राजा। पिता। सखा। इत्यादि। इन पुल्लिङ्ग दीर्घ आकारान्त शब्दों के कर्ता कारक की प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में अन्त आकार को एकार नहीं होता। जैसे ॥

एकवच-	बहुवच-
चन्द्रमा	चन्द्रमा
राजा	राजा
पिता	पिता
सखा	सखा

ऊपर कहे हुए संस्कृत शब्दों के सिवाय विशेष करके हिन्दी ही भाषा के कितने एक संबन्धविशेषवाचक और व्यक्तिविशेषवाचक दीर्घ आकारान्त शब्द ऐसे हैं कि उन के भी कर्ता कारक की प्रथमा विभक्ति के बहुवचन में अन्त आकार को एकार नहीं होता। जैसे। काका, मामा, भैया, इत्यादि और बुधुआ, मुधुआ, मोहना इत्यादि ॥

हिन्दी के कई एक वैयाकरण वर्तमान काल के दो भेद मानते हैं एक सामान्यक्रियासम्बन्धी दूसरा तात्कालिकक्रियासम्बन्धी । सामान्यक्रियासम्बन्धी उस वर्तमान को कहते हैं जिस की क्रिया का आरम्भ तो हुआ हो पर उस की समाप्ति न हुई हो परन्तु यह निश्चय न हो कि कर्ता उस काल में उस क्रिया को करता है वा नहीं । जैसे । यच्चदत्त कौमुदी पढ़ता है । इस से केवल इतना बोध होता है कि यच्चदत्त ने कौमुदी पढ़ना आरम्भ किया है और अभी तक उस की वह क्रिया समाप्त नहीं हुई है परन्तु यह निश्चय नहीं होता कि वह उस समय कौमुदी पढ़ रहा है वा नहीं । तात्कालिकक्रियासम्बन्धी वर्तमान उस को कहते हैं जिस की क्रिया को कर्ता उस क्षण में कर रहा हो । जैसे । यच्चदत्त कौमुदी पढ़ रहा है । इस से प्रकाय होता है कि यच्चदत्त उस क्षण में कौमुदी पढ़ रहा है । संस्कृत में ऐसी क्रियाओं के अनुवाद में धातु के आगे शतृ वा शानच् प्रत्यय ला कर उस के आगे अस् धातु की वर्तमानकालिक क्रियाओं को जोड़ देते हैं । जैसे । यच्चदत्तः कौमुदीं पठन्नस्ति । इत्यादि ॥

### दूसरा पाठ ।

कर्म कारक ।

कर्म उसे कहते हैं जिस में फल हो । जैसे । गुरुः शिष्य-  
म्याठयति । गुरु शिष्य को पढ़ाता है । यहाँ शिष्य कर्म है ।  
क्योंकि पढ़ाने का फल उसी पर आश्रित है ॥

संस्कृत में कर्तृवाच्यतिङन्तक्रिया और हिन्दी में कर्तृ-  
प्रधानक्रिया के कर्म के आगे द्वितीया विभक्ति आती है । संस्कृत  
में द्वितीया विभक्ति के प्रायः हल मकार आदि चिह्न रहते हैं ।  
हिन्दी में उस का "को" चिह्न है । जैसे । ऊपर लिखे हुये



उदाहरण में संस्कृत में शिष्य शब्द के आगे हल मकार चिह्न है और हिन्दी में उसी शब्द के आगे "को" चिह्न है ।

हिन्दी में यह नियम नहीं है कि कर्तृप्रधानक्रिया के कर्म के आगे द्वितीया का चिह्न अवश्य रहे । कर्मों रहता है कभी नहीं । जैसे । तन्नुवायः पटं घयति । जुलाहा कपड़ा बीनता है । यहां हिन्दी में कपड़ा शब्द के आगे द्वितीया का चिह्न नहीं है ॥

हिन्दी के कोई २ वैयाकरण लिखते हैं कि यदि अप्राणि-  
वाचक सञ्जा कर्म कारक हो तो उस के आगे प्रायः "को" चिह्न नहीं आता । जैसे । मैं चिट्ठी लिखता हूँ । इत्यादि । और यदि व्यक्तियाचक अधिकारिवाचक और कर्मकर्तृवाचक सञ्जा कर्म कारक हों तो उन के आगे "को" चिह्न आता है । जैसे । मोहना को बुलाओ । चौधरी को भेज देना । वह अपने दास को मारता है । इत्यादि ॥

संस्कृत में द्वितीया विभक्ति ।

एकपद.	द्विपद.	तृपद.
अम्	ओट्	शस्

संस्कृत में भूत अनद्यतन काल । परोक्ष क्रिया । लिट् लकार । हिन्दी में सामान्यभूत काल ॥

पिछली रात के पिछले दो पहर और अगली रात के अगले दो पहर और इन चार पहरों के बीच का सारा दिन इन्हीं आठ पहरों को अद्यतन कहते हैं । और इन के बाहर का काल अनद्यतन कहलाता है ॥

परोक्ष क्रिया उस क्रिया को कहते हैं जो यत्ता को प्रत्यक्ष न हुई हो ॥

लिट् लकार के परस्मैपदसञ्ज्ञकप्रत्ययों के स्थान में णल् आदि आदेश ॥

एकवच.	द्विवच.	बहुवच.
णल्	अत्सु	उस्
थल्	अथ्सु	अ
णल्	व	म

( अस् और भू )

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकव.	वभूव	वभूविथ	वभूव
एकव.	था	था	था
एकव.	थी	थी	थी
एकव.	हुआ	हुआ	हुआ
एकव.	हुई	हुई	हुई
द्विव.	वभूवतुः	वभूवयुः	वभूविय
बहुव.	थे	थे	थे
बहुव.	थीं	थीं	थीं
बहुव.	हुए	हुए	हुए
बहुव.	हुईं	हुईं	हुईं
बहुव.	वभूवुः	वभूव	वभूविम
बहुव.	थे	थे	थे
बहुव.	थीं	थीं	थीं
बहुव.	हुए	हुए	हुए
बहुव.	हुईं	हुईं	हुईं

संस्कृत में अस् और भू इन दोनों धातुओं के रूप लिट् लकार में एक ही से होते हैं। इस लिये संस्कृत की एक २ क्रिया के नीचे हिन्दी की चार २ क्रिया लिखी गई हैं। ऊपर की दो २ अस् धातु की क्रियाओं के पलटे में और नीचे की दो २ भू धातु की क्रियाओं के बदले में ॥

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स बभूव	त्वं बभूविथ	अहं बभूव
तौ बभूवतुः	युवां बभूवथुः	आवां बभूविथ
ते बभूवुः	यूयं बभूव	वयं बभूविम

स्त्रीलिङ्ग ।

सा बभूव	त्वं बभूविथ	अहं बभूव
ते बभूवतुः	युवां बभूवथुः	आवां बभूविथ
ता बभूवुः	यूयं बभूव	वयं बभूविम

नपुंसकलिङ्ग ।

तद् बभूव	त्वं बभूविथ	अहं बभूव
ते बभूवतुः	युवां बभूवथुः	आवां बभूविथ
तानि बभूवुः	यूयं बभूव	वयं बभूविम

इन संस्कृत वाक्यों का अस् और भू दोनों धातुओं की क्रियाओं के अनुसार हिन्दी में अलग २ उल्था करो ।

(क)

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकप.	चकार	चकथे	चकार । चकर
द्विव.	चक्रतुः	चक्रथुः	चकृव
अपुव.	चक्रुः	चक्र	चकृम

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले हिन्दी की ये चार क्रिया आती हैं, किया, किये, कीं, कीं । इस का भेद आगे स्पष्ट होगा ।

स्मरण रखना चाहिये कि हिन्दी में यदि धातु अकर्मक हो तो भूत काल में कर्तृप्रधानक्रिया के कर्ता के आगे प्रथमा विभक्ति का कुछ चिह्न नहीं रहता । परन्तु यदि सकर्मक हो तो सामान्यभूत काल की क्रिया और उस के योग से बनी हुई इतर सकल क्रियाओं के कर्ता के आगे प्रथमा विभक्ति का चिह्न "ने" आता है । जैसे । यज्ञदत्तो बभूव । यज्ञदत्त हुआ । विष्णुमिषश्चकार । विष्णु मिष ने किया । यहां हिन्दी में जहां धातु अकर्मक है वहां कर्ता के आगे कुछ चिह्न नहीं है परन्तु जहां सकर्मक है वहां "ने" चिह्न आया है । हिन्दी में पुलिङ्ग वा स्त्रीलिङ्ग शब्दों के एकवचन वा बहुवचन में जैसे रूप, "को" आदि विभक्तियों के योग में होते हैं वैसे ही "ने" के योग में भी होते हैं । जैसे । बालक ने । बालकों ने । लड़के ने । लड़कों ने । स्त्री ने । स्त्रियों ने । इत्यादि । सर्वनामों की भी यही व्यवस्था जानो ।

"ने" के योग में प्रथम आदि पुरुषसम्बन्धी सर्वनामों के रूप ॥

पुलिङ्ग ।

पुं. पु.	मध्य. पु.	उत्त. पु.
सः	त्वम्	अहम्
उस ने	तू ने	मैं ने
तौ	युवाम्	आशाम्
उन दोनों ने	तुम दोनों ने	हम दोनों ने
त	युष्मत्	वयम्
उन ने । उन्होंने ने	तुम ने	हम ने

स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग में पुलिङ्ग के तुल्य जानो ।

हम पीछे कह आये हैं कि हिन्दी में कर्तृप्रधानक्रिया के कर्म के आगे द्वितीया का चिह्न "को" कहीं रहता है कहीं नहीं। यदि कर्म के आगे द्वितीया का चिह्न "को" न रहे और उक्त रीति के अनुसार कर्ता के आगे प्रथमा का चिह्न "ने" आवे तो क्रिया के रूप कर्म के लिङ्ग और वचन के अनुसार होंगे कर्ता के नहीं। जैसे । कृष्णदत्तो विश्रामञ्चकार । कृष्णदत्त ने विश्राम किया । रामदत्तो विश्रामांश्चकारे । रामदत्त ने विश्राम किये । यज्ञदत्तः प्रतिज्ञाञ्चकार । यज्ञदत्त ने प्रतिज्ञा की । विष्णुमित्रः प्रतिज्ञाश्चकार । विष्णुमित्र ने प्रतिज्ञा की । यहां हिन्दी के प्रथम वाक्य में कर्म पुलिङ्ग और एकवचनान्त है इस लिये क्रिया दीर्घ अकारान्त, दूसरे वाक्य में कर्म पुलिङ्ग और बहुवचनान्त है इस लिये क्रिया एककारान्त, तीसरे वाक्य में कर्म स्त्रीलिङ्ग और एकवचनान्त है इस लिये क्रिया दीर्घ ईकारान्त, चौथे वाक्य में कर्म स्त्रीलिङ्ग और बहुवचनान्त है इस लिये क्रिया अनुनासिक दीर्घ ईकारान्त हुई है । ऐसे ही सर्वत्र जानो ।

यदि कर्म के आगे द्वितीया का चिह्न "को" रहे और कर्ता के आगे प्रथमा का चिह्न "ने" भी आवे तो कर्म चाहे जिस लिङ्ग और जिस वचन का हो परन्तु क्रिया केवल दीर्घ अकारान्त होगी । जैसे । कृष्णदत्तः पुत्रं पाठयामास । कृष्णदत्त ने पुत्र को पढ़ाया । रामदत्तः पुत्रान् पाठयामास । रामदत्त ने पुत्रों को पढ़ाया । यज्ञदत्तो दुहितरं पाठयामास । यज्ञदत्त ने कन्या को पढ़ाया । विष्णुमित्रो दुहितुः पाठयामास । विष्णुमित्र ने कन्याओं को पढ़ाया । इत्यादि ॥

हम ने जो पीछे कहा है कि हिन्दी में कर्तृप्रधानक्रिया के रूप कर्ता के लिङ्ग और वचन के अनुसार पलट जाते हैं उस

का तात्पर्य यह है कि जहां कर्ता के आगे “ने” चिह्न नहीं रहता वहां क्रिया के रूप कर्ता के लिङ्ग और वचन के अनुसार पलटते हैं और जहां ने चिह्न रहता है वहां कहीं तो कर्म के लिङ्ग और वचन के अनुसार पलटते हैं और कहीं केवल दीर्घ आकारान्त होते हैं ॥

हिन्दी में “लाना” “बोलना” इत्यादि कई एक सकर्मक धातु ऐसे हैं कि उन की सामान्यभूत काल की क्रिया और उस के योग से बनी हुई इतर क्रियाओं के भी कर्ता के आगे प्रथमा का चिह्न “ने” नहीं आता। जैसे। चाकर घोड़ा लाया। रामदत्त बचन बोला। रीति के अनुसार करते तो होता ‘चाकर ने घोड़ा लाया’। रामदत्त ने बचन बोला। परन्तु ऐसे वाक्य हिन्दी में अशुद्ध हैं। और जिन धातुओं के अन्त में चुकना और सकना धातु जोड़े जाते हैं उन की क्रियाओं की भी यही रीति है। जैसे। मैं खा चुका। मैं पढ़ सका। इत्यादि ॥

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स चकार	त्वं चकथं	अहं चकार । चकर
तो चक्रतुः	युषां चक्रथुः	आशां चक्रथ
ते चक्रुः	यूयं चक्र	पयं चक्रम
	स्त्रीलिङ्ग ।	

सा चकार	त्वं चकथं	अहं चकार । चकर
ते चक्रतुः	युषां चक्रथुः	आशां चक्रथ
तारचक्रुः	यूयं चक्र	पयं चक्रम

नपुंसक-लिङ्ग ।

तच्चकार	त्वं चकथे	अहं चकार । चकार
ते चक्रतुः	युवां चक्रयुः	आषां चकृव
तानि चक्रुः	यूयं चक्र	वयं चकृम

इन प्रत्येक संस्कृत वाक्यों में पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्गों के एकवचनान्त द्विवचनान्त और बहुवचनान्त कर्मशचक पदों को जोड़ कर हिन्दी में उल्था करो । जैसे । स मनोरथञ्चकार । उस ने मनोरथ किया । स मनोरथो चकार । उस ने दोनों मनोरथ किये । स मनोरथाश्चकार । उस ने मनोरथ किये । स प्रतिज्ञाञ्चकार । उसने प्रतिज्ञा की । स प्रतिज्ञे चकार । उसने दोनों प्रतिज्ञा कीं । स प्रतिज्ञाश्चकार । उसने प्रतिज्ञा कीं । स पुण्यञ्चकार । उसने पुण्य किया । स पुण्ये चकार । उस ने दोनों पुण्य किये । स पुण्यानि चकार । उस ने पुण्य किये । इत्यादि ॥

( १५ )

	प्रथम पु०	मध्यम पु०	उत्तम पु०
एकव०	गधाञ्चके	गधाञ्चकृपे	गधाञ्चके
एकव०	बढ़ा	बढ़ा	बढ़ा
एकव०	बढ़ी	बढ़ी	बढ़ी
द्विव०	गधाञ्चकाले	गधाञ्चकाये	गधाञ्चकृषहे
बहुव०	बढ़े	बढ़े	बढ़े
बहुव०	बढ़ों	बढ़ों	बढ़ों
बहुव०	गधाञ्चक्रिरे	गधाञ्चकृद्वे	गधाञ्चकृमहे
बहुव०	बढ़े	बढ़े	बढ़े
बहुव०	बढ़ों	बढ़ों	बढ़ों

जानना चाहिये कि लिट् लकार में एध धातु के आगे कृ धातु के जोड़ने से ऊपर लिखे हुए रूप बनते हैं । ऐसे ही भू धातु के जोड़ने से एधाम्बभूष, एधाम्बभूषतुः, एधाम्बभूषुः, इत्यादि, और अस् धातु के जोड़ने से एधामास, एधामासतुः, एधामासुः इत्यादि रूप भी बनते हैं ।

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

वह बढ़ा	तू बढ़ा	मैं बढ़ा
वे दोनों बढ़े	तुम दोनों बढ़े	हम दोनों बढ़े
वे बढ़े	तुम बढ़े	हम बढ़े

स्त्रीलिङ्ग ।

वह बढ़ी	तू बढ़ी	मैं बढ़ी
वे दोनों बढ़ीं	तुम दोनों बढ़ीं	हम दोनों बढ़ीं
वे बढ़ीं	तुम बढ़ीं	हम बढ़ीं

नपुंसकलिङ्ग के बदले में पुल्लिङ्ग के तुल्य जानो ।

इन हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो ।

संस्कृत में भूत अनद्यतन काल । लङ् लकार । हिन्दी में

सामान्यभूत काल ।

( अस् )

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	तृतीय पु.
वक्तव्य.	आसीत्	आसीः	आसम्
वक्तव्य.	था	था	था
वक्तव्य.	थी	थी	थी
द्विव.	आस्ताम्	आस्ताम्	आस्य



अहुव.	ये	ये	ये
अहुव.	यीं	यीं	यीं
अहुव.	आसन्	आस्त	आस्म
अहुव.	ये	ये	ये
अहुव.	यीं	यीं	यीं

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स आसीत्	त्वमासीः	अहमासम्
तावास्ताम्	युवामास्तम्	आवामास्व
त आसन्	यूयमास्त	वयमास्म

स्त्रीलिङ्ग ।

सासीत्	त्वमासीः	अहमासम्
ते आस्ताम्	युवामास्तम्	आवामास्व
ता आसन्	यूयमास्त	वयमास्म

नपुंसकलिङ्ग ।

तदासीत्	त्वमासीः	अहमासम्
ते आस्तम्	युवामास्तम्	आवामास्व
तान्यासन्	यूयमास्त	वयमास्म

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

( मू )

	प्रथम पु	मध्यम पु	उत्तम पु.
एकव.	अभवत्	अभवः	अभवम्
द्वयव.	हुआ	हुआ	हुआ
एकव.	हुई	हुई-	हुई

द्विव.	अभवताम्	अभवतम्	अभवाव
अधुव.	हुए	हुए	हुए
अधुव.	हुई	हुई	हुई
अधुव.	अभवन्	अभवत	अभवाम
अधुव.	हुए	हुए	हुए
अधुव.	हुई	हुई	हुई

संस्कृत वाक्य ।

सोऽभवत्	पुल्लिङ्ग ।	
तावभवताम्	त्वमभवः	अहमभवम्
तेऽभवन्	युवामभवतम्	आवामभवाव
	यूयमभवत	वयमभवाम
	स्त्रीलिङ्ग ।	
सोऽभवत्	त्वमभवः	अहमभवम्
ते अभवताम्	युवामभवतम्	आवामभवाव
ता अभवन्	यूयमभवत	वयमभवाम
	नपुंसकलिङ्ग ।	
तदभवत्	त्वमभवः	अहमभवम्
ते अभवताम्	युवामभवतम्	आवामभवाव
तान्यभवन्	यूयमभवत	वयमभवाम

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

( कृ )

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
अकथय.	अकरोत्	अकरोः	अकरवम्
द्विवच.	अकुरुताम्	अकुरुताम्	अकुर्व
अधुवच.	अकुर्वन्	अकुरुत	अकुर्म

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की वैसे चार २ क्रिया आती हैं जो इस धातु के लिट् लकार की क्रियाओं के पलटे में लिखी हैं। इस का भेद पूर्ववत् जानो ॥

संस्कृत धाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

सोऽकरोत्

त्वमकरोः

अहमकरवम्

तावकुरुताम्

युवामकुरुताम्

आवामकुर्व

तेऽकुर्वन्

युयमकुरुत

वयमकुर्म

स्त्रीलिङ्ग ।

साकरोत्

त्वमकरोः

अहमकरवम्

ते अकुरुताम्

युवामकुरुताम्

आवामकुर्व

ता अकुर्वन्

युयमकुरुत

वयमकुर्म

नपुंसकलिङ्ग ।

तदकरोत्

त्वमकरोः

अहमकरवम्

ते अकुरुताम्

युवामकुरुताम्

आवामकुर्व

तान्यकुर्वन्

युयमकुरुत

वयमकुर्म

इन प्रत्येक संस्कृत धाक्यों में भी इस धातु के लिट् लकार के धाक्यों के तुल्य पुल्लिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग के एकवचनान्त द्विवचनान्त और बहुवचनान्त कर्मों को जोड़कर हिन्दी में उल्था करो ।

( यथ )

	एकवचन पु.	द्विवचन पु.	बहुवचन पु.
एकवचन	येधत	येधथाः	येधे
द्विवचन	येधेताम्	येधेथाम्	येधावही
बहुवचन	येधन्त	येधन्थम्	येधामहि

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की वही क्रिया आती है जो इस धातु के लिट् लकार की क्रियाओं के नीचे लिखी हैं ।

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

वह बढ़ा । इत्यादि । पूर्ववत् ।

संस्कृत में सामान्यभूत काल । लुङ् लकार हिन्दी में सामान्य भूत काल ।

( अस् और भू )

	प्रथम पु०	मध्यम पु०	उत्तम पु०
एकवच०	अभूत्	अभूः	अभूवत्
द्विवच०	अभूताम्	अभूतम्	अभूथ
बहुवच०	अभूवन्	अभूत	अभूमि

लुङ् लकार में भी अस् और भू दोनों धातुओं के रूप एकही से होते हैं । और इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की उन्हीं चार २ क्रियाओं को जानो जो इन धातुओं के लिट् लकार की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं ।

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

सोऽभूत्	त्वमभूः	अहमभूवम्
तावभूताम्	युवामभूतम्	आवामभूव
तेऽभूवन्	युयमभूत	वयमभूम
	स्त्रीलिङ्ग ।	
सभूत्	त्वमभूः	अहमभूवम्
ते अभूताम्	युवामभूतम्	आवामभूव
ता अभूवन्	युयमभूत	वयमभूम

अव्यय है। इस कारण प्रथम वाक्य में लड़ और द्वितीय में लुङ् लकार आया है। और उक्त रीति के अनुसार धातु के पहिले अ का आगम भी नहीं हुआ है।

मा भवतु । भविष्यति । इत्यादि उदाहरणों में माङ् अव्यय नहीं रहता किन्तु निषेधवाचक मा शब्द रहता है। इस लिये लोट और लृट् लकारों को बाधकर लुङ् लकार नहीं होता।

अजन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

रामम् । रामो । रामान् ।	कति ।
राम को । रामों को ।	सुधियम् । सुधियो । सुधियः ।
रामों को ।	साधुम् । साधू । साधून् ।
सर्वम् । सर्वो । सर्वान् ।	स्वयम्भुवम् । स्वयम्भुवो ।
धीन् ।	स्वयम्भुवः ।
पूर्वम् । पूर्वो । पूर्वान् ।	दातारम् । दातारो । दातारून् ।
मुनिम् । मुनी । मुनीन् ।	भ्रातरम् । भ्रातरो ।
पतिम् । पती । पतीन् ।	गाम् । गावो गाः ।
सखायम् । सखायो । सखीन् ।	

प्रथम पाठ में लिखे हुए अजन्त पुल्लिङ्ग शब्दों में से कतर शब्द से लेकर इतर शब्द पर्यन्त पांच शब्द शेष विभक्तियों के सत्र वचनों में और एक शब्द एक वचनों में और द्वि और उभ शब्द द्विवचनों में और अनेक शब्द बहुवचनों में सर्व शब्द के समान होते हैं। भ्रातृ शब्द द्वितीया के बहुवचनों से लेकर समस्त विभक्तियों के सत्र वचनों में दातृ शब्द के समान होता है।

कोष ।

साधी=पतिव्रता ।

भारती=सरस्वती ।

दिलीप=एक राजा का नाम

धातु ।

पूज. चुरा. उभय. सक. = पूजना । पूजा करना ।

पूजयति । पूजयतः । पूजयन्ति ।

लिट् । पूजयमास । पूजयामासतुः । पूजयामासुः ।

लङ् । अपूजयत् । अपूजयताम् । अपूजयन् ।

संस्कृत वाक्य ।

रामं पूजयमास मुनिः । हरिर्मुनिमपूजयत् । पतिमुपदि-  
शति साध्वी । सुधीरो राम सखायमकरोत् । ते बुधियमपूजयन् ।  
ते त साधु विदन्ति । स्वयम्भुव पतिञ्चकार भारती । याचका  
दातार गच्छन्ति । विष्णुमित्रो भ्रातरमुपदिशति । दिलीपो गाम-  
पूजयत् । साधवः पितर पूजयन्ति ॥

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करी ।

संस्कृत में दुह आदि सोलह धातु ऐसे हैं कि उनके  
कर्म कारक के साथ जिन अपादान आदि कारको का सम्बन्ध  
रहता है यदि वे कारक अपादान आदि रूप से न समझे जाय  
तो वे भी कर्म हो जाते हैं । इसी से उन धातुओं को द्विकर्मक  
कहते हैं । और इन दूसरे कर्मों के आगे भी द्वितीया विभक्ति  
आती है ॥

वे धातु ये हैं—दुह (दूहना), याच (मागना), पच  
(पकाना) दग्ध (दग्ध लेना), रुध (चेरना), प्रच्छ (पूछना),  
चि (बटोरना), ब्रू (कहना), शास (शिक्षा करना), जि (जीतना),  
मन्थ (मथना), मुष् (चेरा लेना), नी (ले जाना), हृ (प्राप्त  
करना), कृष् (लेजाना), घह (पहुँचाना) ॥

क्रम से उदाहरण—मा दोग्धि दुग्धम् । गो से दूध दूहता  
है । दातार याचते वस्त्रम् । दाता से वस्त्र मागता है । तद्वृ-

सानोदनं पचति । चावल से भात पकाता है । वैश्यान् शतं दण्डयति । बनियों से सौ (रुपये) दण्ड लेता है । गोष्ठुमवसृष्टिगाम् । खरके में गो को घेरता है । माणवकं पन्थानं पृच्छति । लड़के से राह पूछता है । वृद्धमवचिनोति फलानि । पेड़ से फल बटोरता है । माणवकं धर्मं व्रूते । लड़के के लिये धर्म (की बातें) कहता है । पुत्रं धर्मं शास्ति । पुत्र के लिये धर्म (की बातें) सिखाता है । शतं जयति देवदत्तम् । देवदत्त से सौ (रुपये) जीतता है । सुधां क्षीरनिधिं मयाति । क्षीर समुद्र से अमृत मयता है । देवदत्तं शतं मुष्याति । देवदत्त से सौ (रुपये) चोरा लेता है । शाममजां नयति । बकरी को गांव पर ले जाता है । हरति । प्राग्न करता है । कर्षति । ले जाता है । अथवा । वहति । पहुँचाता है ।

इन द्रुह आदि सोलह धातुओं के समान अर्थवाले अन्य धातुओं के योग में भी यह कर्म सञ्जा होती है केवल इन्हीं के नहीं । जैसे । वलिं भिक्षते घमुधाम् । वलि (राजा) से पृथ्वी मांगता है । माणवकं धर्मं भाषते । लड़के के लिये धर्म कहता है । यहां याच और व्रू इन दोनों धातुओं के समानार्थ भिन्न और भाष धातु का प्रयोग है । ऐसे ही सर्वत्र जानो ।

जहाँ एक कर्ता किसी दूसरे कर्ता को प्रेरणा करता है वहाँ उस प्रेरणा करनेवाले को प्रयोजक कर्ता और जिसे वह प्रेरणा करता है उसको प्रयोज्य कर्ता कहते हैं । संस्कृत में इस प्रेरणा रूप अर्थ को प्रकाश करने के लिये धातु के आगे "णिच्" प्रत्यय जोड़ कर विजन्त क्रिया बनाई जाती हैं । जैसे । यच्चदतो भयति । देवदत्तो यच्चदत्तं भाषयति । यच्चदत्त होता है । देवदत्त यच्चदत्त को हो जाता है । यहां "भू" धातु की गृह्य क्रिया "भवति" और विजन्त क्रिया "भाषयति" है । इसी से प्रयोज्य कर्ता को अद्यन्तावस्था का कर्ता और प्रयोजक कर्ता को अद्यन्तावस्था का

कर्ता भी कहते हैं। हिन्दी में इस विजन्त क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। विशेष इतना है कि हिन्दी में धातु के आगे विच् प्रत्यय नहीं लाते।

अकर्मक धातु की अण्यन्तावस्था का कर्ता अण्यन्तावस्था में कर्म हो जाता है। और इस प्रकार से अकर्मक धातु सकर्मक हो जाता है। जैसे। पुषः शेते। माता पुषं शाययति। पुष सोता है। माता पुष को सोलाती है। यहां अकर्मक "शी" धातु की अण्यन्तावस्था का कर्ता पुष अण्यन्तावस्था में कर्म हो गया है। यही विधि हिन्दी में भी जाने।

सकर्मक धातुओं में से जिन धातुओं का अर्थ गमन ज्ञान अथवा भोजन हो और जिनका कर्म कारक शब्द हो इन्हीं चार प्रकार के धातुओं की अण्यन्तावस्था का कर्ता अण्यन्तावस्था में कर्म होता है औरों का नहीं।

गमन अर्थ का उदाहरण। माणयको यामं गच्छति। देयदतो माणयकं यामं गमयति। लहका गांघ जाता है। देयदत लहके को गांघ लेजाता है। यहां अण्यन्तावस्था का कर्ता माणयक अण्यन्तावस्था में कर्म हुआ है।

यद्यपि "नी" (लेजाना) और "वह" (पहुंचाना) इन दोनों धातुओं का अर्थ भी एक प्रकार का गमन है तथापि इन की अण्यन्तावस्था के कर्ता अण्यन्तावस्था में कर्म नहीं होते। जैसे। देयदतो भारं नयति। यद्भदतो देयदतेन भारं नाययति। देयदत बोझा लेजाता है। यद्भदत देयदत से बोझा लिया जाता है। विष्णुदतो भारं वहति। कृष्णदतो विष्णुदतेन भारं वाहयति। विष्णुदत बोझा पहुंचाता है। कृष्णदत विष्णुदत से बोझा पहुंचाता है। यहां दोनों भाषणों में अण्यन्तावस्था के कर्ता देयदत



और विष्णुदत्त एयन्तावस्था में कर्म नहीं हुए । और इसी से इन के आगे द्वितीय विभक्ति नहीं हुई किन्तु तृतीया हुई ।

परन्तु यदि "घह" धातु का कर्ता पशुप्रेरक हो तो संस्कृत में उस की अण्यन्तावस्था का कर्ता एयन्तावस्था में कर्म अवश्य होगा । जैसे वलीवर्ष्टा यवान् घहन्ति । यच्चदत्ते। वलीवर्ष्टान् यवान् घाहयति । बेल यघ पहुंचाते हैं । यच्चदत्त बेलों से यघ पहुंचवाता है । यहां केवल संस्कृत में अण्यन्तावस्था के कर्ता बेल एयन्तावस्था में कर्म हुए । क्योंकि यच्चदत्त बेलरूपी पशुओं का प्रेरक है ।

ज्ञान अर्थ का उदाहरण । माणवको धर्म वेत्ति । देवदत्तो माणवकं धर्मं वेदयति । लड़का धर्म जानता है । देवदत्त लड़के को धर्म जानाता है ।

भोजन अर्थ का उदाहरण । माणवक भोदनं भुङ्क्ते । यच्चदत्ते। माणवकभोदनं भोजयति । लड़का भान खाता है । यच्चदत्त लड़के को भान खिलाता है ।

यद्यपि "अद" और "खाद" इन दोनों धातुओं का भी भोजन अर्थ है तथापि संस्कृत में इन की अण्यन्तावस्था का कर्ता एयन्तावस्था में कर्म नहीं होता । जैसे । माणवक भोदनमिति । यच्चदत्ते। माणवकेनोदनमादयति । लड़का भान खाता है । यच्चदत्त लड़के को भान खिलाता है । विष्णुमित्रो भोदकं खादति । देवदत्ते। विष्णुमित्रेण भोदकं खादयति । विष्णुमित्र लड्डु खाता है । देवदत्त विष्णुमित्र को लड्डु खिलाता है । यहां केवल संस्कृत में अण्यन्तावस्था के कर्ता माणवक और विष्णुमित्र एयन्तावस्था में कर्म नहीं हुए ।

भक्ष धातु का अर्थ भी भोजन है परन्तु यदि इस भोजन

से किसी को कुछ पीड़ा पहुंचती हो तब तो इस धातु की अण्यन्तावस्था के कर्ता को कर्म सञ्जा होती है अन्यथा नहीं। जैसे। घलीवर्दाः सस्यं भक्षयन्ति। देवदत्तो घलीवर्दान् सस्यं भक्षयति। बैल (खेत का) अन्न चरते हैं। देवदत्त बैलों से खेत का अन्न चराता है। यहां केवल संस्कृत में भव धातु की अण्यन्तावस्था के कर्ता बैल अण्यन्तावस्था में कर्म हुए हैं। क्योंकि इस भोजन से खेत के स्वामी अथवा हरे अन्नो को पीड़ा पहुंचती है। और जहां किसी को कुछ पीड़ा नहीं पहुंचती वहां कर्म सञ्जा भी नहीं होती। जैसे। माणवकोऽन्नं भक्षयति। रामदत्तो माणवकेनान्नं भक्षयति। लड़का अन्न खाता है। रामदत्त लड़के को अन्न खिलाता है। यहां संस्कृत में कर्म सञ्जा नहीं हुई।

शब्द कर्मक का उदाहरण।

विष्णुमित्रो वेदमधीति। यज्ञदत्तो विष्णुमित्रं वेदमध्यापयति। विष्णुमित्र वेद पढ़ता है यज्ञदत्त विष्णुमित्र को वेद पढ़ाता है।

पूर्वोक्त गमन आदि अर्थवाले चार प्रकार के धातुओं से भिन्न सकर्मक धातुओं की अण्यन्तावस्था का कर्ता अण्यन्तावस्था में कर्म नहीं होता। जैसे। रामदत्त आदनं पचति। देवदत्तो रामदत्तेनोदनं पाचयति। रामदत्त भात पकाता है। देवदत्त रामदत्त से भात पकवाता है। इत्यादि। यहां रामदत्त को कर्म सञ्जा नहीं हुई।

“जल्प” (बोलना) इत्यादि धातु और “दृश” (देखना) धातु की अण्यन्तावस्था का कर्ता अण्यन्तावस्था में कर्म होता है। जैसे। पुत्रो धर्मं जल्पति। देवदत्तः पुत्रं धर्मं जल्पयति। पुत्र धर्म कहता है। देवदत्त पुत्र से धर्म कहवाता है। भक्तो हरिं पश्यति। देवदत्तो भक्तान् हरिं दर्शयति। भक्त हरि का दर्शन करते हैं। देवदत्त भक्तों को हरि का दर्शन कराता है।

अण्यन्तावस्था का कर्ता अण्यन्तावस्था में कर्म हो जाता

कृष्य की दोनों ओर । परितो रामम् । राम की सत्र ओर । समय  
यामम् । गौध के समीप । निकषा लङ्गाम् । लङ्का के पास । हा  
पापिनम् । पापी के विषय में शोक । कुभुक्षितं न प्रति भाति  
किञ्चित् । भूखे को कुछ नहीं घान पड़ता ।

“अन्तरा” और “अन्तरेण” इन प्रत्येक के योग में  
द्वितीया होती है । जैसे । अन्तरा त्वां माञ्चु कमण्डलुः । हमारे  
ओर तुम्हारे बीच में कमण्डल । अन्तरेण त्वां न सुखम् । तुम्हारे  
बिना सुख नहीं ।

जहां तृतीया का अर्थ प्रकाशित हो वहां अनु के योग में  
द्वितीया होती है । जैसे । पर्वतमन्ववसिता सेना । पर्वत के साथ  
मिली हुई सेना ।

जहां हीनता प्रकाशित हो वहां अनु और उप के योग में  
द्वितीया होती है । जैसे । श्रीमतीं विजयीनीमनु उप वा सर्वे  
राजानः । सब राजा श्रीमती विजयिनी से छोटे हैं ।

जहां कोई चिह्न, अथवा किसी विशेष अर्थात् भेद को प्राप्त  
कोई पदार्थ, अथवा अंश, अथवा वीप्सा, समझी जाय वहां प्रति,  
परि और अनु इन प्रत्येक के योग में द्वितीया होती है ।

चिह्न का उदाहरण । जैसे वृषं प्रति विद्योतते विद्युत् ।  
वृष की ओर बिजली चमकती है । यहां वृष के प्रकाश  
से बिजली का प्रकाश जाना जाता है । इस लिये वृष चिह्न है ।

किसी प्रकार अर्थात् विशेष को प्राप्त पदार्थ का उदाहरण ।  
जैसे । विष्णुं प्रति भक्तो यज्ञदत्तः । यज्ञदत्त विष्णु का भक्त । यहां  
यज्ञदत्त विष्णु की भक्ति को प्राप्त है ।

अंश का उदाहरण । जैसे । लक्ष्मीर्हरिं प्रति । विष्णु की  
लक्ष्मी विष्णु का भाग है ।

वीप्सा का उदाहरण । जैसे । वृषं वृषं प्रति सिद्धति ।  
वृष वृष प्रति सोचता है ।

ऐसे ही परि और अनु के योग में भी जाने ।

जहाँ गुण क्रिया और द्रव्य के साथ काल और पथ का  
निरन्तर संयोग रहता है वहाँ काल और पथवाचक शब्द के  
आगे द्वितीया विभक्ति आती है ।

काल के उदाहरण । मासं कल्याणी । महीना भर अच्छी ।  
मासमधीते । महीना भर पढ़ता है । मासं गुडधाना । महीना  
भर गुडधनिया । अर्थात् गुड और भूना हुआ यव । इन संस्कृत के  
उदाहरणों में क्रम से गुण क्रिया और द्रव्य के साथ मास रूप  
काल का निरन्तर संयोग है ।

पथ के उदाहरण । क्रोशं कुटिला नदी । कोस भर तक टेढ़ी  
नदी । क्रोशमधीते । कोस भर तक पढ़ता है । क्रोशं पर्वतः । कोस  
भर तक पर्वत । इन संस्कृत के उदाहरणों में क्रम से गुण क्रिया  
और द्रव्य के साथ कोस रूप पथ का निरन्तर संयोग है । इस  
लिये द्वितीया विभक्ति आई है ।

जहाँ निरन्तर संयोग नहीं रहता वहाँ द्वितीया नहीं  
होती । जैसे । मासस्य द्विरधीते । महीने में दो बार पढ़ता है ।  
क्रोशस्यैकदेशे पर्वतः । कोस भर में थोड़ी दूर तक पर्वत ।

यद्यपि क्वा, और तमुन्, ये प्रत्यय कृदन्त प्रकरण के हैं  
तथापि क्वा प्रत्ययान्त और तमुन्प्रत्ययान्त शब्दों का यहाँ अधिक  
काम पड़ता है इस लिये उन को यहीं लिखते हैं ।

जिन दो आदि अनेक धातुओं का कर्ता एक ही हो उन में  
से जो धातु पूर्वकालिक क्रिया को कहे उस के आगे क्वा प्रत्यय  
आता है । जैसे । स्नात्वा व्रजति । स्नान करके जाता है । अर्थात्

कृष्ण की दोनों ओर । परितो रामम् । राम की सब ओर । समया रामम् । गौध के समीप । निकषा लङ्काम् । लङ्का के पास । हा पापिनम् । पापी के विषय में शोक । बुभुक्षितं न प्रति भक्ति किञ्चित् । भूखे को कुछ नहीं जान पड़ता ।

“अन्तरा” और “अन्तरेण” इन प्रत्येक के योग में द्वितीया होती है । जैसे । अन्तरा त्वां माञ्च कमण्डलुः । हमारे और तुम्हारे बीच में कमण्डल । अन्तरेण त्वां न सुखम् । तुम्हारे बिना सुख नहीं ।

जहां तृतीया का अर्थ प्रकाशित हो वहां अनु के योग में द्वितीया होती है । जैसे । पर्वतमन्ववसिता सेना । पर्वत के साथ मिली हुई सेना ।

जहां हीनता प्रकाशित हो वहां अनु और उप के योग में द्वितीया होती है । जैसे । श्रीमतीं विजयीनीमनु उप वा सर्वे राजानः । सब राजा श्रीमतीं विजयिनी से छोटे हैं ।

जहां कोई चिह्न, अथवा किसी विशेष अर्थात् भेद को प्राप्त कोई पदार्थ, अथवा अंग, अथवा धीप्सा, समझी जाय वहां प्रति, परि और अनु इन प्रत्येक के योग में द्वितीया होती है ।

चिह्न का उदाहरण । जैसे वृषं प्रति विद्योतते विद्युत् । वृष की ओर बिजली चमकती है । यहां वृष के प्रकाश से बिजली का प्रकाश जाना जाता है । इस लिये वृष चिह्न है ।

किसी प्रकार अर्थात् विशेष को प्राप्त पदार्थ का उदाहरण । जैसे । विष्णुं प्रति भक्तो यज्ञदत्तः । यज्ञदत्त विष्णु का भक्त । यहां यज्ञदत्त विष्णु की भक्ति को प्राप्त है ।

अंग का उदाहरण । जैसे । लक्ष्मीर्हरिं प्रति । विष्णु की लक्ष्मी अर्थात् लक्ष्मी विष्णु का भाग है ।

अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

रमाम् । रमे । रमाः ।	स्त्रियम् । स्त्रीम् । स्त्रियो ।
रमा को । दोनों रमाओं को ।	स्त्रियः । स्त्रीः ।
रमाओं को ।	घेनुम् । घेनु । घेनुः ।
सर्वाम् । सर्वे सर्वाः ।	वधूम् । वध्वो । वधूः ।
तिस्रः ।	भुवम् । भुवो । भुवः ।
मतिम् । मती । मतीः ।	दुहितरम् । दुहितरी । दुहितृः ।
नदीम् । नदो । नदीः ।	स्वसारम् । स्वसारो । स्वसृः ।
प्रियम् । प्रियो । प्रियः ।	द्याम् । द्यावो । द्याः ।
	नाथम् । नावो । नाथः ।

स्वसृ शब्द के शेषरूप दुहितृ शब्द के समान जानो ।  
कोष ।

निदाघ=मीम षत् ।

धर्मज्ञ=धर्मशास्त्र जाननेवाला  
केवर्त । मलाह ।

धातु ।

याच-भ्या- उभय- द्विक=मांगना । दुह- अदा उभय- द्विक=दूहना ।  
लिट् । ययाचे ।

दोग्धि ।

( नश )

शिञ् । नाशयति ।

( चल )

शिञ् । चालयति ।

( वृध )

शिञ् । वृद्धयति ।

पठ भ्या- पर- सक- =पठना ।

शिञ् । पाठयति ।

शुप- दिवा- पर- अक- =सूक्ष्मना । मान- घुरा- उभ- सक- =आदरक ।

शिञ् । शोषयति ।

मानयति ।

मन- अशपूर्वक- दिवा- आत्म-

पाल- घुरा- उभ- सक- =पालनक ।

सक- =अनादरक ।

पालयति ।

अवमन्यते ।

पहिले खान करता है तब जाता है। यहां "खा" (महाना) और "जाना" (जाना) इन दोनों धातुओं का एक ही कर्त्तव्य है और उन में से खा धातु पूर्वकालिक क्रिया को प्रकाश करता है। इस लिये खा धातु के आगे क्त्वा प्रत्यय आया है। भुक्त्वा पीत्वा प्रजति। खा पीकर जाता है। यहां "भुज" (खाना) "पी" (पीना) ये दोनों धातु पूर्वकालिक क्रिया को प्रकाश करते हैं। इस लिये इन दोनों के आगे क्त्वा प्रत्यय आया है।

जहां किसी नञ् भिन्न पूर्वपद के साथ क्त्वाप्रत्ययान्त का समास होता है वहां क्त्वा को य आदेश होता है। जैसे प्रक्षम्य। प्रक्षाम करके। यहां प्र और नत्वा इन दोनों का समास हुआ है। ऐसे ही आढाय इत्यादि प्रयोग भी जानो।

जहां नञ् के साथ समास होता है वहां क्त्वा को य नहीं होता। जैसे। प्रकृत्या। नहीं करके। यहां नञ् के साथ समास है। इस लिये क्त्वा को य नहीं हुआ है।

जहां एक क्रिया के निमित्त कोई दूसरी क्रिया पास रहती है वहां प्रथम क्रिया के वाचक धातु के आगे भविष्य अर्थ में तुमुन् प्रत्यय आता है। जैसे। कृष्यं द्रष्टुं याति। कृष्य को देखने जाता है। यहां देखना क्रिया के निमित्त जाना क्रिया निकटवर्ती है। इस लिये देखना क्रिया के वाचक दृश धातु के आगे भविष्य अर्थ में तुमुन् प्रत्यय हुआ है।

जहां दो कर्मों में से एक उद्देश्य और दूसरा विधेय हो वहां हिन्दी में उद्देश्य के आगे "को" विभक्ति रहती है और विधेय के आगे उस का लोप होता है। जैसे। सुबीवा राम सहायं चकार। सुबीव ने राम को मिच बनाया। यहां राम उद्देश्य और मिच विधेय है।

## संस्कृत वाक्य ।

गुरुर्दानं ददौ । ज्ञानी सर्वं मिथ्या जानाति । अन्यत्र वेद्मि ।  
वारिद्रो वारि वर्धति । दधि मध्नाति गोपिका । मधुकरो मधूनि पयो ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करी ।

## हतन पुल्लिङ्ग शब्द ।

दुहम् । दुहो । दुहः । इस को । इन दोनों को । इन को ।  
दूहनेवाले को । दोनों दूहने-यम् । यो । यान् ।

घालों को । दूहनेवालों को । जिस को । जिन दोनों को । जिन को ।  
अनङ्गाहम् । अनङ्गाहो । अनङ्गुहः । यतम् । यनम् । यतो । यनो ।

चतुरः । यतान् । यनान् ।

पञ्च । इस को । इन दोनों को । इन को ।

षट् । अमुम् । अमू । अमून् ।

अष्टौ । अष्टु । इस को । इन दोनों को । इन को ।

तम् । तौ । तान् । उस को । उन दोनों को । उन को ।

उस को । उसे । उन दोनों को । समाजम् । समाजो । समाजः ।

उन को । भूभृतम् । भूभृतो । भूभृतः ।

त्वाम् । त्वा । युशाम् । वाम् । भवन्तम् । भवन्तो । भवतः ।

युष्मान् । वः । धीमन्तम् । धीमन्तो । धीमतः ।

तुम्हे । तुम दोनों को । तुम को । गच्छन्तम् । गच्छन्तो । गच्छतः ।

माम् । मा । आशाम् । नो । प्रशामम् । प्रशामो । प्रशामः ।

अस्मान् । नः । बुधम् । बुधो । बुधः ।

मुम्हे । हम दोनों को । हम को । अग्निमथम् । अग्निमथो । अग्नि-

कम् । को । कान् । मथः ।

किसको । किनदोनोंको । किनको । प्राञ्चम् । प्राञ्चो । प्राञ्चः ।

इमम् । एनम् । इमे । एनो । प्राञ्चम् । प्राञ्चो । प्राञ्चः ।

इमान् । एनान् । उदञ्चम् । उदञ्चो । उदञ्चः ।



संस्कृत वाक्यः।

हरिः क्षीरनिधिं रमां ययाचे । कुमतिः सर्वोऽश्विनं नाशयति । विष्णुमिषस्तिषो विद्याः पठति । विद्या मतिं घट्टयते । निदाघः स्यल्पा नदीः शोषयति । धर्मज्ञः स्त्रियं नाशमन्यते । गोपालो धेनुं पयो देगिध । श्वश्रुर्वधूं धर्मे शास्ति । मदनमोहने भ्रुवो चालयति । रामदत्तो दुहितरं पाठयति । विष्णुमिषः स्वसारं मानयति इन्द्रोऽद्यां पालयति । कैवर्ते नाशं चालयति ।

रन संस्कृत वाक्या का हिन्दी में उल्था करो ।

अत्रन्त नपुंमकलिङ्ग शब्दः ।

ज्ञानम् । ज्ञाने ज्ञानानि । अन्यतरत् । अन्यतरे । अन्यतराणि ।  
 ज्ञानको । ज्ञानो ज्ञानोको । ज्ञानोको । इतरत् । इतरे । इतराणि ।  
 सर्वम् । सर्वे । सर्वाणि । पूर्वम् । पूर्वे । पूर्वाणि ।  
 कतरत् । कतरे । कतराणि । वारि वारिणी । वारीणि ।  
 कतमत् । कतमे । कतमानि । दधि । दधिनी । दधीनि ।  
 अन्यत् अन्ये । अन्यानि । मधु । मधुनी । मधूनि ।

सर्व शब्द से लेकर पूर्व शब्द पर्यन्त सात शब्दों के रूप शेष विभक्तियों में पुलिङ्ग के समान होते हैं ।

कोष ।

वारिद=मेघ ।

मधुकर=भौरा ।

धातु ।

( टा )

मन्थ. क्र्या. पर. सक. =मथना ।

लिट् ददौ ।

मथति ।

ज्ञा. क्र्या. पर. सक. =जानना । या. भ्या. पर. सक. =पीना ।

जानाति ।

लिट् । पपी ।

वृष. भ्या. पर सक. =बरसना ।

वर्षति ।

## संस्कृत वाक्य ।

गुरुघानं ददौ । ज्ञानी सर्वं मिथ्या जानाति । अन्यत्र वेद्वि ।  
 धारिदे । धारि धरति । दधि मध्याति गोपिका । मधुकरो मधूनि पयो ।  
 इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हलन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

दुहम् । दुहो । दुहः । इस को । इन दोनों को । इन को ।

दूहनेवाले को । दोनों दूहने-यम् । यो । यान् ।

वालों को । दूहनेवालों को । जिस को । जिन दोनों को । जिन को ।

अनद्धाहम् । अनद्धाहो । अनद्धहः । यत् । यन् । यतो । यनो ।

चतुरः । यतान् । यनान् ।

पञ्च । इस को । इन दोनों को । इन को ।

षट् । अमुम् । अमू । अमून् ।

अष्टौ । अष्ट । इस को । इन दोनों को । इन को ।

तम् । तो । तान् उस को । उन दोनों को । उन को ।

उस को । उसे । उन दोनों को । सम्राजम् । सम्राजो । सम्राजः ।

उन को । भूमत् । भूमतो । भूमतः ।

त्वाम् । त्वा । युवाम् । वाम् । भवन्तम् । भवन्तो । भवतः ।

युष्मान् । वः । धीमन्तम् । धीमन्तो । धीमतः ।

तुम्हे । तुम दोनों को । तुम् को । गच्छन्तम् । गच्छन्तो । गच्छतः ।

माम् । मा । आवाम् । नो । प्रशामम् । प्रशामो । प्रशामः ।

अस्मान् । नः । बुधम् । बुधो । बुधः ।

मुम्हे । हम दोनों को । हम को । अग्निमयम् । अग्निमयो । अग्नि-

कम् । को । कान् । मयः ।

किसको । किनदोनोंको । किनको । प्राञ्चम् । प्राञ्चो । प्राञ्चः ।

इमम् । यन्म् । इमो । एनो । प्राञ्चम् । प्राञ्चो । प्राञ्चः ।

इमान् । यनान् । उदञ्चम् । उदञ्चो । उदञ्चः ।

महान्तम् । महान्तो । महत्तः । दण्डिनम् । दण्डिनो । दण्डिनः ।

महिमानम् । महिमानो । पन्थानम् । पन्थानो । पथः ।

महिम्नः । वेधसम् । वेधसो । वेधसः ।

यज्वानम् । यज्वानो । यज्वनः । विद्वांसम् । विद्वांसो । विदुषः ।

युवानम् । युवानो । यूनः । गरीयांसम् । गरीयांसो । गरीयसः ।

राजानम् । राजानो । राज्ञः । पुमांसम् । पुमांसो । पुंसः ।

भघत् शब्द और महत् शब्द के शेष रूप क्रम से धीमत् शब्द और गच्छत् शब्द के सदृश होते हैं ।

काव ।

सामन्त=छोटे राजा ।

गोष्यति=बृहस्पति ।

धातु ।

द्वे. आह्. पूर्वक. भ्वा. उभ.

इ. अदा. पर. सक्र.=प्राप्त हो ।

सक्र.=पुकाराना ।

जाना । याना ।

आह्वयति ।

यति ।

भघ. चुरा. उभ. सक्र.=खाना ।

शंस. प्रपूर्वक. भ्वा. पर. सक्र.=

शिष् । भक्षयति ।

प्रशंसा क. । स्तुति क. ।

त्रि. भ्वा. सम्. आह्. पूर्वक. उभ.

लिट् । प्रशंसुः ।

सक्र.=सेवा करना ।

जि. भ्वा. पर. द्विक्र.=जीतना ।

समाश्रयन्ते ।

जयति ।

आस. अधिपूर्वक. अदा. आत्म.

विश. अभि. निपूर्वक. तुदा. आत्म.=

अक.=बैठना ।

पैठना ।

अध्यास्ते ।

अभिनिविशते ।

( गम् ) अनुपूर्वक.=धीछि जाना । ( भुज )

लिट् । अनुजगाम ।

शिष् । लिट् । भोजयामासुः ।

दृ. सम्. आह्. पूर्वक. तुदा. आत्म. प्रच्छ. तुदा. पर. द्विक्र.=पूछना ।

सक. = आदर करना । पृच्छति ।

समाद्रियते ।

नम. प्रपूर्वक. भ्या. पर. सक. = त्यज. परिपूर्वक. भ्या पर. सक. =

प्रणमि क-

त्यागना । छोड़ना ।

लिट् । प्रणेमुः ।

परित्यजति ।

संस्कृत वाक्य ।

देवदत्तो गां दोग्धुं दुहमाह्वयति । यज्ञदत्तोऽनवाहं सस्यं  
भवयति । स चतुरो वेदान् पपाठ । मां त्वाञ्चान्तरा, विष्णुः । सम्राजं  
सामन्ताः समाश्रयन्ते । भूभृतमध्यास्ते यज्ञदत्तः । भवन्तं गीष्पतिं  
मन्ये सर्षेविद्याविशारदम् । धीमन्तं श्रियः समाश्रयन्ते । धनं गच्छन्तं  
रामं लक्ष्मणोऽनुजगाम । प्रशामं को न समाद्रियते । बुधं सर्वे समा-  
द्रियन्ते । अग्निमयमृत्विज आह्वयन्ति । य इन्द्रियाणि जयति  
तमेव महान्तं मन्ये । धार्मिको महिमानमेति । यज्वानं बुधाः प्रश-  
शंसुः । अविवेकिनं युवानं गर्भोऽभिनिश्रियते । राजानं परितोऽमात्या-  
स्तिष्ठन्ति । गृहस्था दण्डिनो भोजयामासुः । नागरिकं पन्थानं  
पृच्छति । देवा वेधसं प्रणेमुः । विद्वांसं सर्वे आद्रियन्ते । गरीयांसं को-  
ऽपि नाभिभवति । सुनिश्चला प्रकृतिः पुमांसं कदापि न परित्यजति ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिवम् । दिवो । दिवः । इमाम् । एनाम् । इमे । एने ।

स्वर्गं को । द्योनां स्वर्गो को । इमाः । एनाः ।

स्वर्गो को ।

याम् । ये । याः ।

चतस्रः ।

एताम् । एनाम् । एते । एने ।

ताम् । ते । ताः ।

एताः । एनाः ।

काम् । के । का ।

अमूम् । अमू । अमूः ।

धावम् । धावो । धावः ।

स्रजम् । स्रजौ । स्रजः । आपदम् । आपदौ । आपदः ।  
 त्विषम् । त्विषौ । त्विषः । अपः ।  
 गिरम् । गिरो । गिरः । दिशम् । दिशौ । दिशः ।  
 रवि=सूर्य । धार्मिक=धर्म करनेवाला ।

धातु ।

काश. प्रपूर्वक. भ्वा. आत्म. अक. भृ. जुहो. पर. सक. = धारण क. ।  
 = प्रकाश क. । लुङ् । अभार्षात् ।  
 णिच् । प्रकाशयति । (चर) उत्पूर्वक ।  
 घट्. भ्वा. पर. सक. = बोलना । णिच् । उच्चारयन्ति ।  
 कहना । तृ. भ्य. पर. सक. = तरना ।  
 घदन्ति । पार होना । तेरना ।  
 लिट् । ततार ।

संस्कृत धातु ।

यज्जाने दिवं गच्छन्ति । रविश्चतस्रो दिशः प्रकाशयति ।  
 विद्वांसः सत्यां वाचं घदन्ति । मालाकारः स्रजमकार्षात् । दीपस्त्वि-  
 षमभार्षात् । सधवो मधुरां गिरमुच्चारयन्ति । तृषितोऽपः पयो ।  
 धार्मिक आपदं ततार ।

इन संस्कृत धातुओं का हिन्दी में उल्था करो ।

इलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

धाः । धारी । धारि । इदम् । एनत् । इमे । एने ।  
 जल को । टोनों जलों को । इमानि । एनानि ।  
 जनों को । यत् । ये । यानि ।  
 चत्वारि । एतत् । एनत् । एते । एने ।  
 तत् । ते । तानि । एतानि । एनानि ।  
 किम् । के । कानि । अद् । अमू । अमूनि ।

धीमत् । धीमती । धीमन्ति । अहः । अहनी । अही ।

महत् । महती । महान्ति । अहानि ।

जगत् । जगती जगन्ति । पयः । पयसी । पयांसि ।

धाम । धामनी । धाम्नी । हविः । हविषी । हवीषि ।

धामानि । धनुः धनुषी धनुषी ।

कर्म । कर्मणी । कर्माणि ।

तत् शब्द से लेकर महत् शब्द पर्यन्त आठ शब्द शेष विभक्तियों में पुल्लिङ्ग के सदृश होते हैं और जगत् शब्द महत् शब्द के धामन् शब्द गरिमन् शब्द के कर्मन् शब्द यज्वन् शब्द के और पयस् शब्द वेधस् शब्द के तुल्य होते हैं ।

कांप ।

मानी=अभिमानी ।

धातु ।

(पा) भञ्ज्. रुधादि. पर. सक.=तोडना ।

पिबति । लिट् । बभञ्ज ।

(गप्र) अधिपूर्वक.=पाना । हु. जुहोत्या. पर. सक.=हुनना ।

जानना । होम क. ।

अधिगच्छन्ति । जुह्वति ।

संस्कृत वाक्य ।

माणवको वाः पिबति । विद्वानो धीमत् कुलं समाश्रयन्ते । परिश्रमिणो महद्गुणमधिगच्छन्ति । ईशो जगत् पालयति । मानिने निजं धाम कदापि न त्यजन्ति । बुधाः सत् कर्म कुर्वन्ति । निदाघोऽहर्षद्वैयति पयांसि वर्षन्त्यनिशं पयोदाः । ऋत्विजो हविर्जुह्वति । रामो धनुर्बभञ्ज ।

इन वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

## हिन्दी धार्य ।

सुयीष ने राम को मित्र बनाया । सञ्जन लोग पिता की पूजा करते हैं विष्णुमित्र भाई को उपदेश करता है । मुनि ने राम की पूजा की । पतिव्रता ( स्त्री ) पति को उपदेश करती है । विष्णु ने मुनी की पूजा की । वे उस को सञ्जन जानते हैं । उन्होंने पण्डित की पूजा की । याचक दाता के ( पास ) जाते हैं । सरस्वती ने ब्रह्मा को पति बनाया । दिलीप ने गौ की पूजा की ॥

विद्या बुद्धि को बढ़ाती है । इन्द्र स्वर्ग का पालन करता है । विष्णु ने घोर समुद्र से लक्ष्मी मांगी । धर्मशास्त्र जाननेवाला स्त्री का अनादर नहीं करता । गुआला धेनु से दूध दूहता है । रामदत्त लड़की को पढ़ाता है । यौष्म ऋतु छोटी नदियों को सुखाती है दुर्बुद्धि सकल सम्पत्ति का नाश करती है । सास बहू को धर्म सिखाती है । विष्णुमित्र बहन का आदर करता है । मदनमोहन दोनों भौंओं को फड़काता है । मलाह नाव खेवता है । विष्णुमित्र तीन विद्या पढ़ता है ॥

ज्ञानी सकल ( जगत ) को मिथ्या जानता है । मेघ पानी बरसता है । भैरों ने फूल का रस पीया । गुरु ज्ञान देता है । मैं और कुछ नहीं जानता । गोपी दही मयती है ॥

लक्ष्मण वन जाते हुए राम के पीछे गये । हमारे और तुम्हारे बीच में विष्णु हैं । मैं उसी को बड़ा जानता हूँ जो इन्द्रियों को जीतता है । गृहस्थों ने दण्डियों को भोजन कराया । मैं आप को जो सकल विद्याओं में निपुण हैं बृहस्पति जानता हूँ । देवताओं ने ब्रह्मा को प्रणाम किया । पण्डितों ने यज्ञ करानेवाले की प्रशंसा की । देवदत्त गौ दूहने के लिये दूहनेवाले को

बुलाता है। छोटे २ राजा चक्रवर्ती की आसरा लेते हैं। पण्डित का आदर सब करते हैं। प्रशान्त (पुरुष) का आदर कौन नहीं करता। धार्मिक (पुरुष) बड़ाई पाता है। अश्विनी तारुण्य (पुरुष) में गर्व प्रवेश करता है। यज्ञदत्त बैल से (खेत का) अन्न चराता है। ऋत्विक् लोग आग मथनेवाले को बुलाते हैं। उस ने चारो वेद पढ़े। यज्ञदत्त यहाड़ पर बैठा है। लक्ष्मी बुद्धिमान के पास रहती हैं। राजा की चारो ओर मन्त्री रहते हैं। नगर निवासी से राह पूछता है। स्थिर स्वभाव, पुरुष को कधी नहीं छोड़ता। श्रेष्ठ (पुरुष) का तिरस्कार कोई नहीं करता। पण्डित का आदर सब करते हैं ॥

माली ने माला बनाई। यज्ञ करनेवाले स्वर्ग जाते हैं। सज्जन मधुर वाणी बोलते हैं। सूर्य चारो दिशा प्रकाश करता है। दीपक ने कान्ति धारण की। पियासे ने पानी पीया। धार्मिक पुरुष विपत्ति के पार हुआ। पण्डित लोग सत्य वाणी बोलते हैं ॥

ईश्वर जगत का पालन करता है। मेघ निरन्तर जल बरसते हैं। पण्डित लोग बुद्धिमान फुल का आश्रयण करते हैं। मानी लोग अपने तेज को कधी नहीं छोड़ते। लड़का पानी पीता है। परिश्रमी (पुरुष) बहुत धन पाते हैं। ऋत्विक् लोग होम की वस्तु हुनते हैं। शीघ्र ऋतु दिन को बढ़ाती है। पण्डित लोग अच्छी काम करते हैं। राम ने धनुष तोड़ा ॥

इन हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो।

हिन्दी शब्द।

हिन्दी में द्वितीया विभक्ति से लेकर सप्तमी पर्यन्त सात विभक्तियों के एकवचनों में पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों प्रकार के शब्दों के अन्त स्वर जो के त्यों बने रहते हैं आयात् न उन में



कुछ धिक्कार होता है और न उन को कुछ आगम होता है । केवल आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के अन्त आकार को एकार होता है । और बहुवचनों में ह्रस्व अकारान्त और दीर्घ आकारान्त शब्दों के अन्त स्वरो को अनुनासिकओकार और ह्रस्व इकारान्त शब्दों के अन्त इकार के आगे यों और दीर्घ ईकारान्त शब्दों के अन्त ईकार को ह्रस्व इकार और उस के आगे यों और ह्रस्व उकारान्त शब्दों के अन्त उकार के आगे ओं और दीर्घ ऊकारान्त शब्दों के अन्त ऊकार को ह्रस्व उकार और उस के आगे ओं और एकारान्त और ओकारान्त शब्दों के अन्त स्वरो के आगे ओं होता है । केवल आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त आकार के आगे अनुनासिक ओं का आगम होता है उस को ओं नहीं होता । जैसे ॥

पुल्लिङ्ग ।

एकवच-  
 बालक को  
 लड़के को  
 मुनि को  
 माली को  
 माधु को  
 भालू को  
 चाये को  
 कोटो को

बहुवच-  
 बालकों को  
 लड़कों को  
 मुनियों को  
 मालियों को  
 माधुओं को  
 भालुओं को  
 चायेओं को  
 कोटोओं को

स्त्रीलिङ्ग ।

घात को  
 गेया को

घातों को  
 गेयाओं को

तिथि को  
नदी को  
धेनु को  
बहू को  
सरसों को

तिथियों को  
नदियों को  
धेनुओं को  
बहुओं को  
सरसोंओं को

पूर्व लिखित चन्द्रमा राजा इत्यादि संस्कृत के और काका, बुधुआ इत्यादि हिन्दी के शब्दों के रूप द्वितीया आदि सभी पर्यन्त सात विभक्तियों के दोनों धचनों में आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के समान होते हैं ॥

हिन्दी के कोई २ वैयाकरण भूतकाल के छ भेद मानते हैं हेतुहेतुमद्भूत, अपूर्णभूत, सामान्यभूत, पूर्णभूत, आसन्नभूत, और सन्दिग्धभूत ।

हेतुहे. ईधन पाता तो भात पकाता । एधश्चेदलप्स्यत  
श्रोदनमपक्ष्यत् ।

अपू. भात पकाता था । श्रोदनं पक्षन्नभूत् ।

सामा. भात पकाया । श्रोदनमपणीत् ।

पूर्ण. भात पकाया था । श्रोदनं पक्षयानभूत् ।

आस. भात पकाया है । श्रोदनं पक्षयानस्ति ।

सन्दि. भात पकाया हो । कदाचिदश्रोदनं पक्षयान् स्यात् ।

तीसरा पाठ ।

करण कारक ।

करण उसे कहते हैं जिस के व्यापार अर्थात् क्रिया के अनन्तर ही कर्ता की क्रिया का फल सिद्ध हो । जैसे । व्याधो घाणेन मृगं हन्ति । व्याध बाण से मृग को मारता है । यहां व्याध के धनुष खींचने आदि क्रिया से बाण में ऐसी गतिरूप क्रिया उत्पन्न

होती है कि उस के अनन्तर ही कर्ता की क्रिया का फल अर्थात् मृग का मरना सिद्ध होता है ।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में कर्ण के आगे तृतीया विभक्ति आती है । संस्कृत में तृतीया विभक्ति के प्राय "एन" आदि चिह्न हैं और हिन्दी में उस का "से" चिह्न है । जैसे ऊपर के उदाहरण में संस्कृत में बाण शब्द के अन्त में "एन" चिह्न है और हिन्दी में उसी शब्द के आगे "से" चिह्न है । कहीं-२ "करके" "के द्वारा" इत्यादि चिह्न भी आते हैं । संस्कृत में अनुक्त कर्ता के आगे भी तृतीया विभक्ति आती है ।

संस्कृत में तृतीया विभक्ति ।

एकव.	द्विव.	बहुव.
टा	भ्याम्	भिसु

संस्कृत में भविष्य अनद्यतन काल । लुट् लकार । हिन्दी में भविष्य काल ।

लुट् लकार के प्रथम पुरुषमज्ञक प्रत्यय के स्थान में डा आदि आदेश ।

एकव.	द्विव.	बहुव.
डा	रे	रस्
(अम् और भू)		

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकवच.	भविता	भवितासि	भवितास्मि
एकवच.	होयेगा	होयेगा	होयेगा
एकवच.	होयेगी	होयेगी	होयेगी
द्विवच.	भवितारे।	भवितास्यः	भवितास्यः
बहुवच.	होयेगे	होयेगे	होयेगे

बहुवच-	होवेंगी	होगी	होवेंगी
बहुवच-	भवितारः	भवितास्य	भवितस्मः
बहुवच-	होवेंगे	होगे	होवेंगे
बहुवच-	होवेंगी	होगी	होवेंगी

लुट् लकार में भो असु और भू दोनों धातुओं की क्रियाओं के रूप एकही से होते हैं। परन्तु इन प्रत्येक क्रियाओं के नीचे जो हिन्दी की दो ही दो क्रिया लिखी गई हैं इस का कारण यह है कि अस धातु की वर्तमानकालिक और भूतकालिक क्रियाओं को छोड़ कर इतर सकल क्रियाओं के बदले में हिन्दी की वेई क्रिया जोड़ी जाती है जो भू धातु की क्रियाओं के बदले में आती है।

संस्कृत वाक्य ।

पुंलिङ्ग ।

स भविता	त्वं भवितासि	अहं भवितास्मि
ते भवितारौ	युवां भवितास्यः	आयां भवितास्यः
ते भवितारः	यूयं भवितास्य	वयं भवितास्मः

स्त्रीलिङ्ग ।

सा भविता	त्वं भवितासि	अहं भवितास्मि
ते भवितारौ	युवां भवितास्यः	आयां भवितास्यः
ता भवितारः	यूयं भवितास्य	वयं भवितास्मः

नपुंसक लिङ्ग ।

तद् भविता	त्वं भवितासि	अहं भवितास्मि
ते भवितारौ	युवां भवितास्यः	आयां भवितास्यः
तानि भवितारः	यूयं भवितास्य	वयं भवितास्मः

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

( कृ )

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकव.	कर्ता	कर्तासि	कर्तास्मि
एकव.	करेगा	करेगा	करुंगा
एकव.	करेगी	करेगी	करुंगी
द्विव.	कर्तारौ	कर्तास्यः	कर्तास्यः
बहुव.	करेंगे	करोगे	करेंगे
बहुव.	करेंगी	करोगी	करेंगी
बहुव.	कर्तारः	कर्तास्य	कर्तास्मः
बहुव.	करेंगे	करोगे	करेंगे
बहुव.	करेंगी	करोगी	करेंगी

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

यह करेगा	तू करेगा	मैं करुंगा
वे दोनों करेंगे	तुम दोनों करोगे	हम दोनों करेंगे
वे करेंगे	तुम करोगे	हम करेंगे

स्त्रीलिङ्ग ।

यह करेगी	तू करेगी	मैं करुंगी
वे दोनों करेंगी	तुम दोनों करोगी	हम दोनों करेंगी
वे करेंगी	तुम करोगी	हम करेंगी

नपुंसक के बदले में पुल्लिङ्ग के समान जानो ।

इन हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो ।

( एच )

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकव.	रक्षिता	रक्षितासे	रक्षिताहे

एकव.	बढ़ेगा	बढ़ेगा	बढ़ूंगा
एकव.	बढ़ेगी	बढ़ेगी	बढ़ूंगी
द्विव.	एधितारौ	एधितासाथे	एधितास्वहे
बहुव.	बढ़ेंगे	बढ़ेंगे	बढ़ेंगे
बहुव.	बढ़ेंगी	बढ़ेंगी	बढ़ेंगी
द्विव.	एधितारः	एधिताध्ये	एधितास्महे
बहुव.	बढ़ेंगे	बढ़ेंगे	बढ़ेंगे
बहुव.	बढ़ेंगी	बढ़ेंगी	बढ़ेंगी

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स एधिता	त्वमेधितासे	अहमेधिताहे
तावेधितारौ	युशमेधितासाथे	आशमेधितास्वहे
त एधितारः	यूयमेधिताध्ये	वयमेधितास्महे

स्त्रीलिङ्ग ।

सैधिता	त्वमेधितासे	अहमेधिताहे
ते एधितारौ	युशमेधितासाथे	आशमेधितास्वहे
ता एधितारः	यूयमेधिताध्ये	वयमेधितास्महे

नपुंसक लिङ्ग ।

तदेधिता	त्वमेधितासे	अहमेधिताहे
ते एधितारौ	युशमेधितासाथे	आशमेधितास्वहे
तान्येधितारः	यूयमेधिताध्ये	वयमेधितास्महे

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

संस्कृत में सामान्य भविष्यकाल । लट् लकार । हिन्दी में

भविष्यकाल ।

( अस् और भू )

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकव.	भविष्यति	भविष्यसि	भविष्यामि
द्विव.	भविष्यतः	भविष्यथः	भविष्यावः
बहुव.	भविष्यन्ति	भविष्यथ	भविष्यामः

लट् लकार में भी अस् और भू दोनों धातुओं की क्रियाओं के रूप एकही से होते हैं ।

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में हिन्दी की वही दो २ क्रिया आती हैं जो इन धातुओं के लुट् लकार की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं ॥

संस्कृत वाक्य ।

पुस्तिक ।

स भविष्यति	त्वं भविष्यसि	अहं भविष्यामि
ते भविष्यतः	युष्मं भविष्यथः	आशं भविष्यावः
ते भविष्यन्ति	यूयं भविष्यथः	वयं भविष्यामः

स्त्रीलिङ्ग ।

सा भविष्यति	त्वं भविष्यसि	अहं भविष्यामि
ते भविष्यतः	युष्मं भविष्यथः	आशं भविष्यावः
ता भविष्यन्ति	यूयं भविष्यथ	वयं भविष्यामः

नपुंसकलिङ्ग ।

तद् भविष्यति	त्वं भविष्यसि	अहं भविष्यामि
ते भविष्यतः	युष्मं भविष्यथः	आशं भविष्यावः
तानि भविष्यन्ति	यूयं भविष्यथ	वयं भविष्यामः

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

( कु )

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकव.	करिष्यति	करिष्यसि	करिष्यामि

द्विप.	करिष्यतः	करिष्यथः	करिष्याथः
बहुप.	करिष्यन्ति	करिष्यथ	करिष्यामः ।

इन संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की वैसे दो-एक क्रिया आती हैं जो इस धातु के लुट लकार की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं :

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

बह करेगा । इत्यादि । पूर्वतः ।

(पद्य)

	एकपु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकप.	यधिष्यति	यधिष्यसे	यधिष्ये
द्विप.	यधिष्येते	यधिष्येथे	यधिष्याथहे
बहुप.	यधिष्यन्ते	यधिष्यथ्वे	यधिष्यामहे

इन संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की उन्हीं क्रियाओं को जानो जो इस धातु के लट लकार की क्रियाओं के बदले में लिखी गई हैं ।

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स यधिष्यसे	त्वमेधिष्यसे	अहमेधिष्ये
तां यधिष्येते	युवामेधिष्येथे	आवामेधिष्याथहे
त यधिष्यन्ते	युममेधिष्यथ्वे	वयमेधिष्यामहे

स्त्रीलिङ्ग ।

सेधिष्यते	त्वमेधिष्यसे	अहमेधिष्ये
ते यधिष्येते	युवामेधिष्येथे	आवामेधिष्याथहे
ता यधिष्यन्ते	युममेधिष्यथ्वे	वयमेधिष्यामहे



तपुंमकलिङ्ग ।

तद्वेधिष्यते

त्वमेधिष्यसे

अहमेधिष्ये

तेऽधिष्येते

युषामेधिष्येथे

आश्रामेधिष्यावहे

तान्येधिष्यन्ते

यूयमेधिष्यध्वे

वयमेधिष्यामहे

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

अजन्तपुल्लिङ्ग शब्द ।

रामेण । रामाभ्याम् । रामैः । सख्या । सखिभ्याम् । सखिभिः ।

राम से । दोनों रामों से । कतिभिः ।

रामों से ।

सुधिया । सुधीभ्याम् । सुधीभिः ।

सर्वेण । सर्वाभ्याम् । सर्वैः । साधुना । साधुभ्याम् । साधुभिः ।

त्रिभिः ।

स्वयम्भुवा । स्वयम्भूभ्याम् ।

पूर्वेण । पूर्वाभ्याम् । पूर्वैः । स्वयम्भूभिः ।

मुनिना । मुनिभ्याम् । मुनिभिः । दाचा । दातृभ्याम् । दातृभिः ।

पत्या । पतिभ्याम् । पतिभिः । गवा । गोभ्याम् । गोभिः ।

कोष ।

वाली=एक खानर का नाम । तन्दिनी=वसिष्ठ की धेनु का नाम ।

संस्कृत वाक्य ।

रामेण वाणेन हतो वाली । मुनिभिः पूजितो रामो दण्ड-  
कारण्यशनिभिः । पत्या सङ्गता सीता । सुयीयेण सख्या साह्वै  
रामः समुद्रतटं जगाम । सुधीभिः शोभते मभा । दृष्टेः  
साधुभिः कृतकृत्यो भविष्यामि । स्वयम्भुवा कृता सृष्टिः । दाचा  
समः पुण्यवान् कोऽपि नास्ति । द्वितीयः नन्दिन्या गवा सह  
वनं जगाम ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

प्रकृत्यादि गण में पढ़े हुए शब्दों के आगे तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। प्रकृत्या चाहः। स्वभाव से सुन्दर। इत्यादि।

“दिव” (खेलना) धातु के करण के आगे द्वितीया और तृतीया दोनों विभक्तियां क्रम से आती हैं। जैसे। अक्षेर्दीव्यति। अक्षान् दीव्यति। पासों से खेलता है। यहां संस्कृत में दोनों विभक्तियां क्रम से आई हैं ॥

यदि फल का लाभ सूचित हो तो काल और पथ के अत्यन्त संयोग में उन के आगे तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। अह्ना क्रोधेन वा गङ्गापृकमधीतम्। एक दिन वा एक कोस में गङ्गापृक पड़ा। यहां पढ़ना क्रिया के साथ काल और पथ का अत्यन्त संयोग है।

जहां फल की प्राप्ति नहीं रहती वहां तृतीया नहीं होती। जैसे। मासमधीतं नायातम्। महीने भर पड़ा नहीं आया। यहां संस्कृत में तृतीया नहीं हुई ॥

सह शब्द और उसके समान अर्थवाले अन्य शब्दों के योग में अप्रधान (कर्ता आदि) के आगे तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। पुषेण सहागतः पिता। पुष के साथ पिता आया। यहां संस्कृत में पुष शब्द के आगे तृतीया विभक्ति आई है। क्योंकि पुष आगमन क्रिया का अप्रधान कर्ता है। ऐसेही साकम्, सार्द्धम्, समम्, इत्यादि शब्दों के योग में भी जानो। विना हीन इत्यादि शब्दों के योग में भी तृतीया होती है ॥

जिस किसी फूटे टूटे वा टेढ़े मेढ़े अङ्ग से अङ्गी में धिकार पाया जाय उस अङ्गवाचक शब्द के आगे तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। अक्ष्या काणः। आंख का काना। पादेन खञ्जः। पांश का लंगड़ा। यहां संस्कृत में तृतीया हुई है।

यदि कोई पदार्थ किसी विशेष अर्थात् भेद को प्राप्त हुआ हो और वह भेद किसी दूसरे पदार्थ से जाना जाय तो इस दूसरे पदार्थ के वाचक शब्द के आगे तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। जटाभिस्तापसः। जटाओं से तपस्वी। अर्थात् इस का तपस्वीपन इस की जटाओं से जाना जाता है ॥

हेतु अर्थात् कारणवाचक शब्द के आगे तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। दण्डेन घटः। डंडे से (बना हुआ) घड़ा। पुण्येन दृष्टे हरिः। पुण्य से देखे गये हरि ॥

जो केवल क्रिया मात्र का कारण होता है और जिस में आप भी क्रिया रहती है उसे कारण कहते हैं। और जो गुण क्रिया और द्रव्य इन तीनों का कारण होता है और जिस में कोई क्रिया रहे या न रहे उसे हेतु कहते हैं ॥

फल भी हेतु होता है। जैसे। अध्ययनेन वसति। पढ़ने के लिये बसता है। यहां संस्कृत में तृतीया हुई ॥

कहीं २ ऊपर से समझी हुई क्रिया भी कारक विभक्ति का निमित्त होती है। जैसे। अलं श्रमेण। परिश्रम से मत। अर्थात् तुम्हारे परिश्रम से कुछ होना नहीं है इस लिये परिश्रम मत करो। यहां ऊपर से समझी हुई "होना" क्रिया का परिश्रम कारण है इस लिये उस के आगे तृतीया विभक्ति आई है ॥

जहां वाक्य से निषिद्ध आचार सूचित हो वहां "दाण" (देना) धातु के प्रयोग में चतुर्थी के अर्थ में तृतीया होती है। जैसे। दास्या संयच्छते कामुकः। कामी (पुरुष) दासी को देता है। यहां संस्कृत में दासी शब्द के आगे चतुर्थी के बदले में तृतीया विभक्ति हुई है।

जहां निषिद्ध आचार नहीं सूचित होता वहां तृतीया नहीं किन्तु चतुर्थी होती है। जैसे भार्यायै संयच्छति। अपनी स्त्री को देता है।

अनन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

रमया । रमाभ्यम् । रमाभिः । स्त्रिया । स्त्रीभ्याम् । स्त्रीभिः ।

रमा से । दोनेां रमाओं से । धेन्वा । धेनुभ्याम् । धेनुभिः ।

रमाओं से । वध्वा । वधूभ्याम् । वधूभिः ।

सर्वया । सर्वाभ्याम् । सर्वाभिः । भूवा । भूभ्याम् । भूभिः ।

तिष्ठभिः । दुहिषा । दुहितृभ्याम् । दुहितृ-

मत्या । मतिभ्याम् । मतिभिः । मिः ।

नद्या । नदीभ्याम् । नदीभिः । द्यावा । द्योभ्याम् । द्योभिः ।

श्रिया । श्रीभ्याम् । श्रीभिः । नावा । नौभ्याम् । नौभिः ।

काव ।

कन्दर्पे=कामेदेश ।

धातु ।

जि. भ्वा. पर. द्विक.=जीतना । सूच. चुरा. उभ. स.=जनाना ।

जयति ।

सूचित क. ।

मचि. चुरा. आत्म. सक.=

सूचयन्ति ।

चुपके २ धतियाना ।

मन्त्रयते ।

संस्कृत वाक्य ।

रमया सेवितो विष्णुः । तिष्ठभिः शक्तिभिः शोभन्ते राजा-  
नः । मत्या प्रख्यातो यज्ञदत्तः । नदीभिः सिक्तो देशः । श्रिया विभू-  
षितं गृहम् । स्त्रीभिस्त्रीन् लोकान् जयति कन्दर्पः । धेन्वा खाद-  
यति घातं गोपालः । वधूभिर्मन्त्रयते श्वश्रूः । भूवा-सूचयन्त्यथै  
चतुराः । दुहिषा पविषं कुलम् । द्यावा गच्छन्ति पक्षिणः । नाथा-  
तरन्ति नदीं लोकाः ॥

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

ज्ञानेन । ज्ञानाभ्याम् । ज्ञानैः । धारिणा । धारिभ्याम् । धारिभिः ।

ज्ञान से । दोनों ज्ञानों से । दधा । दधिभ्याम् । दधिभिः ।

ज्ञानों से । मधुना । मधुभ्याम् । मधुभिः ।

धातु ।

शुचः द्विवाः परः अकः शुद्ध हो ।

शुद्धति ।

संस्कृत वाक्य ।

ज्ञानेन संसारं तरन्ति ज्ञानिनः । न धारिणा शुद्धति चा-  
न्तरात्मा । दधा मिश्रित श्रादनः । मधुना मत्तो भृङ्गः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

इलन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

दूहा । धुभ्याम् । धुभिः । तुम्ह से तुम दोनों से ।

दूहने वाले से । दोनों दूहने तुम से ।

वालों से । दूहने वालों से । मया । आवाभ्याम् । अस्माभिः ।

अनदुहा । अनदुद्भ्याम् । अन-मुह से । हम दोनों से । हम से ।

दुद्धिः । केन । काभ्याम् । कैः ।

वतुभिः । किस से । किन दोनों से ।

पशुभिः । किन से ।

षड्भिः । अनेन । एनेन । आभ्याम् ।

अष्टभिः । अष्टाभिः । षभिः ।

तेन । ताभ्याम् । तैः । इस से । इन दोनों से । इन से ।

उस से । उन दोनों से । येन । याभ्याम् । यैः ।

उन से । उन्हीं से । जिस से । जिन दोनों से ।

त्वया । युवाभ्याम् । युष्माभिः । जिन से ।

एतेन । एनेन । एताभ्याम् । एतैः । प्राचा । प्राग्भ्याम् । प्राग्भिः ।  
 इस से । इन दोनों से । इन से । प्राज्ञा । प्राह्भ्याम् । प्राह्भिः ।  
 अमुना । अमूभ्याम् । अमीभिः । उदीचा । उदभ्याम् । उदभिः ।  
 इस से । इन दोनों से । इन से । महिम्ना । महिमभ्याम् । महि-  
 लस से । उन दोनों से उन से । मभिः\* ।

सम्राजा । सम्राह्भ्याम् । यज्वना । यज्वभ्याम् । यज्वभिः ।

सम्राड्विः ।

यूना । युवभ्याम् । युवभिः ।

भूमृता । भूमृद्भ्याम् । भूमृद्विः । राक्षा । राजभ्याम् । राजभिः ।

धीमता । धीमद्भ्याम् । दण्डिना । दण्डिभ्याम् ।

धीमद्विः ।

दण्डिभिः ।

गच्छता । गच्छद्भ्याम् । पथा । पथिभ्याम् । पथिभिः ।

गच्छद्विः ।

वेधसा । वेधोभ्याम् । वेधोभिः ।

प्रशामा । प्रशान्भ्याम् । प्रशान्भिः । विटुपा । विट्वद्भ्याम् । विट्वद्विः ।

युधा । भुद्भ्याम् । भुद्विः । गरीयसा । गरीयोभ्याम् । गरी-

अग्निमया । अग्निमद्भ्याम् । योभिः ।

अग्निमद्विः ।

पुंसा । पुंभ्याम् । पुंभिः ।

धातु ।

शक. दिक्. उभ. — सकना । कर्म में सट् । शक्यते ।

संस्कृत वाक्य ।

दुहा दोहयति गां रामदत्तः । अनहुद्विहारयति यथान्  
 त्रिष्णुमिभः । सम्राजा सह विरोधो न कार्यः । भूमृद्विभूमृद्वि  
 मही । धीमता शोभते कुलम् । सीतापि गच्छता पत्या गमिष्यति  
 यनं महत् । अग्निमयाधिष्ठिता यज्ञशाला । यज्वना जितः स्वर्गः ।  
 यूना सर्वे कर्तुं शक्यते । दण्डिभिरध्युषिता कागी । राजभिः  
 पश्यते मही । विन्मीरुणैः पथिभिः शोभते राजधानी । इत्यादि ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में रूपांतर ।

चलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिवा । द्युभ्याम् । द्युभिः ।      शतया । शनया । शताभ्याम् ।  
 आकाश से । दोनों आकाशों      यताभिः ।  
 से । आकाशों से ।      अमुया । अमूभ्याम् । अमूभिः ।  
 चतसृभिः ।      धाचा । धाम्भ्याम् । धाग्भिः ।  
 तया । ताभ्याम् । ताभिः ।      सजा । स्रग्भ्याम् । स्रग्भिः ।  
 कया । काभ्याम् । काभिः ।      त्विषा । त्विड्भ्याम् । त्विड्भिः ।  
 अनया । शनया । आभ्याम् ।      गिरा । गीर्भ्याम् । गीर्भिः ।  
 आभिः ।      आपदा । आपद्भ्याम् । आपद्भिः ।  
 यया । याभ्याम् । याभिः ।      अद्भिः ।  
 दिशा । दिग्भ्याम् । दिग्भिः ।

कायः ।

शरत् ऋतु अर्थात् कुआर और वाग्मी अच्छे बोलनेवाले-  
 कातिक ।

घातु ।

द्युत-विपूर्यक-भ्वा-आत्म-अक-स्तु-अदा-उभ-सक-स्तुति कः ।  
 चमकना ।      लिट् । तुष्टुवुः ।  
 विद्योतते ।

संस्कृत वाक्ये ।

निर्मलया दिवा शोभते शरत् । चतसृभिरवस्थाभिरा-  
 क्रान्ता मानवी तनुः । धाचा जयन्ति धाम्मिनः । सजा विभूषितो  
 भोगी । त्विषा विद्योतते रविः । देवा यथार्याभिर्गोभिर्धिष्युं तुष्टुवुः ।  
 आपद्भिः पीडितः साधुः । अद्भिस्तृप्तः । प्राच्या दिशा सङ्गतो रविः ।  
 एन संस्कृत वाक्ये का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

घारा । वार्याम् । वारिभिः । अह्रा । अहोभ्याम् । अहोभिः ।  
जलसे । दोनां जलोसे । जलोसे । हविषा । हविर्भ्याम् । हविर्भिः ।  
धनुर्भिः । धनुषा । धनुर्भ्याम् । धनुर्भिः ।

कोप ।

धनञ्जय=अर्जुन

धातु :

सिध्. तुदा. उभ. स. =सीचना । हन्. अदा. पर. मुक्. =मारना ।  
सिञ्चन्ति । लिट् । जघान ।

तृप्. दिधा. पर. अक. =तृप् हो. ।

तृप्यन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

मेघा वारिर्महो सिञ्चन्ति । अहोभिः सह तापो ववृधे । हविषा  
तृप्यन्ति देवाः । धनञ्जयो धनुषा शिवं जघान ॥

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हिन्दी वाक्य ।

सभा की शोभा पण्डितों से होनी है । राम अपने मित्र  
सुग्रीव के साथ समुद्र तीर गये । मैं साधुओं के दर्शन से कृतार्थ  
होऊंगा । राम ने बाण से बाली को मारा । ब्रह्मा की वनाई सृष्टि ।  
दण्डकारण्यनिवासी मुनियों ने राम की पूजा की । दानी के  
समान पुण्यात्मा कोई नहीं है । सीता (अपने) शक्ति से मिली ।  
(राजा) दिलीप नन्दिनी गौ के साथ बन गये ।

गुआला धेनु को घास खिलाता है । नदियों से सींचा  
हुआ देश । पक्षी आकाश में गमन करते हैं । कामदेव स्त्रियों  
के द्वारा तीन लोक जीतता है । लक्ष्मी से सेवित विष्णु ।  
सास बहुओं के साथ चुपके २ बात चीत करती है । तीन शक्तियों



संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में सम्प्रदान के आगे चतुर्थी विभक्ति आती है। संस्कृत में चतुर्थी विभक्ति के बहुधा "य" इत्यादि चिह्न रहते हैं। हिन्दी में उस का "को" चिह्न है। जैसे उक्त उदाहरण में संस्कृत में विप्र शब्द के आगे "य" चिह्न है और हिन्दी में ब्राह्मण शब्द के आगे "को" चिह्न है। बहुत स्थानों में "के लिये" "के निमित्त" इत्यादि चिह्न भी आते हैं।

संस्कृत में चतुर्थी विभक्ति ।

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

हे

भ्याम्

भ्यम्

संस्कृत में विधि आदि अर्थ । लिङ् लकार । हिन्दी में विधि और सम्भावना अर्थ ।

विधि आदि अर्थ ये हैं-विधि, निमन्त्रण, आमन्त्रण, सम्प्रश्न और प्रार्थना ।

विधि शब्द का अर्थ है प्रेरणा । अर्थात् चाकर आदि नीच व्यक्ति को किसी काम में लगाना । जैसे । स कटं कुर्यात् । दह घटाई बनाये । निमन्त्रण शब्द का अर्थ है नियोग करना । अर्थात् श्राद्ध भोजन आदि आवश्यक कामों में दौहित्र अर्थात् नाती आदि को प्रयुक्त करना । जैसे । इह भवान् भुञ्जीत । आप यहां भोजन करें । आमन्त्रण शब्द का अर्थ है यथेच्छाचार में अनुमति देना । जैसे । इह भवानामीत । आप चाहें यहां बैठें । अधीष्ट शब्द का अर्थ है आदर पूर्वक प्रेरणा । जैसे । पुत्रमध्या-पयेद्गुशान् । आप (मेरे) पुत्र को पढ़ावें । सम्प्रश्न शब्द का अर्थ है किसी बात का निर्णय करना । जैसे । किं नु यत्तु भो व्याक-रणमधीयीष्य उत तर्कम् । क्या मैं व्याकरण पढ़ूँ अथवा न्याय-शास्त्र । प्रार्थना शब्द का अर्थ है याचना अर्थात् मांगना । जैसे । भो भोजनं लभेय । मैं भोजन पाऊँ ।

( अस् )

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकप.	स्यात्	स्याः	स्याम्
एकप.	होवे	हो	होळ
द्विप.	स्याताम्	स्यातम्	स्याथ
बहुप.	होवें	हो	होवें
बहुप.	स्युः	स्यात्	स्याम
बहुप.	होवें	हो	होवें

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स स्यात्	त्वं स्याः	अहं स्याम्
तौ स्याताम्	युवां स्यातम्	आपो स्याम
ते स्युः	यूयं स्यात्	वयं स्याम
	स्त्रीलिङ्ग	

सा स्यात् । ते स्याताम् । ताः स्युः । मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के तुल्य जानो ।

नपुंसकलिङ्ग ।

तत् स्यात् । ते स्याताम् । तानि स्युः । मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्गवत् ।

ऊपर लिखे हुये तीनों लिङ्गों के वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

( भू )

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकप.	भवेत्	भवेः	भवेयम्
द्विप.	भवेताम्	भवेतम्	भवेव
बहुप.	भवेयुः	भवेत	भवेम

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के नीचे भी हिन्दी की उन्हीं क्रियाओं को जानो जो इस लकार में "अस" धातु की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं ।

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

वह होवे	तू हो	मैं होऊँ
ये दोनों होवें	तुम दोनों हो	हम दोनों होवें
वे होवें	तुम हो	हम होवें

यैसे ही स्त्रीलिङ्ग में, और नपुंसकलिङ्ग के बदले में भी जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो ।

( कृ )

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकव.	कुर्यात्	कुर्याः	कुर्याम्
एकव.	करे	करे	करे
द्विव.	कुर्याताम्	कुर्याताम्	कुर्याव
बहुव.	करें	करो	करें
बहुव.	कुर्युः	कुर्यात्	कुर्याम
बहुव.	करें	करो	करें

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

म कुर्यात्	त्वं कुर्याः	अहं कुर्याम्
तौ कुर्याताम्	युवां कुर्याताम्	आवां कुर्याव
ते कुर्युः	मूयं कुर्यात्	वयं कुर्याम

स्त्रीलिङ्ग ।

मा कुर्यात् । ते कुर्याताम् । ताः कुर्युः । मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के समान जानो ।

नपुंसकलिङ्ग ।

तत् कुर्यात् । ते कुर्याताम् । तानि कुर्युः । मध्यम और  
उत्तम पुरुष में पुलिङ्ग के समान जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

( एध )

	प्रथम पु०	मध्यम पु०	उत्तम पु०
एकव०	एधेत	एधेयाः	एधेय
एकव०	बढे	बढे	बढूं
द्विव०	एधेयाताम्	एधेयाथाम्	एधेयहि
बहुव०	बढें	बढो	बढें
बहुव०	एधेरन्	एधेध्वम्	एधेर्माह
बहुव०	बढें	बढो	बढें

हिन्दी वाक्य ।

पुलिङ्ग ।

यह बढे	तू बढे	मैं बढूं
वे दोनों बढें	तुम दोनों बढो	हम दोनों बढें
वे बढें	तुम बढो	हम बढें

ऐसे ही स्त्रीलिङ्ग में, और नपुंसकलिङ्ग के बदले में भी जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो ।

संस्कृत में आशिष अर्थ । लिङ् लकार । हिन्दी में

विधि और सम्भाषना अर्थ ।

( अस और भू )

	प्रथम पु०	मध्यम पु०	उत्तम पु०
एकव०	भूयात्	भूयाः	भूयासम्
द्विव०	भूयास्ताम्	भूयास्ताम्	भूयास्व
बहुव०	भूयासुः	भूयास्त	भूयास्व

इस लकार में भी अस और भू दोनों धातुओं की क्रियाओं के रूप तुल्य ही होते हैं । इन प्रत्येक क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की उन्हीं क्रियाओं को जानो जो विधि लिह् में अस धातु की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं । विशेष इतना है कि वाक्य रचना में वाक्य के पूर्ण "ईश्वर करे" इतना अधिक जोड़ दिया जाता है । जैसे । स सुखी भूयात् । ईश्वर करे वह सुखी होवे । इत्यादि ।

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स भूयात्	त्वं भूयाः	अहं भूयासम्
तौ भूयास्ताम्	युवां भूयास्तम्	आवां भूयास्व
ते भूयासुः	यूयं भूयास्त	वयं भूयास्म
	स्त्रीलिङ्ग ।	

सा भूयात् । ते भूयास्ताम् । ता भूयासुः । मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के समान वाक्य होते हैं ।

नपुंसकलिङ्ग ।

तद् भूयात् । ते भूयास्ताम् । तानि भूयासुः । मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के समान जानो ।

प्रत्येक वाक्यों में "ईश्वर करे" यह वाक्य जोड़कर हिन्दी में उल्थाकरो ।

( छ )

प्रथम पु०	मध्यम पु०	उत्तम पु०
एकव० क्रियात्	क्रियाः	क्रियासम्
द्विव० क्रियास्ताम्	क्रियास्ताम्	क्रियास्व
बहुव० क्रियासुः	क्रियास्त	क्रियास्म

इन प्रत्येक क्रियाओं के नीचे भी उन्हीं हिन्दी क्रियाओं को जोड़ो जो इस धातु के विधि लिह् की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं । और विशेष पूर्णवत् जानो ।

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

यह करे	तू करे	मैं कहूँ
वे दोनों करें	तुम दोनों करो	हम दोनों करें
वे करें	तुम करो	हम करें

इन प्रत्येक वाक्यों के आदि में ईश्वर करे यह वाक्य जोड़ दो ।

ऐसे ही स्त्रीलिङ्ग में, और नपुंसकलिङ्ग के बदले में भी जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो ।

( एध )

प्रथम पु०	मध्यम पु०	उत्तम पु०
एकव० एधिपीठ्	एधिपीष्टाः	एधिपीथ
द्विव० एधिपीयास्ताम्	एधिपीयास्याम्	एधिपीवहि
बहुव० एधिपीरन्	एधिपीध्वम्	एधिपीमहि

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की वही क्रिया आती हैं जो इस धातु के विधि लिङ् की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं । और विशेष पूर्ववत् जानो ।

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स एधिपीठ्	त्वमेधिपीष्टाः	अहमेधिपीथ
तावेधिपीयास्ताम्	युवामेधिपीयास्याम्	आवामेधिपीवहि
त एधिपीरन्	यूयमेधिपीध्वम्	वयमेधिपीमहि

स्त्रीलिङ्ग ।

सैधिपीठ् । तै एधिपीयास्ताम् । ता एधिपीरन् । मध्यम और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के तुल्य वाक्या जानो ।

नपुंसकलिङ्ग ।

तदेधिपीठ । ते शधिपीयास्ताम् । तान्येधिपीरन् । मध्यम  
और उत्तम पुरुष में पुल्लिङ्ग के समान जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

संस्कृत में पूर्वोक्त विधि आदि अर्थ । लोट् लकार ।  
हिन्दी में विधि और सम्भावना अर्थ ।

( अस )

	प्रथम पु०	मध्यम पु०	उत्तम पु०
एकव०	अस्तु	शधि	असानि
द्विव०	स्ताम्	स्ताम्	असाथ
बहुव०	सन्तु	स्त	असाम

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के नीचे भी उन्हीं हिन्दी  
क्रियाओं को जानो जो इस धातु के विधि लिङ् की क्रियाओं के  
नीचे लिखी गई हैं ।

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

सोऽस्तु	त्वमेधि	अहमसानि
ते स्ताम्	युयां स्ताम्	आधामसाथ
ते सन्तु	यूयं स्त	षयमसाम

स्त्रीलिङ्ग ।

सास्तु । ते स्ताम् । ताः सन्तु । मध्यम और उत्तम पुरुष  
में पुल्लिङ्ग के समान जानो ।

नपुंसकलिङ्ग ।

तदस्तु । ते स्ताम् । तानि सन्तु । मध्यम और उत्तम  
पुरुष में पुल्लिङ्ग के तुल्य जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

आशिष अर्थ के लोट् लकार में इस धातु की सकल क्रियाओं के रूप विधि अर्थ के लोट् लकार की क्रियाओं के रूपों के तुल्य होते हैं। केवल प्रथम और मध्यम पुरुष के एकवचन में “स्तात्” यह रूप विकल्प करके होता है।

( भू )

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकव.	भवतु	भव	भवानि
द्विव.	भवताम्	भवतम्	मवाव
बहुव.	भवन्तु	भवत	भवाम

इन प्रत्येक संस्कृत क्रियाओं के बदले में भी हिन्दी की वेई क्रिया आती है जो “अस” धातु के विधि लिङ् की क्रियाओं के नीचे लिखी हुई हैं।

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

पह होवे । इत्यादि । इस धातु के विधि लिङ् में लिखे वाक्यों के समान जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो ।

आशिष अर्थ के लोट् लकार में इस धातु की सकल क्रियाओं के रूप विधि अर्थ के लोट् लकार की क्रियाओं के रूपों के तुल्य होते हैं केवल प्रथम और मध्यम पुरुष के एकवचन में एक पद में “भवतात्” यह रूप होता है।

( कृ )

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकव.	करोतु	कुरु	करवाणि
द्विव.	कुरुताम्	कुरुतम्	करवाव
बहुव.	कर्वन्तु	कुरुत	करवाम



इन प्रत्येक क्रियाओं के बदले में भी उन्हीं हिन्दी क्रियाओं को जानो जो इस धातु के विधि लिङ् में लिखी गई हैं ।

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स करोतु	त्वं कुरु	अहं करयाणि
ते कुरुताम्	युवां कुरुतम्	आवां करवाथ
ते कुर्वन्तु	यूयं कुरुत	वयं करवाम
	स्त्रीलिङ्ग ।	

सा करोतु । ते कुरुताम् । ताः कुर्वन्तु । मध्यम और उतम पुरुष में पुल्लिङ्ग के समान जानो ।

नपुंसकलिङ्ग ।

तत् करोतु । ते कुरुताम् । तानि कुर्वन्तु । मध्यम और उतम पुरुष में पुल्लिङ्ग के तुल्य जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का हिन्दी में उल्या करो ।

आशिष्य लोट में प्रथम और मध्यम पुरुष के एकवचन में "कुरुतात्" यह रूप विकल्प करके होता है और शेष रूप विधि लोट के रूपों के तुल्य होते हैं ।

( यध )

	प्रथम पु०	मध्यम पु०	उतम पु०
एकव०	यधताम्	यधस्व	यधे
द्विव०	यधेताम्	यधेयाम्	यधावहे
बहुव०	यधन्ताम्	यधध्वम्	यधामहे

इन प्रत्येक क्रियाओं के नीचे भी उन्हीं हिन्दी क्रियाओं को जानो जो इस धातु के विधि लिङ् की क्रियाओं के नीचे लिखी गई हैं ।

हिन्दी वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

यह बड़े इत्यादि विधि लिङ् के तुल्य जानो ।

प्रत्येक वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो ।

अजन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

रामाय । रामाभ्याम् । रामेभ्यः । सख्ये । सखिभ्याम् । सखिभ्यः ।  
राम को । दोनों रामों को । कतिभ्यः ।

रामों को । सुधिये । सुधीभ्यम् । सुधीभ्यः ।  
सर्वस्मै । सर्वाभ्याम् । सर्वेभ्यः । साधवे । साधुभ्याम् । साधुभ्यः ।  
विभ्यः । स्वयम्भुवे । स्वयम्भूभ्याम् । स्वय-

पूर्वस्मै । पूर्वाभ्याम् । पूर्वाभ्यः । म्याभ्यः ।  
मुनये । मुनिभ्याम् । मुनिभ्यः । दावे । दातृभ्याम् । दातृभ्यः ।  
पत्ये । पतिभ्याम् । पतिभ्यः । गवे । गोभ्याम् । गोभ्यः ।

काय ।

पर्याप्त=पूरा

भूत=प्राणी

वालतृण=घास

घातु ।

( दा )

आशीर्लिङ् । देयात् ।

लुङ् । अदात् ।

विधिलिङ् । दद्यात् ।

( घर ) आहुर्पूर्वक=करना ।

विधिलिङ् । आचरेत् ।

द्रुह- दिवा- घर- अक- =अपकार

क- ।

विधिलिङ् । द्रुह्येत् ।

संस्कृत वाक्य ।

जनकः प्रीत्या रामाय जानकीं ददौ । ईश्वरः सर्वेभ्यो  
भूतेभ्यः सुखं देयात् । विभ्यो देवेभ्यो नमः । कृष्णो भक्त्या मुनये

आसनमदात् । पत्ये गच्छति । सख्ये सर्वदा हितमाचरेत् । सुधिये पर्याप्तं धनं दद्यात् । साधुभ्यः कदापि न दुह्येत् । स्वयम्भुवे नमस्कुर्मः । स गोभ्यो बालतृणददाति । कृतिभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भोजनं दद्यात् ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

एक वैयाकरण का मत है कि सम्प्रदान सञ्जा केवल उसी को नहीं होती जिस को कोई वस्तु दी जाय किन्तु इतर क्रियाओं के भी कर्मों के साथ जिन कारकों का संबन्ध किया जाय उन सब को सम्प्रदान सञ्जा होती है । जैसे । यज्ञदत्तो देवताय धानं कथयति । यज्ञदत्त देवदत्त से बात कहता है । यहां कथन क्रिया के कर्म धान के साथ देवदत्त का सम्बन्ध किया जाता है । इस लिये उसे भी सम्प्रदान सञ्जा होती है ।

जिन धातुओं का अर्थ सृष्टना अर्थात् अच्छा लगना हो उन के प्रयोग में जिस प्राणी को कोई वस्तु रहे उसे सम्प्रदान सञ्जा होती है । जैसे । देवदत्ताय रोचते मोदकः । देवदत्त को लड्डु अच्छा लगता है । यहां देवदत्त को सम्प्रदान सञ्जा हुई है ।

श्लाघ. (स्तुति क.) हु (द्विपाना) स्या (खड़ी रहना) शप (उराहन देना) इन धातुओं के प्रयोग में जिस प्राणी को कुछ बात जनाना हो उसे सम्प्रदान सञ्जा होती है । जैसे । गोपी स्मरात् कृष्णाय श्लाघते । गोपी काम से (पीड़ित होकर) कृष्ण की स्तुति करती है । कृष्णाय हुते । कृष्ण को (सौतीं से) छिपाती है । कृष्णाय तिष्ठति । कृष्ण के लिये खड़ी रहती है । कृष्णाय शपते । कृष्ण को उराहन देती है । इन उदाहरणों में गोपी स्तुति आदि कर्मों से कृष्ण को अपना प्रेम जानती है । इस लिये उसे सम्प्रदान सञ्जा हुई है ।

खिञ्जत् “धृ” (धराना) धातु के प्रयोग में उतमर्ष अर्थात् करण देनेवाले प्राणी को सम्प्रदान सञ्जा होती है । जैसे ।

देवदत्तो यच्चदत्ताय शतं धारयति । देवदत्त यच्चदत्त के सौ ( रूपये ) धराता है । अर्थात् देवदत्त यच्चदत्त का सौ रूपयों का ऋणी है । यहां यच्चदत्त को सम्प्रदान सञ्जा हुई है ।

“सृह” (चाहना) धातु के प्रयोग में जो वस्तु चाही जाय उसे सम्प्रदान सञ्जा होती है । जैसे । यच्चदत्तः पुष्पेभ्यः सृहयति । यच्चदत्त फूलों को चाहता है । यहां फूलों को सम्प्रदान सञ्जा हुई है ।

जिन धातुओं का अर्थ क्रोध द्रोह ईर्ष्या अथवा असूया हो उन के प्रयोग में जिस व्यक्ति पर कर्ता का कोप हो उस को सम्प्रदान सञ्जा होती है । जैसे । देवदत्तो यच्चदत्ताय क्रुध्यति । देवदत्त यच्चदत्त पर क्रोध करता है । विष्णुदत्तो यच्चदत्ताय दुह्यति । विष्णुदत्त यच्चदत्त का द्रोह करता है । रामदत्तो यच्चदत्ताय ईर्ष्यति । रामदत्त यच्चदत्त से ईर्ष्या रखता है । अर्थात् उस की सम्पत्ति को देख नहीं सकता । कृष्णदत्तो यच्चदत्ताय असूयति । कृष्णदत्त यच्चदत्त की असूया करता है । अर्थात् उस के गुणों में दोष प्रकट करता है ।

यदि क्रुध और दुह धातु उपसर्ग सहित हों तो उन के प्रयोग में जिस पर कर्ता का क्रोध हो उस को सम्प्रदान सञ्जा नहीं होती किन्तु कर्म सञ्जा होती है । जैसे । देवदत्तो यच्चदत्तमभिक्रुध्यति । देवदत्त यच्चदत्त पर क्रोध करता है । विष्णुदत्तो यच्चदत्तमभिदुह्यति । विष्णुदत्त यच्चदत्त का द्रोह करता है । इन उदाहरणों में यच्चदत्त को कर्म सञ्जा हुई है सम्प्रदान सञ्जा नहीं । और इसी कारण उसके आगे द्वितीया विभक्ति आई है ।

जहां राध और ईद धातुओं का अर्थ शुभ और अशुभ फल का विचारना हो वहां उन धातुओं के उस कारक को सम्प्रदान सञ्जा होती है जिस के विषय में अनेक प्रश्न किये जायं ।

जैसे । गर्गः कृष्णाय राष्ट्रंति ईक्षते वा । गर्ग मुनि कृष्ण के विषय में विचार करता है । अर्थात् नन्द आदिकों के अनेक प्रश्नों को सुन कर शुभ और अशुभ फलों को विचारता है ।

जिस के आदि में प्रति अथवा आड उपसर्ग हो ऐसे श्रु ( प्रति-ज्ञा क.) धातु के योग में प्रथम प्रेरणा करनेवाले को सम्प्रदान सञ्जा होती है । जैसे । यच्चदतो विप्राय गां प्रतिश्रयोति आशृष्योति वा । यच्चदत ब्राह्मण के लिये गो की प्रतिज्ञा करता है । यहाँ ब्राह्मण को सम्प्रदान सञ्जा हुई है । क्योंकि वह पहिले यच्चदत को प्रेरणा करता है कि मुझे गो दो तब वह उसे गो देने की प्रतिज्ञा करता है ।

अनुपूर्वक और प्रतिपूर्वक "श्रु" (स्तुति करनेवाले को प्रोत्साहन क.) धातु के उस कारक को सम्प्रदान सञ्जा होती है जो पहिली क्रिया का कर्ता हो । जैसे । होवेऽनुश्रुणाति प्रतिश्रुणाति । ( अध्वर्युं ) स्तुति करनेवाले होता की प्रोत्साहना-करता है । अर्थात् ध्वन करनेवाला पहिले स्तुति करता है तब अध्वर्युं उस को प्रोत्साहना करता है ।

परिक्रयण शब्द का अर्थ वेतन आदि के द्वारा किसी वस्तु को कुछ दिन के लिये अपने अधीन रखना है । इस परिक्रयण के लिये जो वेतन आदि दिया जाता है उस के वाचक शब्द को सम्प्रदान सञ्जा विकल्प करके होती है । जैसे । शतेन शताय वा परिक्रीतः । सौ ( रुपये ) पर भाड़ा किया गया । यहाँ शत शब्द को सम्प्रदान सञ्जा विकल्प करके हुई है । जब सम्प्रदान सञ्जा हुई तो उस के आगे चतुर्थी विभक्ति आई नहीं तो तृतीया हुई ।

जहाँ किसी एक वस्तु के उपकार के लिये कोई दूसरी वस्तु देखाई जाती है वहाँ उस प्रथम वस्तु के वाचक शब्द के आगे चतुर्थी विभक्ति आती है । जैसे । मुक्तये हरिं भजति । मुक्ति

के लिये हरि का भजन करता है । ब्राह्मणाय दधि । ब्राह्मण के लिये दही । इत्यादि ।

“कृप” (होना) धातु के और उस के समानार्थक इतर धातुओं के योग में भी उत्पन्न होनेवाले पदार्थ के आगे चतुर्थी विभक्ति आती है । जैसे । भक्तिदानाय कल्पते सम्यद्यते जायते । इत्यादि । भक्ति ज्ञान के लिये होती है । यहां भक्ति से ज्ञान उत्पन्न होता है । इस लिये ज्ञान के आगे चतुर्थी विभक्ति आई है ।

उत्पात उसे कहते हैं जिस से शुभ अथवा अशुभ फल का ज्ञान हो । इस उत्पात से जो फल जाना जाता है उस के घाचक शब्द के आगे चतुर्थी विभक्ति आती है । जैसे । घाताय कपिला विद्युत् । भूरे रंग की बिजली वायु के लिये होती है । अर्थात् भूरी बिजली के घमकने से जान पड़ता है कि वायु अधिक बहेगी । यहां घात शब्द के आगे चतुर्थी विभक्ति आई है ।

हित शब्द के योग में चतुर्थी होती है । जैसे । ब्राह्मणाय हितम् । ब्राह्मण के लिये हित ।

जहां तुमुनन्त क्रिया आप तो न रहे परन्तु उस के निमित्त दूसरी क्रिया निकटवर्ती रहे ऐसे स्थल में उस तुमुनन्त क्रिया के कर्म के आगे चतुर्थी विभक्ति आती है । जैसे । पुष्पेभ्यो याति । पुष्पण्याहते यातीत्यर्थः । फूलों के लिये जाता है । अर्थात् फूलों को लाने के लिये जाता है । यहां “आहते” यह तुमुनन्त क्रिया ऊपर से समझी जाती है और उस के लिये “याति” यह क्रिया निकटवर्ती है । इस अर्थस्था में तुमुनन्त क्रिया के कर्म पुष्प के आगे चतुर्थी विभक्ति आई है ।

“भाष्यचकार” इस सूत्र में जो प्रत्यय विधान किये जाते हैं वे जिन के अन्त में हो गये शब्दों के आगे चतुर्थी विभक्ति आती

हे जैसे । यागाय याति । ययुं यातीत्यर्थः । यञ्ज के लिये जाता है । अर्थात् यञ्ज करने को जाता है । यहां तुमुन् प्रत्यय के अर्थ में यञ्ज धातु के आगे घञ् प्रत्यय लाने से याग शब्द बना है । उस के आगे चतुर्थी विभक्ति आई है ।

नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम्, और षपट् इन के योग में चतुर्थी विभक्ति आती है । जैसे । देवेभ्यो नमः । देवताओं को नमस्कार । प्रजाभ्यः स्वस्ति । प्रजाओं का कल्याण । आग्नये स्वाहा, अग्नि को घृत आदि वस्तु का दान । पितृभ्यः स्वधा । पितरों को पिण्ड आदि वस्तु का दान । अलं मल्लो मल्लाय । एक मल्ल दूसरे मल्ल के लिये समर्थ । इस नियम में अलं शब्द के कहने से जिन शब्दों का सामर्थ्य अर्थ हो उन सब का यहण होता है । इस लिये "हरिदित्येभ्यो जलं प्रभुः समर्थः" इत्यादि प्रयोग सिद्ध होते हैं । प्रभु आदि शब्द के योग में षष्ठी भी होती है । जैसे । भुवनत्रयस्य प्रभुः । तीन लोक का स्वामी । षपट् इन्द्राय । इन्द्र को हविर्दान ।

यदि वाक्य से अनादर सूचित हो तो "मन" (मानना) धातु के प्राणिभिन्न कर्म के आगे चतुर्थी विभक्ति विकल्प करके आती है । जैसे । न त्वां तृणं तृणाय वा मन्ये । मैं तुम्हें तृण (भी) नहीं मानता । यहां मन । धातु के प्राणिभिन्न कर्म तृण के आगे चतुर्थी विभक्ति विकल्प करके हुई है । चतुर्थी के अभाव में द्वितीया हुई है ।

गमन अर्थ वाले धातुओं के पश्यभिन्न कर्म के आगे द्वितीया और चतुर्थी दोनों विभक्तियां क्रम से आती हैं जैसे । यामं यामाय वा गच्छति । गांध पर जाता है ।

जहां कर्ता का प्रकट व्यापार नहीं रहता वहां चतुर्थी नहीं होती । जैसे । मनसा यामं व्रजति । मन से गांध पर जाता है ।

यजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

रमायै । रमाभ्याम् । रमाभ्यः । स्त्रियै । स्त्रीभ्याम् । स्त्रीभ्यः ।

रमा को । दोनों रमाओं को । धेनवै । धेनवे । धेनुभ्याम् ।

रमाओं को । धेनुभ्यः ।

सर्वस्यै । सर्वाभ्याम् । सर्वाभ्यः । वध्वै । वधूभ्याम् । वधूभ्यः ।

तिष्ठभ्यः । भुवै । भुवे । भूभ्याम् । भूभ्यः ।

मत्स्यै । मतये । मतिभ्याम् । दुहित्वै । दुहितृभ्याम् ।

मतिभ्यः । दुहितृभ्यः ।

नद्यै । नदीभ्याम् । नदीभ्यः । दावै । द्योभ्याम् । द्योभ्यः ।

श्रियै । श्रिये । श्रीभ्याम् । श्रीभ्यः । नावै । नौभ्याम् । नौभ्यः ।

कोप ।

धातु ।

सिच. भ्वा. आत्म. अक. = रुचना । दाण. प्रपूर्वक. भ्या. पर. सक. = देना ।

अच्छा लगना । प्रयच्छन्ति ।

रोचते । क्रुध. दिवा. पर. अक. = कोप क. ।

पद. सम्पूर्वक. दिवा. आत्म. अक. = विधिलिङ् । क्रुध्येत् ।

समर्थ होना । सिद्ध हो । यज. भ्वा. उभ. सक. यत्त क. ।

सम्पद्यते । यजन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

रमायै रोचते पदम् । मत्स्ये सम्पद्यते विद्या । मेघा नदीभ्यो  
जलानि प्रयच्छन्ति । श्रियै शूचन् जयन्ति राजानः । स्त्रीभ्यो न  
क्रुध्येत् । दालतृणं धेनवे हितम् । वधूभ्यः प्राणराशं दद्यात् ।  
दावै यजन्ति विद्याः । नावै तिष्ठति ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।



अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

ज्ञानाय । ज्ञानाभ्याम् । ज्ञानेभ्यः । धारिणे । धारिभ्याम् । धारिभ्यः ।  
 ज्ञान के लिये । दोनों ज्ञानों के दध्ने । दधिभ्याम् । दधिभ्यः ।  
 लिये । ज्ञानों के लिये । मधुने । धुभ्याम् । मधुभ्यः ।  
 धातु ।

सृष्ट. घुरा. उभय. सक्र=चाहना ।

सृष्टयति ।

संस्कृत वाक्य ।

भक्तिज्ञानाय कल्पते । धारिभ्यः कूपं गच्छति । दध्ने दुधाम् ।  
 मधुने सृष्टयति भृङ्गः ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त पुलिङ्ग शब्द ।

दुहे । धुभ्याम् । धुभ्यः । मह्यम् । मे । आद्याभ्याम् । नौ ।  
 दूहनेशले को । दोनो दूहने- अस्मभ्यम् । नः ।

घालों को । दूहनेशलों को । मुझे । हम दोनों को । हम को  
 अनहुहे । अनहुद्भ्याम् । कस्मै । काम्याम् । केभ्यः ।

अनहुद्भ्यः । किस को । किन दोनों को ।

चतुर्भ्यः । किन को ।

पद्भ्यः । अस्मै । अभ्याम् । एभ्यः ।

पद्भ्यः । इस को । इन दोनों को । इन को ।

अष्टभ्यः । अष्टाभ्यः । यस्मै । याम्याम् । येभ्यः ।

तस्मै । ताम्याम् । तेभ्यः । जिस को । जिन दोनों को ।

उस को । उन दोनों को । उन को । जिन को ।

तुभ्यम् । ते । युवाभ्याम् । वाम् । यतस्मै । यताभ्याम् । एतेभ्यः

युष्मभ्यम् । वः । इस को । इन दोनों को ।

तुभे । तुम दोनों को । तुम को । इन को ।

अमुष्मे । अमूभ्याम् । अमीभ्यः । प्राचे । प्राग्भ्याम् । प्राग्भ्यः ।  
 इम को । इन देनों को । प्राञ्चे । प्राङ्भ्याम् । प्राङ्भ्यः ।  
 इन को । उदीचे । उद्गभ्याम् । उद्गभ्यः ।  
 उस को । उन देनो को । महिन्ने । महिमभ्याम् । महिमभ्यः ।  
 उन को । यज्वने । यज्वभ्याम् । यज्वभ्यः ।  
 सम्राजे । सम्राड्भ्याम् । यूने । युवभ्याम् । युवभ्यः ।  
 सम्राड्भ्यः । राज्ञे । राजभ्याम् । राजभ्यः ।  
 भूमृते । भूमृद्भ्याम् । भूमृद्भ्यः । दण्डिने । दण्डिभ्यम् । दण्डिभ्यः ।  
 धीमते । धीमद्भ्याम् । धीमद्भ्यः । पथे । पथिभ्याम् । पथिभ्यः ।  
 गच्छते । गच्छद्भ्याम् । गच्छद्भ्यः । वेधसे । वेधेभ्याम् । वेधेभ्यः ।  
 प्रगामे । प्रगान्भ्याम् । प्रगान्भ्यः । विदुषे । विद्वद्भ्याम् । विद्वद्भ्यः ।  
 बुधे । भुद्भ्यम् । भुद्भ्यः । गरीयसे । गरीयोभ्याम् । गरीयोभ्यः ।  
 अग्निमये । अग्निमद्भ्याम् । पुंसे । पुम्भ्याम् । पुम्भ्यः ।  
 अग्निमद्भ्यः ।

कोष ।

येतन=चाकरी । अयात् दुष्टार्हे । दशरथ=राम के पिता का नाम ।  
 शक्र=इन्द्र ।

धातु ।

कृष-दिवा-पर-अरु-नक्रोध क-

लिट् । चुकोष ।

संस्कृत वाक्य ।

तुहे येतनं ददाति । अनहुहे चासं प्रयच्छति । अमुष्मो दिक्  
 पालेभ्यो पलिं ददाति । मघाजे करं प्रयच्छन्ति सामन्ताः । शक्रो  
 भूमृद्भ्यश्चुकोष । धीमते रोषते विद्या । विश्यामिवायमे गच्छते  
 रामाय दशरथ अग्निं ददौ । प्रगामे ज्ञानं प्रदेयम् । बुधे दृष्टेच  
 बुद्धिमान् । अग्निमये दक्षिणां ददाति । महिन्ने कल्पते विद्या

यज्वने हितम् । शान्ताय यूने सुखम्भवति । रात्रे स्वस्त्यस्तु । दण्डिने  
भिवां दद्यात् । उत्पथेन पथे गच्छति । वेधसे नमः । विद्वद्भ्यो  
हितमाचरेत् । गरीयसे उच्चमासनं दद्यात् । सद्भ्यः पुम्यो नमः ।  
इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिवे । द्युभ्याम् । द्युभ्यः ।	अमुष्ये । अभूभ्याम् । अभूभ्यः ।
स्वर्ग के लिये । देवों के लिये ।	वाचे । वाग्भ्याम् । वाग्भ्यः ।
सन्ने । सगभ्याम् । सगभ्यः ।	
चतसृभ्यः ।	त्विये । त्विद्भ्याम् । त्विद्भ्यः ।
तस्ये । ताभ्याम् । ताभ्यः ।	गिरे । गीर्भ्याम् । गीर्भ्यः ।
कस्ये । काभ्याम् । काभ्यः ।	आपदे । अपद्भ्याम् । अपद्भ्यः ।
अस्ये । आभ्याम् । आभ्यः ।	अद्भ्यः ।
यस्ये । याभ्याम् । याभ्यः ।	दिशे । दिग्भ्याम् । दिग्भ्यः ।
एतस्ये । एताभ्याम् । एताभ्यः ।	

धातु ।

राध-आङ्पूर्वक-चुरा-पर-सक-ह-आङ्पूर्वक-भ्वा-पर-सक- =सेधा क- ।	ले आना ।
आराधयन्ति ।	आहरन्ति ।

संस्कृत वाक्य । •

दिवे धम्ममाचरन्ति । मनोहरायै वाचे देवतामाराधयन्ति ।  
सन्ने पुष्पाण्याहरन्ति । त्विये तपश्चरन्ति । गिरे नमस्कुर्यन्ति ।  
अविवेक आपदे भवति । अद्भ्यः सृहयन्ति धातकाः । ऐन्द्रो  
दिशे नमः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

घारे । वार्याम् । घाम्यः । अह्रे । अहोर्भ्याम् । अहोभ्यः ।  
जल के लिये दोनों जलों के द्विषे । द्विर्भ्याम् । द्विर्भ्यः ।  
लिये । जलों के लिये । धनुषे । धनुर्भ्याम् । धनुर्भ्यः ।  
धनुर्भ्यः ।

काय ।

ठलूक=उल्लू पत्नी ।

धातु ।

याः अदाः परः सक्रः=जाना ।

याति ।

संस्कृत वाक्य ।

घार्यो याति । अह्रे कृप्यत्युलूकः । द्विषे पयः । धनुषेऽंशः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हिन्दी वाक्य ।

कृप्य ने भक्ति से मुनि को आसन दिया । विद्वान को निर्वाहयोग्य धन देना चाहिये । जनक ने प्रेम से राम को जानकी दी । मित्र का सर्वदा हित करना चाहिये । पति के लिये जाती है । सज्जनों का अपकार कहीं न करना चाहिये । यह गोशों को घास देता है । हम ब्रह्मा को नमस्कार करते हैं । मेरे के शास्त्रों को भोजन देऊँ । ईश्वर सकल प्राणियों को सुख दे ।

मेघ नदियों को जल देते हैं । कामल तृण धेनु के लिये हित है । राजा लोग लक्ष्मी के लिये शशुओं को जीतते हैं । विद्या बुद्धि के लिये होता है । लक्ष्मी को कमल अच्छा लगता है । स्त्रियों पर क्रोध नहीं करना चाहिये । परिणत लोग स्वर्ग के लिये यज्ञ करते हैं । बहुओं को क्लेश देना चाहिये ।

पानी ( भरने ) को कूचों पर जाता है । मेरा फूल के रस को चाहता है । भक्ति ज्ञान के लिये होती है । दही के लिये दूध

इन्द्र ने पर्वतों पर कोप किया। बुद्धिमान को चाहिये कि पण्डित का अपकार न करे। दूहनेवाले को बतन (दुहाई) देना है। बुद्धिमान को विद्या अच्छी लगती है। शान्त युवा (पुरुष) को सुख होता है। दरवाजी को भिवा देना चाहिये। चारों दिक्पालों (इन्द्र आदि) को पूजा देना है। (राजा) टशरय ने विश्वामित्र के आश्रम पर जाते हुए राम को आशीर्वाद किया। छोटे २ राजा चक्रवर्ती को कर देते हैं। आग मथने वाले को दाघिणा देना है। पण्डितों का हित करना चाहिये। बेल को घास देना है। विद्या बड़ाई के लिये होती है। ज्ञान शान्त (पुरुष) को देना चाहिये। राजा का कल्याण हो। श्रेष्ठ (पुरुष) को लंघा आसन देना चाहिये। निकम्मी राह से अच्छी राह पर जाता है। यज्ञ करनेवाले को हित। सज्जन पुरुषों को नमस्कार। ब्रह्मा को नमस्कार।

(कावि. लोग) मनोहर घाणी (पाने) के लिये देवता की सेवा करते हैं। अविबेक विपत्ति के लिये होता है। स्वर्ग के लिये धर्म करते हैं। चातक (पत्नी) जल चाहते हैं। कान्ति के लिये तप करते हैं।

उल्लू (पत्नी) दिन पर कोप करता है। धनुष के लिये बांस। पानी (भरने) के लिये जाता है। खीर के लिये दूध।

इन वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करो।

हिन्दी शब्द।

पुस्तिका।

एकपद-

बालक को-के लिये  
लड़के को-के लिये  
मुनि को-के लिये

बहुपद-

बालकों को-के लिये  
लड़कों को-के लिये  
मुनियों को-के लिये

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में अपादान के आगे पञ्चमी विभक्ति आती है। संस्कृत में पञ्चमी विभक्ति के प्राय "आत्" इत्यदि चिह्न रहते हैं। हिन्दी में उसका "से" चिह्न है। जैसे। ऊपर लिखे हुए उदाहरणों में संस्कृत में राम और अश्व शब्द के अन्त में "आत्" चिह्न और हिन्दी में गावं और घोड़ा शब्द से परे "से" चिह्न है।

संस्कृत में पञ्चमी विभक्ति।

एकव.	द्विवच.	बहुवच.
इसि	भ्याम्	भ्यस्

संस्कृत में भूत और भविष्य काल। हेतुहेतुमद्भाव आदि लिङ् के निमित्तों में से कोई निमित्त। क्रिया की असिद्धि गम्यमान। लट् लकार। हिन्दी में हेतुहेतुमद्भूत और भविष्य काल।

भूत काल का उदाहरण। यत्नदत्त एधश्चेदल्प्यत्, अदानमपद्यत्। यत्नदत्त ईधन पाता तो भात पकाता। अर्थात् न ईधन पाया न भात पकाया।

भविष्य काल का उदाहरण। सुवृष्टिश्चेदभविष्यत्, तदा सुभिन्नमभविष्यत्। अच्छी घृष्टि होवेगी तो सुकाल होवेगा। अर्थात् यदि अच्छी घृष्टि न होवेगी तो सुकाल भी न होवेगा।

इन दोनों उदाहरणों में उत्तर २ क्रिया के साथ पूर्व २ क्रिया का हेतुहेतुमद्भाव संबन्ध है अर्थात् पहिली २ क्रिया कारण और पिछली २ क्रिया कार्य है। और दोनों उदाहरणों में क्रिया की असिद्धि अर्थात् न होना प्रकाशित होती है।

(अस् और भू)

	प्रथम पु.	मध्यम पु.	उत्तम पु.
एकवच.	अभविष्यत्	अभविष्यः	अभविष्यम्
एकवच.	होता	होता	होता

एकप्रथम-	होती	होती	होती
एकप्रथम-	होवेगा	होवेगा	होऊंगा
एकप्रथम-	होवेगी	होवेगी	होऊंगी
द्विप्रथम-	अभविष्यताम्	अभविष्यताम्	अभविष्यात्
द्विप्रथम-	होते	होते	होते
द्विप्रथम-	होतीं	होतीं	होतीं
द्विप्रथम-	होवेंगे	होवेंगे	होवेंगे
द्विप्रथम-	होवेंगी	होवेंगी	होवेंगी
द्विप्रथम-	अभविष्यन्	अभविष्यन्	अभविष्याम
द्विप्रथम-	होते	होते	होते
द्विप्रथम-	होतीं	होतीं	होतीं
द्विप्रथम-	होवेंगे	होवेंगे	होवेंगे
द्विप्रथम-	होवेंगी	होवेंगी	होवेंगी

लृट् लकार में भी अम् और भू दोनों धातुओं की क्रियाओं के रूप एक ही से होते हैं । ऊपर लिखी हुई हिन्दी की चार २ क्रियाओं में से दो २ भूत काल और दो २ भविष्य काल की हैं ।

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स चेदभविष्यत्	त्यस्येदभविष्यः	अहमेदभविष्याम्
तौ चेदभविष्यताम्	युयासेदभविष्यताम्	आयासेदभविष्याथ
ते चेदभविष्यन्	यूयसेदभविष्यन्	वयसेदभविष्याम

स्त्रीलिङ्ग ।

मा चेदभविष्यत् । ते चेदभदभविष्यताम् । तारसेदभविष्यन् ।

येव पुल्लिङ्गपत् ।

नपुंसकलिङ्ग ।

तच्चेदमधिष्यत् । ते चेदमधिष्यताम् । तानि चेदमधिष्यन् ।  
शेष पुलिङ्गवत् ।

इन प्रत्येक धाक्यों में एक २ विधेय पद मिलाकर और फिर इन के साथ एक २ और धाक्य जोड़ कर हिन्दी में उल्था करो । जैसे । ' स चेद्दार्मिकोऽमधिष्यत्, सुखमलप्स्यत् । यह धार्मिक होता वा होगा तो सुख पाता वा पावेगा इत्यादि ।

( कृ )

	प्रथम पु०	मध्यम पु०	उत्तम पु०
एकपच०	अकरिष्यत्	अकरिष्यः	अकरिष्यम्
एकपच०	करता	करता	करता
एकपच०	करती	करती	करती
एकपच०	करेगा	करेगा	करेगा
एकपच०	करेगी	करेगी	करेगी
द्विपच०	अकरिष्यताम्	अकरिष्यताम्	अकरिष्याथ
द्विपच०	करते	करते	करते
द्विपच०	करतीं	करतीं	करतीं
द्विपच०	करेंगे	करेंगे	करेंगे
द्विपच०	करेंगी	करेंगी	करेंगी
बहुपच०	अकरिष्यन्	अकरिष्यत	अकरिष्याम
बहुपच०	करते	करते	करते
बहुपच०	करतीं	करतीं	करतीं
बहुपच०	करेंगे	करेंगे	करेंगे
बहुपच०	करेंगी	करेंगी	करेंगी



हिन्दी धाव्य ।

पुल्लिङ्ग ।

यदि वह करता या करेगा	यदि तू करता था करेगा	यदि मैं करता था करूंगा
यदि वे दोनों करते या करेंगे	यदि तुम दोनों करते या करोगे	यदि हम दोनों करते या करेंगे
यदि वे करते या करेंगे	यदि तुम करते या करोगे	यदि हम करते या करेंगे

स्त्रीलिङ्ग ।

यदि वह करती या करेगी	यदि तू करती या करेगी	यदि मैं करती, या करूंगी
यदि वे दोनों करतीं या करेंगीं	यदि तुम दोनों करतीं या करोगीं	यदि हम दोनों करतीं या करेंगीं
यदि वे करतीं या करेंगीं	यदि तुम करतीं या करोगीं	यदि हम करतीं या करेंगीं

नपुंसक के घटले में पुल्लिङ्ग के समान जानो ।

इन प्रत्येक हिन्दी धाव्यों में एक २ कर्मधाचक पद मिलाकर और इन धाव्यों के साथ एक २ और धाव्य जोड़ कर संस्कृत में उल्था करो । जैसे । यदि वह धर्म करता था करेगा तो स्वर्ग जाता या जायगा । स चेदुर्ममकरिष्यत्, तदा स्वर्गम-गमिष्यत् । इत्यादि ।

( यध )

	प्रथम पु०	मध्यम पु०	उत्तम पु०
इध्व-	येधिष्यत्	येधिष्यथाः	येधिष्ये
यध्व-	यद्धता	यद्धता	यद्धता
एध्व-	यद्धती	दद्धती	यद्धती

एकप.	बढेगा	बढेगा	बढूंगा
एकप.	बढेगी	बढेगी	बढूंगी
द्विप.	बेधियेताम्	बेधियेशाम्	बेधिय्यावहि
बहुप.	बढते	बढते	बढते
बहुप.	बढतीं	बढतीं	बढतीं
बहुप.	बढेंगे	बढेंगे	बढेंगे
बहुप.	बढेंगी	बढेंगी	बढेंगी
बहुप.	बेधियन्त	बेधियध्यम्	बेधिय्यामहि
बहुप.	बढते	बढते	बढते
बहुप.	बढतीं	बढतीं	बढतीं
बहुप.	बढेंगे	बढेंगे	बढेंगे
बहुप.	बढेंगी	बढेंगी	बढेंगी

संस्कृत वाक्य ।

पुल्लिङ्ग ।

स चेदेधिय्यत त्वञ्चेदेधिय्यथाः अहञ्चेदेधिय्ये  
 ते। चेदेधिय्येताम् युवाञ्चेदेधिय्येशाम् आवाञ्चेदेधिय्यावहि  
 ते चेदेधिय्यन्त यूयञ्चेदेधिय्यध्यम् वयञ्चेदेधिय्यामहि  
 स्त्रीलिङ्ग ।

सा चेदेधिय्यत । ते चेदेधिय्यताम् । ताश्चेदेधिय्यन्त ।  
 शेष पुल्लिङ्गवत् ।

नपुंसकलिङ्ग ।

तञ्चेदेधिय्यत । ते चेदेधिय्येताम् । तानि चेदेधिय्यन्त ।  
 शेष पुल्लिङ्गवत् ।

इन प्रत्येक संस्कृत वाक्यों का अर्थ और भू धातु में कही हुई  
 रीति के अनुसार उल्था करें ।

अजन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

रामात् । रामाभ्याम् । रामेभ्यः । सख्युः । सखिभ्याम् । सखिभ्यः ।

राम से । रामों से । कतिभ्यः ।

रामों से ।

सुधियः । सुधीभ्याम् । सुधीभ्यः ।

सर्वस्मात् । सर्वाभ्याम् । सर्वेभ्यः । साधोः । साधुभ्याम् । साधुभ्यः ।

विभ्यः ।

स्वयम्भुवः । स्वयम्भूभ्याम् । स्व-

पूर्वस्मात् । पूर्वात् । पूर्वाभ्याम् । यम्भूभ्यः ।

पूर्वेभ्यः ।

दातुः । दातृभ्याम् । दातृभ्यः ।

मुनेः । मुनिभ्याम् । मुनिभ्यः । गोः । गोभ्याम् । गोभ्यः ।

पत्युः । पतिभ्याम् । पतिभ्यः ।

धातु ।

वे.भ्या. आत्म. सक.=रक्षा क. । इ. अधिपूर्वक. अदा. आत्म. सक.  
चायते । =पठना ।

भी. जुहो. पर. अक.=हरना । अधीति ।

विभेति ।

संस्कृत वाच्य ।

रामादृते न सुखम् । राजा सर्वेभ्यो विघ्नेभ्यः प्रजास्त्यायते ।  
मुनेर्विभेति । पत्युस्तर् भुङ्क्ते कुलशूः । सख्युरेतच्छुतं मघा । सुधि-  
योऽधीति यत्तदतः । साधुभ्योऽसाधयः पृथग्भवन्ति । स्वयम्भुयः  
श्रुतयः प्रवभूयुः । दातुरधिकः पुदयकृत् कोऽपि नास्ति । गोदूरे तिष्ठ ।

एत संस्कृत वाच्य का हिन्दी में देखा करो ।

स्मरण रखना चाहिये कि किसी अशुचि से किसी पशु का  
अलग होना चाहे वास्तविक न भी हो चाहे केवल बुद्धि कल्पित  
हो । तथापि उस अशुचि के वाचक शब्द आगे पशुमी विभक्ति  
आती है । जैसे । यत्तदतो रामादायति । यत्तदत गायं मे आता  
है । यहाँ गायं रूप अशुचि से यत्तदत का अलग होना वास्तविक

है। परन्तु माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्य आद्यतराः। मथुरा के लोग पटने के लोगों से अधिक धनवान हैं। यहां पटने के लोगों से मथुरा के लोगों का अलग होना केवल बुद्धि कल्पित है।

जिन धातुओं का अर्थ 'निन्दा निवृत्ति अथवा असावधानी' हो उन के कारक को अपादान सञ्जा होती है। जैसे। पापञ्जुगुप्सते। पाप की निन्दा करता है। अधर्माद्विरमति। अधर्म (करने) से निवृत्त होता है। धर्मात् प्रमादति। धर्म (करने) में असावधान रहता है।

जिन धातुओं का अर्थ भय अथवा रक्षा हो उन के योग में भय के कारण को अपादान सञ्जा होती है। जैसे। चोराद्विभेति। चोर से डरता है। चोरात् वायते। चोर से रक्षा करता है। इन उदाहरणों में भय के हेतु चोर को अपादान सञ्जा हुई है।

परा पूर्वक जि ( ग्लानि करना ) धातु के योग में असह्य पदार्थ को अर्थात् जिसे कर्ता न सह सकता हो उसे अपादान सञ्जा होती है। जैसे अध्ययनात् पराजयते। पढ़ने से ग्लानि करता है। अर्थात् खिन्न होता है। यहां अध्ययन असह्य पदार्थ है इस लिये उसे अपादान सञ्जा हुई है।

किसी प्राणी को किसी ( अभिलषित ) वस्तु में प्रवृत्त होने से रोकना वारण कहलाता है। जिन धातुओं का अर्थ वारण हो उन के प्रयोग में अभिलषित पदार्थ को अपादान सञ्जा होती है। जैसे यवभ्यो गां वारयति। गौ को यव ( खाने ) से रोकता है। यहां यव अभिलषित पदार्थ है इस लिये उस को अपादान सञ्जा हुई है।

जहां एक प्राणी किसी दूसरे प्राणी से ऐसे स्थान में छिपा चाहे कि वह उसे न देख सके वहां उस दूसरे प्राणी को अपादान सञ्जा होती है। जैसे। देवदत्तात्त्रिलीपतेः यज्ञदत्तः। यज्ञदत्त देवदत्त से छिपता है। यहां देवदत्त को अपादान सञ्जा हुई है।

जहाँ नियम पूर्वक विद्या का पढ़ना हो वहाँ पढ़ाने वाले को अपादान सञ्जा होती है । जैसे उपाध्यायादधीते । अध्यापक से पढ़ता है । यहाँ उपाध्याय को अपादान सञ्जा हुई है ।

उत्पन्न होनेवाले पदार्थ के कारण को अपादान सञ्जा होती है । जैसे । ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते । ब्रह्मा अथवा ब्रह्म से प्रजा उत्पन्न होती हैं । यहाँ ब्रह्मा अथवा ब्रह्म को अपादान सञ्जा हुई है ।

जिस स्थान से कोई पदार्थ प्रकट होता है, उसे अपादान सञ्जा होती है । जैसे । हिमवतो गङ्गा प्रभवति । हिमालय (पहाड़) से गङ्गा प्रगट होती है । यहाँ हिमालय को अपादान सञ्जा हुई है ।

जहाँ क्का के स्थान में विहित ल्यप् प्रत्ययान्त शब्द का लोप हो अर्थात् वह ऊपर से समझा जाय वहाँ कर्म और अधिकरण अर्थ में पञ्चमी विभक्ति आती है । जैसे । प्रासादात् प्रेक्षते । प्रासादमारुह्य प्रेक्षते इत्यर्थः । राजमहल से देखता है अर्थात् राजमहल पर चढ़ कर देखता है । आसनात् प्रेक्षते । आसन उपविश्य प्रेक्षते इत्यर्थः । आसन पर से देखता है अर्थात् आसन पर बैठ कर देखता है । इन उदाहरणों में क्का के स्थान में विहित ल्यप् प्रत्ययान्त शब्द अर्थात् आरुह्य और उपविश्य इन दोनों शब्दों का लोप हुआ है इस लिये प्रासाद और आसन शब्दों के आगे क्रम से कर्म और अधिकरण अर्थ में पञ्चमी विभक्ति आई है ।

ऊपर से समझी हुई क्रिया भी कारक विभक्ति का निमित्त होती है । जैसे । प्रश्न । कस्मात् त्वम् । तू कहाँ से । उत्तर । नद्याः । नदी से । यद्वा, आगच्छामि । आता हूँ । यह क्रिया ऊपर से समझी जाती है ।

जहाँ किसी अवधि से लेकर पथ अथवा काल की गणना होती है वहाँ उस अवधि के आगे पञ्चमी, पथ के आगे प्रथमा और सप्तमी, और काल के आगे सप्तमी विभक्तियाँ आती हैं । जैसे । वनाद्

यामो योजनं योजने वा । धन से गांधं चार कोस पर है । कार्तिक्या आयहायणी मासे । कार्तिक की पूर्णिमा से अगहन की पूर्णिमा महीने भर पर रहती है । यहां धन और कार्तिकी पूर्णिमा अवधि हैं ।

अन्य, आरात्, चते, दिक् शब्द, अञ्चतरपद, आच्, आहि, इन के योग में पञ्चमी विभक्ति आती है । अन्य शब्द से उस के समानार्थक और शब्दों का भी ग्रहण होता है । उदा० । अन्यो देव-दत्तात् । भिन्नो देवदत्तात् । विलक्षणे देवदत्तात् । इतरो देवदत्तात् । अर्थात् देवदत्त से भिन्न । आरात् शब्द के दो अर्थ हैं दूर और समीप । उदा० । आराद् देवदत्तात् । देवदत्त से दूर । आराद् यच्चदत्तात् । यच्चदत्त के समीप चते शब्द का छोड़ना अर्थ है । उदा० । चते देवदत्तात् । देवदत्त को छोड़कर । दिक् शब्द से पूर्व आदि दिशां पूर्व आदि स्थान और पूर्वं आदि समय में रहनेवाले पदार्थ समझे जाते हैं । उदा० । पूर्वा यामात् । गांधं से पूरव । उत्तरो यामात् । गांधं से उत्तर । चैवात् पूर्वं: फाल्गुनः । चैत से पहिले फाल्गुन । फाल्गुनाद्दुत्तरश्चैव: । फाल्गुन के पीछे चैत । अञ्चतरपद से वे शब्द समझे जाते हैं जिन के अन्त में अञ्च धातु हो । उदा० । प्राक् यामात् । गांधं से पूरव । प्रत्यग् यामात् गांधं से पच्छिम । आच् और आहिन इन शब्दों से आच् और आहि प्रत्ययान्त शब्द लिये जाते हैं । उदा० । दक्षिणा यामात् । दक्षिणाहि यामात् । गांधं की दक्खिन ओर ।

प्रभृति, आरभ्य, और वहिः इन शब्दों के योग में पञ्चमी होती है । मवात् प्रभृति आरभ्य वा सेच्यो हरिः । जन्म से लेकर विष्णु की सेवा करनी चाहिये । यमाद् वहिः । गांधं के बाहर । जहां अब और परि का अर्थ वर्जन अर्थात् छोड़ना हो और आङ् का अर्थ मर्यादा अथवा अभिविधि हो वहां इन अर्थों

के योग में पञ्चमी विभक्ति आती है । जैसे । अप मथुरा घृष्टो देवः । परि मथुराया घृष्टो देवः । मथुरा को छोड़ कर देव बरसा । यहां अप और परि का अर्थ छोड़ना है इस लिये इन के योग में मथुरा शब्द के आगे पञ्चमी विभक्ति आई है । आ पाटलिपुत्राद् घृष्टो देवः । पटने तक देव बरसा । आ मथुराया घृष्टो देवः । मथुरा को लेकर देव बरसा । यहां पहिले उदाहरण में आइ का अर्थ मथुरा और दूसरे में अभिविधि है । इस लिये पाटलिपुत्र और मथुरा शब्द के आगे पञ्चमी विभक्ति आई है । अवधि को छोड़ कर मथुरा और अवधि सहित अभिविधि कहलाती है । जैसे । पहिले उदाहरण में पटने को छोड़ कर देव बरसा और दूसरे में मथुरा को लेकर बरसा ।

जहां किसी मुख्य पदार्थ का प्रतिनिधि अर्थात् उस के सदृश दूसरा पदार्थ अथवा प्रतिदान अर्थात् उस के बदले में किसी दूसरी वस्तु का दान दिखलाया जाय वहां इन प्रतिनिधि और प्रति दान रूप अर्थों के प्रकाश करनेवाले "प्रति" शब्द के योग में उन मुख्य पदार्थों के वाचक शब्दों के आगे पञ्चमी विभक्ति आती है । जैसे । प्रद्युम्नः कृष्णात् प्रति । प्रद्युम्न कृष्ण के सदृश है । तिलेभ्यः प्रति यच्छति माषान् । तिल के बदले में उड़द देता है । यहां प्रद्युम्नः रूप प्रतिनिधि और उड़द दान रूप प्रति दान के प्रकाशक "प्रति" शब्द के योग में मुख्य पदार्थों के वाचक कृष्ण और तिल शब्दों के आगे पञ्चमी विभक्ति आई है ।

जहां कण किसी क्रिया का कर्म न हो किन्तु हेतु मात्र हो वहां उस के वाचक शब्द के आगे पञ्चमी विभक्ति आती है । जैसे । यथाद् यदुः । यो के कारण घांथा गया । अर्थात् यो हेतु परम लिये ये इस कारण घांथा गया । जहां

ऋण कर्ता होता है वहां उस के आगे पञ्चमी नहीं किन्तु तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। शतेन बन्धितः। सो रूपेणेति (उसको) बंधयाया। यहां ऋण बन्धन क्रिया का प्रयोजक कर्ता है।

हेतु वाचक शब्द के आगे पञ्चमी और तृतीया दोनों विभक्तियां आती हैं। जैसे। जाड्यात् जाड्येन वा बद्धः। जड़ता के कारण बांधा गया। पाण्डित्यात् पाण्डित्येन वा मुक्तः। पाण्डिताई के कारण छूटा।

पृथक्, विना, और नाना इन प्रत्येक के योग में तृतीया, पञ्चमी और द्वितीया विभक्तियां आती हैं। जैसे। पृथग् देवदत्तेन देवदातात् देवदत्तं वा। देवदत्त से अलग। ऐसे ही विना और नाना के योग में भी जानो।

करण कारक में अद्रव्य वाचक स्तोत्र, अल्प, कृच्छ्र और कतिपय शब्द के आगे तृतीया और पञ्चमी विभक्तियां आती हैं। स्तोत्रेण स्तोत्राद्वा मुक्तः। थोड़े में छूटा। अल्पेन अल्पाद्वा मुक्तः। थोड़े में छूटा। कृच्छ्रेण कृच्छ्राद्वा मुक्तः। किसी प्रकार से छूट। कतिपयेन कतिपयाद्वा मुक्तः। थोड़े में छूटा। जहां ये शब्द द्रव्य वाचक रहते हैं वहां केवल तृतीया विभक्ति आती है। जैसे। स्तोत्रेण विषेण हतः। थोड़े विष से मारा गया।

जिन अद्रव्य वाचक शब्दों का अर्थ दूर और समीप हो उन के आगे द्वितीया पञ्चमी और तृतीया विभक्तियां आती हैं। जैसे। यामस्य दूरं दूरात् दूरेण वा। गावं से दूर। यामस्यान्तिकमन्तिकान्तिकेन वा। गावं के समीप। जहां ये शब्द द्रव्य वाचक रहते हैं वहां ये विभक्तियां नहीं आतीं। जैसे। दूरः पन्थाः। दूर पथ ॥



अत्रन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

रमायाः । रमाभ्याम् । रमाभ्यः । स्त्रियाः । स्त्रीभ्याम् । स्त्रीभ्यः ।  
रमा से । दोनें रमाओं से । धेन्याः । धेनोः । धेनुभ्याम् ।  
रमाओं से । धेनुभ्यः ।

सर्वस्याः । सर्वाभ्याम् । सर्वाभ्यः । वध्याः । वधूभ्याम् । वधूभ्यः ।  
तिसृभ्यः । भ्रुवाः । भ्रूवः । भ्रूभ्याम् । भ्रूभ्यः ।

मत्याः । मतेः । मतिभ्याम् । दुहितुः । दुहितृभ्याम् ।  
मतिभ्यः । दुहितृभ्यः ।

नद्याः । नदीभ्याम् । नदीभ्यः । द्योः । द्योभ्याम् । द्योभ्यः ।  
श्रियाः । श्रियः । श्रीभ्याम् । नावः । नौभ्याम् । नौभ्यः ।  
श्रीभ्यः ।

धातु ।

( घृत् ) परापूर्वक । ( हृ ) अपूर्वक ।  
णिच् । परावर्तयन्ति । लोट् । अपसर ।  
दुह् । अदा । उभ् । द्विकर्म = पत् । भ्या । पर । अरू = गिरना ।  
दूहना । पतति ।  
दोश्रि ।

संस्कृत वाच्य ।

इयं साध्वी रमायाः प्रति । मतेरिना न यिदा । नद्या  
आराद् यामः । श्रिया च्छते न मुखम । स्त्रीभ्यो मनः परायत्ते-  
यन्ति यिद्याः । धेनोः प्रयो दोश्रि । वधूभ्य च्छते न गृहयोभा ।  
कुटिलाभ्यां भ्रूभ्यां विभेति । दुहितृभ्योऽन्यो न दीनमनोऽतस्तत् ।  
सर्वदानुकम्प्यः । द्योः पतति । नायोऽयतरति ।

एत संस्कृत वाच्यो का हिन्दी में उल्हा फते ।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

ज्ञानात् । ज्ञानाभ्याम् । ज्ञानेभ्यः । वारिणः । वारिभ्याम् । वारिभ्यः ।  
ज्ञान से । दोनों ज्ञानों से । दध्नः । दधिभ्याम् । दधिभ्यः ।  
ज्ञानों से । मधुनः । मधुभ्याम् । मधुभ्यः ।

घातु ।

जन- प्रपूर्वक- दिव- आत्म- (दाण) प्रतिपूर्वक ।  
अक- =उत्पन्न हो- । प्रतियच्छति ।  
प्रजायते ।

संस्कृत वाच्य ।

ज्ञानादृते न मोक्षः । वारिभ्यो विना जीवितुं न शक्नुवन्ति मत्स्याः ।  
दध्ने घृतं प्रजायते । मधुनो घृतं प्रतियच्छति ।

इन वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हलन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

दुहः । धुभ्याम् । धुभ्यः । मुह से । हुम दोनों से । हुम से ।  
दूहने वाले से । दोनों दूहने कस्मात् । काभ्याम् । केभ्यः ।  
वालों से । दूहने वालों से । किस से । किन दोनों से । किन से ।  
अनदुहः । अनदुद्भ्याम् । अस्मात् । अभ्याम् । एभ्यः ।  
अनदुद्भ्यः । इस से । इन दोनों से । इन से ।  
वतुभ्यः । यस्मात् । याभ्याम् । येभ्यः ।  
पशुभ्यः । जिस से । जिन दोनों से । जिन से ।  
पशुभ्यः । एतस्मात् । एताभ्याम् । एतेभ्यः ।  
अशुभ्यः । अशुभ्यः । इस से । इन दोनों से । इन से ।  
तस्मात् । ताभ्याम् । तेभ्यः । अमुस्मात् । अमुभ्याम् । अग्नीभ्यः ।  
उस से । उन दोनों से । उन से । इस से । इन दोनों से । इन से ।  
त्वत् । युवाभ्याम् । युष्मत् । उस से । उन दोनों से । उन से ।  
तुमसे । तुम दोनों से । तुम से । सम्राजः । सम्राड्भ्याम् ।  
मत् । आशाभ्याम् । अस्मत् । सम्राड्भ्यः ।

भूमृतः । भूमृद्भ्याम् । भूमृद्भ्यः । महिन्नः । महिमभ्याम् ।

धीमतः । धीमद्भ्याम् ।

महिमभ्यः ।

धीमतः ।

यज्वनः । यज्वभ्याम् । यज्वभ्यः ।

गच्छतः । गच्छद्भ्याम् ।

यूनः । युवभ्याम् । युवभ्यः ।

गच्छद्भ्यः ।

राज्ञः । राजभ्याम् । राजभ्यः ।

प्रशामः । प्रशान्भ्याम् । प्रशान्भ्यः । दण्डिनः । दण्डिभ्याम् ।

बुधः । भुद्भ्याम् । भुद्भ्यः ।

दण्डिभ्यः ।

अग्निमथः । अग्निमद्भ्याम् ।

पथः । पथिभ्याम् । पथिभ्यः ।

अग्निमद्भ्यः ।

वेधसः । वेधोभ्याम् । वेधोभ्यः ।

प्राचः । प्राग्भ्याम् । प्राग्भ्यः ।

विदुषः । विद्वद्भ्याम् । विद्वद्भ्यः ।

प्राञ्चः । प्राङ्भ्यम् । प्राङ्भ्यः ।

गरीयसः । गरीयोभ्याम् ।

उदीचः । उदभ्याम् । उदभ्यः ।

गरीयोभ्यः ।

पुंसः । पुम्भ्याम् । पुम्भ्यः ।

कोष ।

शकट=गाड़ी । छकड़ा ।

अभ्यार्हित=श्रेष्ठ ।

अरणि=अग्निमन्थनकाष्ठ ।

धातु ।

यह. प्रया. उभ. सक. = लेना । जानि. प्रपू. दिश. आत्म. अरु. =

पकड़ना ।

उत्पन्न हो ।

गृह्णाति ।

प्रजायन्ते ।

नी. अपपू. भ्या. उभ. सक. = (स) अपपू. । छट जाना ।

उतारना । टूर क. ।

अपसरति ।

अपनयति ।

(गम) अपपू. । टूर होना ।

वस. दिवा. पर. अरु. = डरना ।

अपगच्छति ।

वस्यन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

दुहो दुग्धं गृह्णाति । अनडुहो भारमपनयति । सम्राजस्त्रस्यन्ति  
सामन्ताः । भूमृद्भ्यः सरितः प्रजायन्ते । धीमतो विना न शोभते  
समा । गच्छतः शकटात् पतितः । प्रशामोऽन्यो न गरीयान् ।  
भुद्भ्यो भूपतयोऽपि नाभ्यर्हिताः । अग्निमथोऽरणिं गृह्णाति । महिम्नो  
भृष्टः । यज्वभ्यो विभ्यति देवाः । यूनः पूर्वं वृद्ध आगतः ।  
राज्ञ ऋते न कोऽपि प्रजापालनक्षमः । टण्डिनस्त्रस्यति श्वा ।  
पथोऽपसरति च्चाण्डालः । वेधसः प्रजाः प्रजायन्ते । गरीयसे विदु-  
षोऽध्येतव्यम् । अविचेकिनः पुंसः श्रीरपगच्छति ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

इलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिवः । द्युभ्याम् । द्युभ्यः । अमुष्याः । अमूष्याम् । अमूभ्यः ।  
आकाश से । दीनो आकाशो से । वाचः । वाग्भ्याम् । वाग्भ्याः ।

आकाशो से । स्रजः । स्रभ्याम् । स्रभ्यः ।

चतसृभ्यः । त्विषः । त्विष्टुभ्याम् । त्विष्टुभ्यः ।

तस्याः । ताभ्याम् । ताभ्यः । गिरः । गीभ्याम् । गीभ्यः ।

कस्याः । काभ्याम् । काभ्यः । आपदः । आपभ्याम् ।

अस्याः । आभ्यः । आभ्यः । आपद्भ्यः ।

अस्याः । याभ्याम् । याभ्यः । अद्भ्यः ।

एतस्याः । एताभ्याम् । एताभ्यः । दिशः । दिग्भ्याम् । दिग्भ्यः ।

क्रिप ।

मकरन्द=फूल का रस । कच्छप=कछुआ ।

धातु ।

च्युत. भ्वा. पर. अक.=करना ।

च्योवन्ति

संस्कृत वाक्य ।

दिवः पतन्ति तारकाः । स्रजश्च्योतन्ति मकरन्दाः । त्विषो  
विना न शोभते चन्द्रः । गिरो दूरे परं ब्रह्म । आपदो मुक्तः ।  
अद्भ्यो बहिर्निस्सरन्ति कच्छपाः । प्राच्या दिग्गः प्रतीर्षी याति रविः ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हतन्त नमुंसकलिङ्ग शब्द ।

घारः । वार्ष्याम् । वार्ष्यः । अहूः । अहोभ्याम् । अहोभ्यः ।  
जल से । दोनों जलों से । हविषः । हविर्भ्याम् । हविर्भ्यः ।  
जलों से । धनुषः । धनुर्भ्याम् । धनुर्भ्यः ।  
चतुर्भ्यः ।

संस्कृत वाक्य ।

वार्ष्य उन्मग्नः । अहूः पृथग् रात्रिः । हविष उद्गते गन्धः । धनुषो  
निर्गताः शराः ।

इन वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हिन्दी वाक्य ।

वेद ब्रह्मा से प्रगट हुए । कुलीन स्त्री पति के पीछे भोजन  
करती है । यह बात मेने । (अपने) मित्र से सुनी । राम के बिना  
सुख नहीं । पण्डित से पढ़ता है । राजा सकल विघ्नों से प्रजाओं  
की रक्षा करता है । दाता से अधिक कोई पुण्यवान नहीं है ।  
असज्जन सज्जनों से अलग होते हैं । बैल से दूर रहे ।

कन्याओं से बढ़कर और कोई दीन नहीं होता इस लिये  
उन पर संघर्षदा कृपा रखनी चाहिये । विघ्न लोग स्त्रियों से (अपने)  
मन को फेर लेते हैं । यह पतिव्रता स्त्री लक्ष्मी के तुल्य है ।  
धेनु से दूध दूहता है । नदी के समीप गाँव । बहुरों के बिना  
घर की शोभा नहीं होती । धन के बिना सुख नहीं । टेढ़ी भोषों  
से डरता है । नाव घर से उतारता है । स्पर्ध में गिरता है ।

मछली जल के बिना नहीं जी सकती। दही से घी निकलता है। बिना घान के मुक्ति नहीं होती। सहत के बदले में घी देता है।

शान्त (पुरुष) से बढ़कर कोई श्रेष्ठ नहीं है। राजा को छोड़कर प्रजा पालन में समर्थ कोई नहीं है। छोटे २ राजा चक्रवर्ती से डरते हैं। पण्डितों की अपेक्षा राजा भी श्रेष्ठ नहीं होते। देवता यज्ञ करने वालों से डरते हैं। बुद्धिमान के बिना सभा की शोभा नहीं होती। चाण्डाल राह में से हट जाता है। आग मयनेवाले से अरिण (मयने का काठ) लेना है। बेल पर से बोझा उतारता है। पहाड़ों से नदियां उत्पन्न होती हैं। दूहने वाले से दूध लेता है। चलते हुए छकड़े पर से गिरा। बड़ाई से रहित। जघान के पहिले बुद्धि आया। कुंता दण्डी से डरता है। श्रेष्ठ पण्डितों से पढ़ना चाहिये। ब्रह्मा से प्रजा उत्पन्न होती है। अविधेकी पुरुष (के पास) से लक्ष्मी चली जाती है।

क्रान्ति के बिना चन्द्रमा की शोभा नहीं होती। सूर्य पूरव दिशा से पश्चिम की ओर जाता है। आकाश से तारे गिरते हैं। परब्रह्म धवन के पथ से दूर है। माला से फूलों के रस टपकते हैं। कछुए पानी से बाहर निकलते हैं। त्रिपत्ति से छूटा।

होम की वस्तु से उठा गन्ध। जल से उतराया कछुआ। धनुष से छूटे वाण। दिन से अलग रात।

इन हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो।

हिन्दी शब्द।

पुल्लिङ्ग।

एकवच-

बालक से

लड़के से

द्विवच-

बालकों से

लड़कों से

मुनि से	मुनियों से
माली से	मालियों से
साधु से	साधुओं से
भालू से	भालुओं से
चैबे से	चैबेओं से
कोदो से	कोदोओं से

स्त्रीलिङ्ग ।

वात से	वातों से
गैया से	गैयाओं से
तिथि से	तिथियों से
नदी से	नदियों से
धेनु से	धेनुओं से
बहू से	बहूओं से
सरसों से	सरसोंओं से

कृष्ण पाठ ।

सम्बन्ध ।

पदार्थों की परस्पर सङ्गति अर्थात् मेल को सम्बन्ध कहते हैं। जैसे । देवदत्तस्य दासः । देवदत्त का दास । यहाँ देवदत्त और दास इन दोनों पदार्थों का आपस में स्वामित्व और सेवकत्व सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध प्रायः दो पदार्थों में रहता है। जिन दो पदार्थों में सम्बन्ध रहता है उन में से एक भेदक और दूसरा भेदा कहलाता है। जैसे उक्त उदाहरण में देवदत्त भेदक और दास भेदा है। क्योंकि यदि "दास" इतना ही कहते तो यह भेद न जान पड़ता कि किस का दास। परन्तु जब उस के साथ

यदि किसी सर्वनाम शब्द के साथ निमित्त शब्द अथवा उस के समानार्थक और किसी शब्द का प्रयोग रहे तो उन दोनों शब्दों के आगे प्रथमा आदि सब विभक्तियां आती हैं। जैसे। किं निमित्तं वसति। केन निमित्तेन कुस्मे निमिताय। किस निमित्त से बसता है। इत्यादि। ऐसे ही। किं कारणं वसति। को हेतुः किं प्रयोजनम्। किस कारण से बसता है। इत्यादि और यदि किसी सर्वनामभिन्न शब्द के साथ निमित्त शब्द अथवा उस के समानार्थक और किसी शब्द का प्रयोग रहे तो उन दोनों शब्दों के आगे प्रथमा और द्वितीया को छोड़ कर तृतीया आदि सकल विभक्तियां आती हैं। जैसे। धनेन निमित्तेन नृपतिः सेव्यः। धनाय निमिताय नृपतिः सेव्यः। धन के निमित्त राजा की सेवा करनी चाहिये। इत्यादि।

जिन शब्दों के अन्त में "अतसुच्" प्रत्यय अथवा उस के समानार्थक और कोई प्रत्यय हो उन के योग में पञ्चमी को बाधकर षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। यामस्य दक्षिणतः। गांव के दक्षिण। यहां दक्षिणतः इस शब्द में दक्षिणा शब्द के आगे अतसुच् प्रत्यय आया है। ऐसे ही। यामस्य पुरः। यामस्य पुरस्तात्। गांव के पूरव। यामस्य उपरि। यामस्य उपरिष्ठात्। गांव के ऊपर। इत्यादि प्रयोग जानो।

जिस शब्द के अन्त में "एनप्" प्रत्यय हो उस के योग में पञ्चमी को बाधकर द्वितीया और षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। दक्षिणेन यामं यामस्य वा। गांव के पास ही दक्षिण। यहां दक्षिणेन इस शब्द में दक्षिणा शब्द के आगे "एनप्" प्रत्यय आया है। और उस के योग में याम शब्द के आगे द्वितीया और षष्ठी विभक्तियां आते हैं।

जिन शब्दों का अर्थ दूर अथवा समीप हो उन के योग



में पृष्ठी और पञ्चमी दोनों विभक्तियां आती हैं। जैसे। दूर निकटं वा यामस्य यामाद् वा। गांध से दूर वा निकट।

जहां छा धातु का अर्थ ज्ञान से भिन्न हो वहां उस के करण के आगे सम्बन्धमात्र की विषया में पृष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। सर्पिणे जानीते। घी से प्रवृत्त होता है। यहां छा धातु का अर्थ प्रवृत्त होना है। इस लिये उस के करण संप्रदा (घी) के आगे तृतीया के बदले में पृष्ठी विभक्ति आई है।

स्मरणार्थक धातु, दय और ईश धातुं इन के कर्म के आगे सम्बन्धमात्र की विषया में पृष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। मातुः स्मरति। माता का स्मरण करता है। सर्पिणे दयते। घी देता है। जगत इष्टे। जगत का स्वामी होता है।

जहां कृच् धातु का अर्थ प्रतिषेध अर्थात् किसी वस्तु में कोई अपूर्व गुण उत्पन्न करना हो, वहां उस धातु के कर्म के आगे सम्बन्धमात्र की विषया में पृष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। रघोदकस्योपस्कुरुते। ईंधन पानी में अपूर्व गुण उत्पन्न करता है अर्थात् अग्नि के संयोग से उसे उष्ण करता है। यहां कृच् धातु का अर्थ प्रतिषेध है। इस लिये उस के कर्म दक (पानी) के आगे पृष्ठी विभक्ति आई है।

चर और सम्पूर्वक गिजन्त तप इन दोनों धातुओं के छोड़कर जिन रोगार्थक धातुओं का कर्म भाय अर्थात् भाय-प्रत्ययान्त शब्द से बोधित हो उन के कर्म के आगे सम्बन्धमात्र की विषया में पृष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। चोरस्य रुजति रोगः। रोग चोर को रोगी करता है। यहां रोगार्थक रुज धातु का कर्म भाय प्रत्ययान्त रोग शब्द से बोधित होगा है। इस लिये उस के कर्म चोर के आगे पृष्ठी विभक्ति आई है।

“देवदत्त का” यह पठ्यन्त पद कहा तो यह भेद ज्ञात हुआ कि देवदत्त नामक व्यक्ति का दास । भेदक को विशेषण और भेद्य को विशेष्य भी कहते हैं ।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में भेदक के आगे सम्बन्ध रूप अर्थ प्रकाश करने के लिये पृष्ठी विभक्ति आती है । संस्कृत में पृष्ठी विभक्ति के प्राय “स्य” इत्यादि चिह्न हैं । और हिन्दी में उस के “का” “के” “की” ये तीन चिह्न हैं । जैसे उक्त उदाहरण में संस्कृत में देवदत्त शब्द के आगे “स्य” चिह्न है और हिन्दी में उसी शब्द के आगे “का” चिह्न है । कहीं २ पृष्ठी विभक्ति के बदले में सम्बन्धी शब्द का भी प्रयोग करते हैं । जैसे । देवदत्त सम्बन्धी दास ।

संस्कृत में भेद्य के लिङ्ग और वचन के अनुसार भेदक के आगे पृष्ठी विभक्ति के चिह्न में कुछ विकार नहीं होता । परन्तु हिन्दी में यदि भेद्य शब्द पुलिङ्ग हो और उस के आगे प्रथमा का एक वचन रहे तो भेदक के आगे पृष्ठी का चिह्न “का” आवेगा । जैसे । देवदत्त का लड़का । और यदि प्रथमा का बहुवचन अथवा द्वितीया आदि छ विभक्तियों का कोई वचन रहे तो भेदक के आगे पृष्ठी चिह्न “के” आवेगा । जैसे । देवदत्त के लड़के । देवदत्त के लड़के को । देवदत्त के लड़कों को । इत्यादि ।

यदि भेद्य शब्द स्त्रीलिङ्ग हो तो उस के आगे चाहे जिस विभक्ति का जो वचन रहे सर्वत्र भेदक के आगे पृष्ठी विभक्ति का चिह्न “की” आवेगा । जैसे । देवदत्त की दासी । देवदत्त की दासियां । देवदत्त की दासी को । देवदत्त की दासियों को । इत्यादि ।

संस्कृत में पठ्यो विभक्ति ।

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

हस्

ओस्

आम्

अजन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

रामस्य । रामयोः । रामाणाम् । सख्युः । सख्योः । सखीनाम् ।

राम का । दोनों रामों का । रामों का । कतीनाम् ।

सर्वस्य । सर्वयोः । सर्वेषाम् । सुधियः । सुधियोः । सुधियाम् ।  
पयाणाम् । साधोः । साध्वोः । साधूनाम् ।

पूर्वस्य । पूर्वयोः । पूर्वेषाम् । स्वयम्भुवः । स्वयम्भुवोः । स्वयम्भु-  
वाम् ।

मुनेः । मुन्योः । मुनीनाम् । दातुः । दातोः । दातृणाम् ।

पत्युः । पत्योः । पतीनाम् । गोः । गवोः । गवाम् ।

संज्ञत वाक्य ।

रामस्य राजधान्ययोध्यासीत् । राज्ञः सर्वस्येष्टे । पयाणां  
वेदानामध्येता । मुनेः कमण्डलुः । पत्युः प्रिया । सख्युर्गृहम् ।  
सुधियां समुदायोऽव तिष्ठति । साधोस्पर्देशः । स्वयम्भुवः सृष्टिः ।  
दातुः पुण्यम् । गवां शाला ।

इन वाक्यों का हिन्दी में उक्त्य करो ।

• यदि किसी शब्द के साथ हेतु शब्द का प्रयोग हो और  
हेतु रूप अर्थ भी समझा जाय तो उन दोनों शब्दों के आगे पढ़ी  
विभक्ति आती है । जैसे । अन्नस्य हेतोर्यसति । अन्न हेतु से  
बसता है । यहां अन्न शब्द के साथ हेतु शब्द का प्रयोग है ।  
और हेतु रूप अर्थ भी समझा जाता है । इस लिये अन्न और हेतु  
दोनों शब्दों के आगे तृतीया के बदले में पढ़ी विभक्ति आई है ।

यदि किसी सर्वनाम शब्द के साथ हेतु शब्द का प्रयोग  
हो और हेतु रूप अर्थ भी समझा जाय तो उन दोनों शब्दों के आगे  
पढ़ी और तृतीया दोनों विभक्तियां आती हैं । जैसे । केन हेतुना  
बसति । कस्य हेतोर्यसति । किस हेतु से बसता है ।

आश्रय अर्थात् अभिलाष अर्थ के धाचक नाय धातु के कर्म के आगे सम्यन्धमात्र की विघटा में पृष्ठी विभक्ति आती है जैसे । सर्पियो नायते । घी का अभिलाष करता है । अर्थात् घी मेरे पास हो यह चाहता है ।

यदि जास, नि और प्र पूर्वक हन, नाट, काथ और पिष इन पांच धातुओं का हिंसा अर्थ हो तो इन के कर्म के आगे सम्यन्धमात्र की विघटा में पृष्ठी विभक्ति आती है । जैसे । चार-स्योज्जासयति । चार की हिंसा करता है । हन धातु के पूर्व नि और प्र ये दोनों उपसर्ग कहीं इकट्ठा कहीं एक एक और कहीं उलट पुलट कर रहते हैं । जैसे । चारस्य निप्रहन्ति । निहन्ति । प्रहन्ति । प्रणिहन्ति । चार की हिंसा करता है । खलस्यो-च्चाटयति । खल की हिंसा करता है । दुष्टस्य क्रोधयति । दुष्ट की हिंसा करता है । शशोः पिनष्टि शशु की हिंसा करता है ।

यदि वि और अव पूर्वक हू धातु और पण धातु इन दोनों का अर्थ एक ही हो तो इन के कर्म के आगे सम्यन्धमात्र की विघटा में पृष्ठी विभक्ति आती है । जूआ खेलने और बेंचने खरीदने के काम में ये दोनों धातु समानार्थक हैं । जैसे । गतस्य व्यग्रहरति पणते वा । सौ रूपियों का व्यवहार करता वा जूआ खेलता है । जहां पूर्वोक्त धातु समानार्थक नहीं रहते वहां पृष्ठी नहीं होगी । जैसे । गलाका व्यग्रहरति । गलाकाओं को गिनता है । ब्राह्मणं पणायते । ब्राह्मण की स्तुति करता है ।

यदि द्विध धातु का भी अर्थ जूआ खेलना और बेंचने खरीदने का व्यवहार हो तो उस के भी कर्म के आगे पृष्ठी विभक्ति आती है । जैसे । गतस्य द्वीव्यति । सौ रूपियों का व्यवहार करता वा जूआ खेलता है ।

यदि दिव धातु उपसर्ग सहित हो तो उस के कर्म के आगे षष्ठी विभक्ति विकल्प करके आती है। जैसे। शतस्य शतं वा प्रतिदीव्यति। सौ रूपैयां का व्यवहार करता वा जूआ खेलता है।

“कृत्वसुच्” प्रत्यय अथवा उस के समानार्थक और किसी प्रत्यय के योग में समय रूप आधार के वाचक शब्द के आगे सम्यन्धमात्र की विवचा में षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। पञ्च-कृत्वोऽहो भुङ्के। दिन भर में पांच बार खाता है। द्वि-हो भुङ्के। दिन भर में दो बार खाता है। यहां पञ्चकृत्वः इस शब्द में पञ्चन् शब्द के आगे कृत्वसुच् प्रत्यय और द्विः इस शब्द में द्वि शब्द के आगे सुच्प्रत्यय आया है और इन दोनों प्रत्ययों के योग में समय पद आधार के वाचक अहन् शब्द के आगे षष्ठी विभक्ति आई है।

स्मरण रखना चाहिये कि जहां जहां सम्यन्धमात्र की विवचा में षष्ठी विभक्ति कही गई है यहां सर्वत्र यदि वह विवचा न हो तो उचित विभक्तियां आवेंगी। जैसे। करण के आगे तृतीया इत्यादि।

जिन प्रत्ययों को कृत् सञ्जा होनी है वे जिन शब्दों के अन्त में हों उन के योग में कर्ता और कर्म दोनों के आगे षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। ब्रह्मणः कृतिः। ब्रह्मा की रचना। जगतः कर्ता ब्रह्मा। जगत् का रचने द्वारा ब्रह्मा। यहां कृत्प्रत्ययान्त कृति और कर्तुं इन शब्दों के योग में क्रम से ब्रह्मन् और जगत् शब्द के आगे षष्ठी विभक्ति आई है।

कृत्प्रत्ययान्त शब्द के योग में अप्रधान कर्म के आगे षष्ठी विभक्ति विकल्प करके आती है। जैसे। नेमाग्र्यस्य ग्रामं ग्रामस्य वा। घोड़े को गांव लेजानेवाला। यहां कृत्प्रत्ययान्त

नेतृ शब्द के योग में अप्रधान कर्म राम के आगे पृष्ठी विभक्ति विकल्प करके आई है।

जहां एक ही कृत् प्रत्यय के योग में कर्ता और कर्म दोनों के आगे पृष्ठी विभक्ति पाई जाय वहां केवल कर्म के आगे वह विभक्ति आती है कर्ता के आगे नहीं। जैसे। आश्वर्यां गवां दोहोऽगोपेन। गोप भिन्न (पुरुष के हाथ) से गौओं का दूहा जाना आश्वर्य है। यहां दोह शब्द में दुह धातु के आगे घञ् प्रत्यय है उस के योग में अगोप और गो इन दोनों शब्दों के आगे पृष्ठी विभक्ति पाई थी परन्तु वह केवल गो के आगे हुई अगोप के आगे नहीं हुई।

“स्त्रियां क्तिन्” इस सूत्र के अधिकार में जो अक और अकार प्रत्यय आते हैं उनके योग में उक्त नियम नहीं लगता। जैसे। भेदिका यच्चदत्तस्य घटस्य। यच्चदत्त का घड़ा फोरना। यहां भेदिका शब्द में भिद धातु के आगे भाव अर्थ में एवुल् प्रत्यय के स्थान में अक हुआ है। और चिकीर्षा देवदत्तस्य कटस्य। देवदत्त की घटाई बनाने की इच्छा। यहां चिकीर्षा शब्द में सन्नता कृ धातु के आगे भाव अर्थ में अकार प्रत्यय आया है। इन दोनों उदाहरणों में उक्त नियम नहीं लगा। अर्थात् केवल कर्म ही के आगे पृष्ठी विभक्ति नहीं आई किन्तु कर्ता और कर्म दोनों के आगे आई।

वर्तमानकालिक क्त प्रत्यय के योग में पृष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। राज्ञां मतः। राजाओं से माना जाता। राज्ञां बुद्धः। राजाओं से जाना जाता। राज्ञां पूजितः। राजाओं से पूजा जाता।

आदार रूप अर्थ के वाचक क्त प्रत्यय के योग में पृष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। इदमेषामासितम्। यह इन के बैठने

का स्थान । इदमेवां गतम् । यह इन के जाने का स्थान । इद-  
मेवां भुक्तम् । यह इन के भोजन का स्थान ।

लादेश, उ, उक्, अव्यय, निष्ठा खलर्थ और तृन् इन के  
योग में षष्ठी विभक्ति नहीं आती । लादेश प्रत्यय का उदा० ।  
ओदनं पचन् । ओदनं पचमानः । भातं पकाता हुआ । यहां लट्  
लकार के स्थान में क्रम से शतृ और शानच् प्रत्यय आये हैं । उ  
प्रत्यय का उदा० । कटं चिकीर्षुः । स्वभाव ही से चटाई बनाने की  
इच्छा रखने वाला । कन्यामलङ्कारिष्णुः । स्वभाव ही से कन्या का  
अलङ्कार करने वाला । यहां क्रम से उ और इष्णुच् प्रत्यय आये हैं ।  
उ इस अक्षर से उ और इष्णुच् दोनों प्रत्ययों का यहण होता है ।  
उक् प्रत्यय का उदा० । दैत्यन् घातुको हरिः । स्वभाव ही से  
दैत्यों का मारनेवाला हरि । यहां उक्ञ् प्रत्यय आया है । यदि  
क्रम ( इच्छा क. ) धातु के आगे उक्ञ् प्रत्यय रहे तो षष्ठी का  
निषेध नहीं होता अर्थात् षष्ठी आती ही है । जैसे । दास्याः  
कामुकः । स्वभाव ही से दासी का चाहने वाला । अव्यय का  
उदा० । कटं कृत्वा । चटाई बना कर । ओदनं भोक्तुम् । भात  
खाने को । यहां कृत्वा और भोक्तुम् ये दोनों अव्यय हैं । निष्ठा  
प्रत्यय का उदा० । विष्णुना हता दैत्याः । दैत्यान् हतयान्  
विष्णुः । विष्णु ने दैत्यों को मारा । यहां क्रम से क्त और क्तयत्  
प्रत्यय आये हैं । इन्ही दोनों प्रत्ययों को निष्ठा कहते हैं । खलर्थ  
प्रत्यय का उदा० । ईषत्करः कटो भयता । चटाई बनाना आप  
को सुगम है । यहां खल् प्रत्यय आया है । तृन् प्रत्यय का  
उदा० । तृन् प्रत्यय से शानन्, चानश्, शतृ और तृन् इन चार  
प्रत्ययों का यहण होता है । जैसे । सोमं पचमानः । सोमलता को  
पवित्र करने वाला । यहां शानन् प्रत्यय आया है । आत्मानं  
मण्डयमानः । स्वभाव ही से आप को भूषित करने वाला । यहां

चानश् प्रत्यय आया है। वेदमधीयन्। वेद पढ़ने वाला। यहां शतृ प्रत्यय आया है। लोकान् कर्ता। स्वभाव ही से लोकों का रचने वाला। यहां तृन् प्रत्यय आया है। यदि द्विष धातु के आगे शतृ प्रत्यय रहे तो उस के योग में षष्ठी विभक्ति का निषेध विकल्प करके होता है। जैसे। मुरस्य मुरं वा द्विषन्। मुर दैत्य से द्वेष रखने वाला। ऊपर लिखे हुए आदनं पचन् इत्यादि उदाहरणों में कृत प्रत्यय के योग में कर्ता और कर्म के आगे षष्ठी विभक्ति पाई रही उस का निषेध हुआ।

भविष्य काल में विहित अक प्रत्यय, और भविष्य काल और अधमर्ण रूप अर्थ में विहित इन् प्रत्यय के योग में षष्ठी विभक्ति नहीं आती। जैसे। कटं कारको व्रजति। चटाई बनाने वाला जाता है। यहां भविष्य काल में विहित षबुल् प्रत्यय के स्थान में अक आदेश हुआ है। ग्रामं गामी। गांव जाने वाला। यहां भविष्य काल में णिनि प्रत्यय आया है। शतं दायी। सौ रूपये देने वाला। यहां अधमर्ण रूप अर्थ में णिनि प्रत्यय आया है। अधमर्ण फण लेने वाले को कहते हैं।

कृत्य प्रत्यय के योग में कर्ता के आगे षष्ठी विभक्ति विकल्प करके आती है। जैसे। त्वया तव वा कटः कर्तव्यः। तुझे चटाई बनाना चाहिये।

तुला और उपमा इन दो शब्दों को छोड़कर इतर सकल तुल्यअर्थवाचक शब्दों के योग में तृतीया और षष्ठी विभक्ति आती है। जैसे। देवदत्तस्य देवदत्तेन वा तुल्यः। देवदत्त के तुल्य। देवदत्तस्य देवदत्तेन वा सदृशः। देवदत्त के सदृश। जहां तुला अथवा उपमा शब्द का योग रहता है वहां तृतीया नहीं आती केवल षष्ठी आती है। जैसे। तुला उपमा वा कृष्णस्य नास्ति। कृष्ण की उपमा नहीं है।



जहाँ आशिय अर्थ समझा जाय वहाँ आयुष्य, मद्र, भद्र, कुशल, सुख, अर्थ, और हित इन शब्दों के योग में चतुर्थी विभक्ति विकल्प करके आती है। पक्ष में पढ़ी होती है। जैसे। आयुष्यं देवदत्ताय देवदत्तस्य वा भूयात्। ईश्वर करे देवदत्त को आयुष्य हो। ऐसे ही मद्र भद्र आदि शब्दों के योग में भी जानो। यहाँ आयुष्य आदि शब्दों से उन के समानार्थक और शब्द भी समझे जाते हैं। जैसे। धिरजीवितं देवदत्ताय देवदत्तस्य वा भूयात्। ईश्वर करे देवदत्त बहुत दिन जीए ॥

हिन्दी में कितने एक भेदवाचक शब्द ऐसे हैं कि चाहे वे जिस लिङ्ग और जिस बचन के हों परन्तु उन के योग में भेदक के आगे केवल "के" चिह्न आता है। जैसे। यह बालक रामदत्त के सदृश है। यह स्त्री उस के अधीन है। इत्यादि।

अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

रमायाः । रमयोः । रमाणाम् । स्त्रियाः स्त्रियोः । स्त्रीणाम् ।

रमा का । दोनों रमाओं का । धेन्याः । धेनोः । धेन्योः । धेनु-  
रमाओं का । नाम् ।

सर्वस्याः सर्वयोः । सर्वाणाम् । पथ्याः । पथ्योः पथूनाम् ।

तिसृणाम् । भुधाः । भुधः । भुधोः । भूणाम् ।

मत्याः । मतेः । मत्योः । मती- भुयाम् ।

नाम् । दुहितुः । दुहितोः । दुहितृणाम् ।

नाद्याः । नद्योः नदीनाम् । द्योः । द्योः । द्यशम् ।

श्रियाः । श्रियः । श्रियोः । श्रीणा-नायः । नायोः । नायाम् ।

म् । श्रियाम् ।

संस्कृत वाक्य ।

रमा विलासः । भूपतिः सर्वाणां प्रजानां पिता । तिसृषां  
विद्वानां पारगः । मनेः स्फूर्तिः । नद्या दक्षिणतो गमः । श्रियः

पतिः । स्त्रीणामासितम् । रोचते मह्यं धेनूनां दोहः कृष्णेन ।  
घध्याः पतिकुले स्थितिः समुधिता भुवः क्षम्यः । दुहितुर्धनं न  
याह्यम् । दोर्नर्मल्यम् । नात्रो गुणवृक्षः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

अतन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

ज्ञानस्य । ज्ञानयोः । ज्ञानानाम् । दध्नः । दध्नोः । दध्नाम् ।

ज्ञान का । दोनों ज्ञानों का । मधुनः । मधुनोः । मधुनाम् ।

ज्ञानों का ।

धारिणः । धारिणोः । धारीणाम् ।

संस्कृत वाक्य ।

भक्तिज्ञानस्य कारणम् । धारिणो विभित्सा यज्ञदत्तस्य ।

दध्नः सारो घृतम् । मधुनो ज्ञानम् ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

उतन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

दूहः । दूहोः । दूहाम् । तव । ते युधयोः । धाम् । युष्मा-

दूहने वाले का । दोनों दू- कम् । धः ।

हने वालों का । दूहने वालों तीरा । तुम दोनों का । तुम्हारा ।

का । मम । मे । आवयोः । नौ ।

अनडुहः । अनडुहोः । अनडुहाम् । अस्माकम् । नः ।

चतुर्णाम् । मेरा । हम दोनों का ।

पञ्चानाम् । हमारा ।

पणाम् । कस्य । कयोः । केषाम् ।

अष्टानाम् । किस का । किन दोनों का ।

तस्य । तयोः । तेषाम् । किन का ।

उस का । उन दोनों का । अस्य । अनयोः । एनयोः ।

उन का । एषाम् ।

इस का । इन दोनों का । बुधः । बुधोः । बुधाम् ।

इन का । अग्निमयः । अग्निमयोः ।

यस्य । यथोः । येषाम् । अग्निमथाम् ।

जिस का । जिन दोनों का । प्राचः । प्राचोः । प्राचाम् ।

जिन का । प्राञ्चः । प्राञ्चोः । प्राञ्चाम् ।

एतस्य । एतयोः । एतयोः । उदीचः । उदीचोः । उदीचाम् ।

एतेषाम् । महिम्नः । महिम्नोः । महिम्नाम् ।

इस का । इन दोनों का । यज्वनः । यज्वनोः । यज्वनाम् ।

इन का । यूनः । यूनोः । यूनान् ।

अमुय । अमुयोः । अमीयाम् । राक्षः । राक्षोः । राक्षाम् ।

इस का । इन दोनों का । इन का । दण्डिनः । दण्डिनोः । दण्डिनाम् ।

उस का । उन दोनों का । उनका । पयः । पयोः । पयाम् ।

समाजः । समाजोः । समाजाम् । वेधसः । वेधसोः । वेधसाम् ।

भूमृगः । भूमृगोः । भूमृगाम् । विटुषः । विटुषोः । विटुषाम् ।

धीमतः । धीमतोः । धीमतम् । गरीयसः । गरीयसोः । गरीयसाम् ।

गच्छतः । गच्छतोः । गच्छताम् । पुंसः । पुंसोः । पुंसाम् ।

प्रगामः । प्रगामोः । प्रगामाम् ।

संस्कृत धषय ।

दुहो घेतनत् । अनडुहो वन्धनम् । कम्य हेतोर्गच्छति ।

समाजो विजयः । भूमृगः गृहम् । धीमत ईश्वरः सेव्यः । गच्छतो

न किञ्चिद् दूरम् । प्रगाम आदरः कार्य्यः । युधो धानम् । अग्नि-

मय आसनम् । महिम्नो हेतुर्विद्यां पठति । यज्वनः पुण्यम् ।

यूनः पौरुषम् । राक्षः पूजितः । दण्डिनः कमण्डलुः । पयो दक्षि-

यातः वेधम् । वेधसः सदृशः । विटुषो हितम् । गरीयसो मानः ।

पुंसो धर्मः ।

इत संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उच्चारण करो ।

हलन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिवः । दिवोः । दिवाम् । एतस्याः । एतयोः । एनयोः ।  
 आकाश का । दोनों आकाशों का । एतासाम् ।  
 आकाशों का । अमुष्याः । अमुयोः । अमूषाम् ।  
 चतसृणाम् । घाघः । घाघोः । घाघाम् ।  
 तस्याः । तयोः । तासाम् । स्रजः । स्रजोः । स्रजाम् ।  
 कस्याः । कयोः । कासम् । त्विषः । त्विषोः । त्विषाम् ।  
 अस्यः । अनयोः । एनयोः । गिरः । गिरोः । गिराम् ।  
 आसाम् । आपद्ः । आपदोः । आपदाम् ।  
 यस्याः । ययोः । यासाम् । अपाम् ।  
 दिशः । दिशोः । दिशाम् ।

संस्कृत वाक्य ।

दिवो गुणः शब्दः । घाघो विस्तरः । स्रजः दूचम् । त्विष  
 आश्रयः । गिरां पतिः । आपदां हन्ता । अपां तृप्तः । दिशां स्वामी ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

घारः । घारोः । धाराम् । अहूः । अहोः । अहूम् ।  
 जल का । दोनों जलों का । हविषः । हविषोः । हविषाम् ।  
 जलों का । धनुषः । धनुषोः । धनुषाम् ।  
 चतुष्पात्

संस्कृत वाक्य ।

घारां निधिः । अहो द्विभुङ्क्ते । हविषो गन्धः । धनुषः  
 प्रत्यङ्गा ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हिन्दी वाक्य ।

तीन वेदों का पढ़ने वाला । यहाँ पवित्रों की मण्डली

हे । अयोध्या राम की राजधानी थी । मुनि का कमण्डल । साधु का उपदेश । राजा सत्र का स्वामी होता है । पति की प्यारी । ब्रह्मा की सृष्टि । बेलों की शाला । मित्र का घर । दाता का पुण्य ।

कृष्ण का गौ । दूहना मुझे अच्छा लगता है । नदी के दक्खिन गांध । राजा ( अपनी ) सकल प्रजाओं का पिता होता है । लक्ष्मी का विलास । तीन विद्याओं में पारङ्गत । लक्ष्मी का स्वामी । बहू को ( अपने ) पति के घर रहना उचित है । स्त्रियों के बैठने का स्थान । बुद्धि की स्फूर्ति । नाव का मस्तूल । भों का हिलना । आकाश की निर्मलता । कन्या का धन नहीं लेना चाहिये ।

दही का सारांश घी । भक्ति ज्ञान का कारण होती है । सहित से प्रवृत्ति । यज्ञदत्त की जल के ( सोते के ) फोरने की इच्छा ।

घड़ाई के लिये चिंदा पढ़ता है । बुद्धिमान को ईश्वर की सेवा करनी चाहिये । दूहने वाले की चाकरी । युवा ( पुरुष ) की मनुसाई । पहाड़ की चोटी । दरवाजा का कमण्डल । पण्डित का हित । शान्त ( पुरुष ) का आदर किया चाहिये । चक्रवर्ती का विजय । आग मचने वाले का आसन । राजा ( के हाथ ) से पूजा जाता । बेल का पगहा । यज्ञ करने वाले का पुण्य । राह की दक्खिन ओर खेत । चलने वाले को कुछ दूर नहीं है । किस कारण जाता है । पुरुष का धर्म । अष्ट पुरुष का सम्मान । ब्रह्मा के सदृश ।

माला का सूत । विपत्तियों का दूर करने वाला । आकाश का गुण शब्द है । जल से तृप्त । कान्ति का आधार । दिशाओं का स्वामी । धचन का विस्तार । वाणियों का स्वामी ।

दिन में दो बार भोजन करता है । धनुष की डोरी । जल का निधि । होम की वस्तु का गन्ध ।

इन वाक्यों का संस्कृत में उल्था करो ।

हिन्दी शब्द ।

पुल्लिङ्ग ।

एकवच.

बालक का-के की  
लड़के का के की  
मुनि का के की  
माली का के की  
साधु का के की  
भालू का-के-की  
चाब्रे का-के-की  
कोदो का के-की

बहुवच.

बालकों का-के की  
लड़कों का के-की  
मुनियों का-के-की  
मालियों का के-की  
साधुओं का-के की  
भालुओं का के की  
चाब्रेओं का के की  
कोदोओं का के की

स्त्रिलिङ्ग ।

बात का-के-की  
गेया का-के की  
तिथि का-के-की  
नदी का-के की  
धेनु का-के की  
बहू का के की  
सरसों का-के-की

बातों का-के-की  
गेयाओं का-के-की  
तिथियों का के-की  
नदियों का-के-की  
धेनुओं का-के-की  
बहूओं का-के की  
सरसोंओं का-के-की

सातवां पाठ ।

अधिकरण कारक ।

अधिकरण उसे कहते हैं जो कर्ता और कर्म के द्वारा उन दोनों की क्रियाओं का आधार हो । जैसे । देवदत्तो गृह आदनं पचति । देवदत्त घर में भात पकाता है । यहां घर देवदत्त के द्वारा

उसकी पकाना क्रिया का आधार है। और यज्ञदत्तः स्याल्यामोदनं पचति। यज्ञदत्त बटलोही में भात पकाता है। यहां बटलोही भात के द्वारा उसकी पकना क्रिया का आधार है।

जिस में कोई वस्तु रहे उसे आधार और जो रहे उसे आधेय कहते हैं।

आधार तीन प्रकार का होता है औपश्लेषिक वैषयिक और अभिव्यापक। औपश्लेषिक उस आधार को कहते हैं जिस के एक अंश में आधेय रहे। जैसे। यज्ञदत्तः कटे आस्ते। यज्ञदत्त चटाई पर बैठा है। यहां चटाई औपश्लेषिक आधार है। क्योंकि यज्ञदत्त उस के एक भाग में रहता है। वैषयिक उस आधार को कहते हैं जिस के विषय में आधेय हो। जैसे। मोक्षे इच्छास्ति। मोक्ष के विषय में इच्छा है। यहां मोक्ष वैषयिक आधार है। क्योंकि इच्छा उस के विषय में होती है। अभिव्यापक उस आधार को कहते हैं जिस के सब अंशों में आधेय रहे। जैसे। तिले तैलमस्ति। तिल में तेल है। यहां तिल अभिव्यापक आधार है। क्योंकि तेल उसके सब अंशों में रहता है। कोई २ वैषाकरण सामीपिक नाम चौथा आधार मानते हैं। जैसे। नद्यां यामः। नदी के समीप गावं है।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में अधिकरण के आगे सप्तमी विभक्ति आती है। संस्कृत में सप्तमी विभक्ति के प्राय "०" इत्यादि चिह्न हैं। और हिन्दी में उसका "में" चिह्न है। जैसे। गृहेऽस्ति। घर में है। इस उदाहरण में संस्कृत में गृह शब्द के अन्त में ० चिह्न है और हिन्दी में घर शब्द के आगे "में" चिह्न है। कहीं २ "के विषय में" "पर" इत्यादि चिह्न भी आते हैं।

संस्कृत में सप्तमी विभक्ति।

एकवच.  
हि

द्विवच.  
ओम्

बहुवच.  
सुप्

## अजन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

रामे । रामयोः । रामेषु ।	सख्यौ । सख्योः । सखिषु ।
राम मे । दोनें रामो मे । रामो मे । कतिषु ।	
सर्वस्मिन् । सर्वयोः । सर्वेषु ।	सुधियि । सुधियोः । सुधीषु ।
विषु ।	साधौ । साध्वोः साधुषु ।
पूर्वस्मिन् । पूर्व । पूर्वयोः । पूर्वेषु ।	स्वयम्भुवि । स्वयम्भुवोः ।
मुने । मुन्योः । मुनिषु ।	स्वयम्भूषु ।
पत्यौ । पत्योः । पतिषु ।	दातरि । दात्रोः । दातृषु ।
	गावि । गवोः । गोषु ।

## संस्कृत वाक्य ।

रामेऽनुरागः । सर्वस्मिन्नात्मास्ति । विषु लोकेषु विश्रुतः ।  
मुनो भक्तिः । पत्यौ प्रीतिः । सख्यौ स्नेहः । सुधियि प्रियवचनम् ।  
साधौ साधुः । दातरि याचना । गवि दया ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

दूर अन्तिक और इन के समानार्थक इतर शब्दों के आगे भी सप्रती विभक्ति आती है । जैसे । यामस्य दूरे । गावं से दूर । यामस्यान्तिके गांव के पास । यामस्य निकटे गावं के समीप ।

जिस ल प्रत्ययान्त शब्द के अनन्तर इन् प्रत्यय आवे उस के कर्मके आगे सप्रती विभक्ति आती है । जैसे । व्याकरणे ऽधीती देवदत्तः । व्याकरण पढ़ा हुआ देवदत्त । यहाँ ल प्रत्ययान्त । अधीत शब्द के आगे इन् प्रत्यय आया है । इस लिये उस के कर्म के वाचक व्याकरण शब्द के आगे सप्रती विभक्ति आई है ।

साधु और असाधु इन दोनों शब्दों में से प्रत्येक के योग में सप्रती विभक्ति आती है । जैसे । साधुः कृष्णो मातरि, असाधुर्मातुले । कृष्ण माता के लिये साधु और मामा (कंस) के लिये असाधु (ये) ।



यदि किसी क्रिया के फल के साथ उसके कर्म का सम्बन्ध हो तो उस फल के वाचक शब्द के आगे सप्तमी विभक्ति आती है। जैसे। व्याधश्चर्मणि द्वीपिनं हन्ति। व्याध चाम के निमित्त वाच के मारता है। यहां मारना क्रिया के फल चाम के साथ उस के कर्म वाच का समवाय सम्बन्ध है। इस लिये उस फल के वाचक चर्म शब्द के आगे सप्तमी विभक्ति आई है। यहां हेतुवाचक शब्द के आगे तृतीया आई रही।

जहां किसी एक पदार्थ की क्रिया से किसी दूसरे पदार्थ की क्रिया समझी जाय वहां उस प्रथम पदार्थ और उस की क्रिया के वाचक शब्दों के आगे सप्तमी विभक्ति आती है। जैसे। गोपु दुह्यमानासु कृष्णदत्तो गतः। जब गाय दूही जाती थीं कृष्णदत्त गया। यहां गायों की दूही जाना क्रिया से कृष्णदत्त की गमन क्रिया समझी जाती है। इस लिये गाय के वाचक गो शब्द और उन की क्रिया के वाचक दुह्यमान शब्द दोनों के आगे सप्तमी विभक्ति आई है।

जहां एक पदार्थ की क्रिया से दूसरे पदार्थ की क्रिया समझी जाय और उस प्रथम पदार्थ का अनादर भी सूचित हो वहां प्रथम पदार्थ के वाचक शब्द के आगे षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियां आती हैं। जैसे। रुदतो रुदति वा प्राशजोत्। रोते हुए पुत्र आदिकों का अनादर करके सन्यासी हो गया।

स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद, साक्षी, प्रतिभू, और प्रभूत इन शब्दों के योग में षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियां आती हैं। जैसे। गथां गोपु वा स्वामी। गोषों का स्वामी। गथां गोपु वा ईश्वरः। गोषों का ईश्वर। गथां गोपु वा अधिपतिः। गोषों का अधिपति। गथां गोपु वा दायादः। गोषों का दायाद। गथां गोपु वा साक्षी। गोषों का साक्षी। गथां गोपु वा प्रतिभूः।

गौत्रों का जामिन । गशं गोपु वा प्रसूतः । अर्थात् गौत्रों ही का अनुभव करने के लिये उत्पन्न हुआ ।

यदि तत्पर होना अर्थ प्रकाशित हो तो आयुक्त और कुशल इन दोनों शब्दों में से प्रत्येक के योग में षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियां आती हैं । जैसे । आयुक्तो हरिपूजनस्य हरिपूजने वा । हरि की पूजा में आयुक्त अर्थात् नियुक्त । कुशलो हरिपूजनस्य हरिपूजने वा । हरि की पूजा में कुशल अर्थात् निपुण । जहां तत्पर होना अर्थ नहीं प्रकाशित होता वहां षष्ठी नहीं किन्तु केशल सप्तमी आती है । जैसे । आयुक्तो गोः शकटे । ऋकडे में कुछ जाता हुआ बेल । यहां तत्पर होना अर्थ नहीं प्रकाशित है । इस लिये आयुक्त शब्द के योग में शकट शब्द के आगे केशल सप्तमी विभक्ति आई है ।

जाति गुण अथवा क्रिया के द्वारा किसी समुदाय से एक वस्तु को अलग समझना निर्द्धारण कहलाता है । जिस समुदाय से निर्द्धारण हो अर्थात् एक वस्तु अलग समझी जाय उस के वाचक शब्द के आगे षष्ठी और सप्तमी दोनों विभक्तियां आती हैं । जाति का उदा० । मनुष्याणां मनुष्येषु वा चरियः शूरतमः । मनुष्यों में चची बड़े शूर होते हैं । यहां चरियत्व जाति के द्वारा मनुष्य समुदाय से चची को अलग समझते हैं । गुण का उदा० । गशं गोपु वा कृष्णा बहुदीरा । गौत्रों में से काली गो बहुत दुधार होती है । यहां कृष्ण गुण के द्वारा गो समुदाय से काली गो को अलग समझते हैं । क्रिया का उदा० । अध्वगानामध्वगेषु वा धावन् शीघ्रः । पथ चलने वालों में धावन शीघ्रगामी होता है । यहां दौड़ना क्रिया के द्वारा बटोही समुदाय से धावन को अलग समझते हैं ।

यदि प्रशंसा अर्थ प्रकाशित हो और प्रति, परि, और अनु

इन अव्ययों में से किसी का-योग न हो तो साधु और निपुण इन दोनों शब्दों के योग में सप्रमी विभक्ति आती है । जैसे ।  
 मातरि साधुः । माता के विषय में साधु । पितरि निपुणः । पिता के विषय में निपुण । जहाँ प्रशंसा नहीं किन्तु यथायं कथन हो वहाँ सप्रमी नहीं होती । जैसे । निपुणो राज्ञो भृत्यः । राजा का निपुण भृत्य । और जहाँ प्रति आदि का योग रहता है वहाँ भी सप्रमी नहीं होती । जैसे । साधुमातरं प्रति । माता के विषय में साधु ।

प्रसित और उत्सुक इन दोनों शब्दों में से प्रत्येक के योग में तृतीया और सप्रमी दोनों विभक्तियाँ आती हैं । जैसे । प्रसितो हरौ हरिणा वा । हरि में सत्पर । उत्सुको हरौ हरिणा वा । हरि में उद्योगी ।

यदि किसी नववचक शब्द के आगे कोई प्रत्यय लाकर उस का लोप लुप् शब्द से किया जाय तो उस प्रत्यय के अर्थ के वाचक शब्द के आगे अधिकरण अर्थ में तृतीया और सप्रमी दोनों विभक्तियाँ आती हैं । जैसे । मूलेन मूले वा देवीमायाहयेत् । मूल नवच में देवी का आश्रयन करना चाहिये । यहाँ मूल शब्द के आगे मूल नवच युक्त काल अर्थ में "अय्" प्रत्यय लाकर उस का लोप "लुग्रयिणेरे" इस मूच से किया गया है । इस लिये मूल नवच युक्त काल के वाचक मूल शब्द के आगे तृतीया और सप्रमी दोनों विभक्तियाँ आरंभ हैं ।

यदि कर्तृत्व आदि दो शक्तियों के बीच में कोई समय अवयव पद्य रहे तो उस के वाचक शब्द के आगे सप्रमी और सप्रमी दोनों विभक्तियाँ आती हैं । जैसे । अद्य भुङ्क्ते देवदत्तो हृदे हृदाद्वा भोक्ता । देवदत्त आज भोजन करके दो दिनों के अनन्तर खाएगा । यहाँ दो कर्तृत्व शक्तियों के मध्य में काल

हे । और । इह स्थोऽयं क्रोशे क्रोशाद्वा लक्ष्यं विद्मति । यह ( पुरुष )  
 यहां बैठा हुआ कोस भर पर लक्ष्य बेधता है । यहां कर्मत्व  
 और कर्मत्व दो शक्तियों के बीच में पद्य है । इस लिये क्रम  
 से इह और क्रोश दोनों शब्दों में से प्रत्येक के आगे सप्रमी और  
 पञ्चमी दोनों विभक्तियां आई हैं ॥

अधिक शब्द के योग में सप्रमी और पञ्चमी दोनों विभ-  
 क्तियां आती हैं । जैसे । लेके लोकाद्वाधिको हरिः । लोक से  
 अधिक हरि ।

जहां अधिकता प्रकाशित हो वहां उप इस अव्यय के  
 योग में जिस वस्तु से कोई वस्तु अधिक समझी जाय उस के  
 वाचक शब्द के आगे सप्रमी विभक्ति आती है । जैसे । उप  
 पराद्धं हरेगुणाः । हरि के गुण पराद्धं सङ्घा से अधिक हैं । पराद्धं  
 अन्तिम सङ्घा का नाम है ।

जहां स्वस्वामिभाव सम्बन्ध प्रकाशित हो वहां अधि इस  
 अव्यय के योग में स्ववाचक और स्वामिवाचक दोनों शब्दों के  
 आगे पारापारी सप्रमी विभक्ति आती है । जैसे । अधि भुवि  
 रामः । पृथ्वी के राम । यहां स्व ( धन ) वाचक “ भू ” शब्द  
 के आगे सप्रमी विभक्ति आई है । अधिरामे भूः । राम की  
 पृथ्वी । यहां स्वामी वाचक राम शब्द के आगे सप्रमी विभक्ति  
 आई है ।

अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

रमायाम् । रमयोः । रमासु । मत्याम् । मतो । मत्योः । मतिषु ।

रमा में । दोनों रमाओं में । नद्याम् । नद्योः । नदीषु ।

रमाओं में । श्रियाम् । श्रियि । श्रियोः । श्रीयु ।

सर्वस्याम् । सर्वयोः । सर्वासु । स्त्रियाम् । स्त्रियोः । स्त्रीषु ।

तिष्ठु । धेन्वाम् । धेनो । धेन्वोः । धेनुषु ।

घध्वासु । वध्वोः । वधूपु । दधि । दधोः । दधिपु ।  
 भ्रुवासु । भ्रुवि । भ्रुवोः । भ्रूपु । नाधि । नधोः । नधिपु ।  
 दुहितरि । दुहिचोः । दुहितृषु ।  
 धातु ।

रज्ज. अनुपू. दिवा. उभय. अक =  
 प्रीति क. ।  
 अनुरज्यन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

रमायामुत्सुको हरिः । सर्वोस्वयस्यासु धर्ममाचरेत् ।  
 कवीनां मतो भारती तिष्ठति । नद्यां यामः । श्रियामनुरज्यन्ति  
 लोकाः । स्त्रीषु सास्त्री स्वर्गं गच्छति । धेनुषु दुह्यमानास्यागता  
 देवदत्तः । घधूपु सन्तुष्टासु श्रीरधते । सम्राजो । भ्रुवि कुटिलायां जग-  
 द्विभेति । दुहितरि छेदः । दधि परिभ्रमन्ति यहाः । नाधि तिष्ठति ।  
 इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

अजन्त नपुंसकलिङ्ग ।

चाने । चानयोः । चानेषु । चारिणि । चारियोः । चारिपु ।  
 चानमै । दानो चानोमै । चानोमै । दधि । दधनि । दधोः । दधिपु  
 मधुनि । मधुनोः । मधुपु ।

संस्कृत वाक्य ।

चाने मुक्तिर्यथेष्यिता । चारिणि पद्मानि शोभन्ते । दधि  
 घृतं तिष्ठति । मधुनि लुब्धो भ्रमरः ।  
 इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हतन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

दुहि । दुहोः । धुपु । अनहुद्दि । अनहुद्दोः । अनहुत्सु ।  
 दूहने घाले में । दानो दूहने चतुर्षु ।  
 घालो में । दूहने घालो में । धुपु ।

पट्सु ।	भूमृति । भूमृतेः । भूमृत्सु ।
अष्टसु । अष्टासु ।	धीमति । धीमतेः । धीमत्सु ।
तस्मिन् । तयोः । तेषु ।	गच्छति । गच्छतेः । गच्छत्सु ।
उस में । उन दोनों में । उन में ।	प्रगामि । प्रगामोः । प्रगान्सु ।
त्वयि । युथयोः । युष्मासु ।	बुधि । बुधोः । बुत्सु ।
तुम् में । तुम दोनों में । तुम में ।	अग्निमयि । अग्निमयोः । अग्नि- मयि । आवयोः । अस्मासु ।
मुम् में । हम दोनों में । हम में ।	प्राचि । प्राचोः । प्राक्षु ।
कस्मिन् । कयोः । केषु ।	प्राञ्चि । प्राञ्चोः । प्राङ्क्षु । प्राङ्क्षुषु ।
किस में । किन दोनों में । किन में ।	प्राङ्क्षु ।
अस्मिन् । अनयोः । अनयोः ।	एषु । उदीचि । उदीचोः । उदक्षु ।
इस में । इन दोनों में । इन में ।	महिम्नि । महिम्नोः । महिमसु ।
यस्मिन् । ययोः । येषु ।	यज्वनि । यज्वनोः । यज्वसु ।
जिस में । जिन दोनों में । जिन में ।	यूनि । यूनोः । युवसु ।
एतस्मिन् । एतयोः । एतयोः ।	राञ्चि । राजनि । राजोः । राजसु ।
एतेषु ।	दृष्टिङनि । दृष्टिङनोः । दृष्टिङ्सु ।
इस में । इन दोनों में । इन में ।	पथि । पथोः । पथिषु ।
अमुष्मिन् । अमुयोः । अमीषु ।	वेधसि । वेधसोः । वेधस्सु ।
इस में । इन दोनों में । इन में ।	विदुषि । विदुषोः । विद्वत्सु ।
उस में । उन दोनों में । उन में ।	गरीयसि । गरीयसोः । गरीयस्सु ।
समाजि । समाजोः । समाट्सु ।	पुंसि । पुंसोः । पुंसु ।

धातु ।

अम. विपूर्वक. दिवा. पर. अक. = वस. निपूर्वक. भ्या पर. अक. =  
विशाम क. वसना ।  
विशाम्यति । निवसन्ति ।

संस्कृत वाक्य ।

कृष्यो दुहि गावो बहुचोरा बभूवुः । शङ्करो ऽनदुहि स्थितः ।  
चतुर्षु वेदेष्वधीती । सम्राट्सु श्रीमती विजयिनी देव्याधिकप्रतापा ।  
भूमृत्सु हिमालयोऽत्युन्नः । धीमति छात्रेऽध्यापकस्य परिश्रमः सफ-  
लत्वमेति । गच्छत्सु धायन् शीघ्रः । प्रशाम्यनुरज्यति लोकः । बुध्या-  
गच्छत्यभ्युत्तिष्ठेत् । अग्निमथ्याग्निं मथति देवा हृष्यन्ति । महिम्नि-  
कस्य नाभिजापः । यज्वनि प्रीति । यूनि पुत्रे धनमाश्रयन्ति विद्याः ।  
राजसु स्वामिनी श्रीमती भारतेश्वरी । दण्डिनि मृते तस्य दाहे  
न भवति । पथि विलङ्घिते विश्राम्यति पथिकः । वेधसि भक्तिः ।  
विदुषि पुत्रे हृष्यति पिता । गरीयसि पुंसि सद्गुणा नियसन्ति ।

इत संस्कृत वाक्या का हिन्दी में उल्या करो ।

उत्तम स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

दिवि । दिवोः । दुषु ।	एतस्याम् । एतयोः । एनयोः ।
अकाश मे । दोनां अकाशो मे ।	एतासु ।
अकाशो मे ।	अमुष्याम् । अमुष्योः । अमुषु ।
चतसृषु ।	वाची । वाचोः । वासु ।
तस्याम् । तयोः । तासु ।	स्रजि । स्रजोः । स्रसु ।
कस्याम् । कयोः । कासु ।	त्वयि । त्वयोः । त्विट्मु । त्वि-
अस्याम् । अनयोः । एनयोः ।	ट्स्सु ।
आसु ।	गिरि । गिरोः । गीर्षु ।
यस्याम् । ययोः । यासु ।	आपदि । आपदोः । आपट्मु ।
	अप्सु ।
	द्वियि । द्वियोः । द्विसु ।

संस्कृत वाक्य ।

दिवि विद्योतन्ते तारकाः । चतसृषु दिषु चत्वारो गजाः  
सन्ति । वाचि तिष्ठन्ति धार्मिकाः । स्रजि हृष्यन्ति । अन्तम्य स्थिति

विकसन्ति कुमुदानि । गोपुष्पाम्नी । आपदि धैर्यम् । अप्सु निव-  
सन्ति जलजन्तवः ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में उल्था करो ।

हलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

वारि । वारोः । वार्यु । . . . . . आहू । अहनि । अहोः । अहस्तु ।

जल में । दोनो जलों में । जलों में । हविषि । हविषोः । हविष्यु ।

धनुषु । . . . . . धनुषि । धनुषोः । धनुष्यु ।

संस्कृत वाक्य ।

वारि तिष्ठन्ति मण्डूकाः । अहन्यग्नेर्न शोभते । हविषि  
ह्यमाने वृष्टिर्भूत् । इन्द्रस्य धनुषि दृष्टिं ददाति ।

इन संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद करो ।

हिन्दी वाक्य ।

पति में प्रेम । सज्जन के लिये सज्जन । तीनों लोक में  
प्रसिद्ध । दाता से मांगना । राम में अनुराग । मुनि में भक्ति ।  
आत्मा सर्वत्र है । मित्र में स्नेह । बेल पर दया । पण्डित से प्रिय  
वचन ।

जब धेनु दूही जाती थीं देवदत्त आया । यह आकाश  
में घूमते हैं । लोग लक्ष्मी में अनुराग करते हैं । सब अवस्थाओं  
में धर्म करना चाहिये । स्त्रियों में पतिव्रता स्वर्ग जाती है ।  
( घर में ) बहू लोग सन्तुष्ट रहें तो लक्ष्मी बढ़ती है । नदी के  
समीप गांव । लक्ष्मी में उत्कण्ठित हरि । चक्रवर्ती के भों के टेंडी  
होने पर संसार डरता है । नाव पर बैठा । कन्या में स्नेह ।  
कवियों की बुद्धि पर सरस्वती रहती है ।

जल में कमल शोभित होते हैं । फूल के रस पर लुभाया  
भोग । दही में घी रहता है । मुक्ति ज्ञान पर आश्रित है ।



बुद्धिमान विद्यार्थी में अध्यापक का परिश्रम सफल होता है। बेल पर चढ़े महादेव। चक्रवर्तियों में श्रीमती विजयिनी देवी अधिक प्रताप रखती हैं। जब कृष्ण दूधने वाले हुए गाय बहुत दूध देने लगीं। विद्वान को आति (देखकर) उठना चाहिये। बड़ार्हे में किस की अभिलाष नहीं होती। चार खेतों का पढ़ने वाला। पहाड़ों में हिमालय अति ऊँचा है। चलने वाले में धायन शीघ्रगामी होता है। शान्त (पुरुष) में लेग अनुराग करते हैं। जब आग मथनेवाला आग मथता है देयता प्रसन्न होते हैं। श्रीमती भारतेश्वरी (सकल) राजाओं की स्वामिनी हैं। पुत्र पुत्रा होने पर बुद्धिमान (पुरुष) वन में चले जाते हैं। दण्डी के मरने पर उस का दाह नहीं होता। यज्ञ करनेवाले में प्रीति। पुत्र के परिडित होने पर पिता प्रसन्न होता है। श्रेष्ठ पुरुष में गुण बसते हैं। पथ समाप्त होने पर पथिक विग्राम करता है। ब्रह्म में भक्ति।

चन्द्र के प्रकाश में कुमुदिनी के फूल फूलते हैं। आकाश में तारा चमकते हैं। पानी में जल के जीव रहते हैं। विपनि में धीरता। धार्मिक लोग (अपने) वचन में स्थिर रहते हैं। चार दिशाओं में चार हाथी हैं। माला में मूल। पाषाण का स्वामी।

दिन में अग्नि की शोभा नहीं होती। इन्द्र के धनुष में दृष्टि देता है। जल में मेड़क रहते हैं। (आग में) होम की वस्तु होने जाने पर दृष्टि हुई।

एक हिन्दी वाक्यों का संग्रह में उन्दा फों।

हिन्दी शब्द।

पुस्तिका।

बच्चन  
यानक में-पर  
सङ्ग्रे में-पर

बच्चन  
यानकी में-पर  
सङ्ग्रे में-पर

मुनि में-पर  
माली में-पर  
साधु में-पर  
भालू में-पर  
चौबे में-पर  
कोदा में-पर

मुनियों में-पर  
मालियों में-पर  
साधुओं में-पर  
भालुओं में-पर  
चौबेओं में-पर  
कोदाओं में-पर

स्त्रीलिङ्ग ।

घात में-पर  
गैया में-पर  
तिथि में-पर  
नदी में-पर  
धेनु में-पर  
बहू में-पर  
सरसों में-पर

घातों में-पर  
गैयाओं में-पर  
तिथियों में-पर  
नदियों में-पर  
धेनुओं में-पर  
बहूओं में-पर  
सरसोंओं में-पर

आठवां पाठ ।

सम्बोधन ।

सम्बोधन का अर्थ अभिमुख करना है । जैसे । जब कोई पुरुष अपने लड़के से कहता है कि " हे पुत्र त्वं व्याकरणं पठ । हे बेटा तू व्याकरण पढ़ । तो वह उसको अपने अभिमुख करके व्याकरण पढ़ने की आज्ञा देता है । इस अभिमुख करने को सम्बोधन और जो अभिमुख किया जाय उसे सम्बोध्य कहते हैं ।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में सम्बोध्य के आगे सम्बोधन अर्थ में प्रथमा विभक्ति आती है । संस्कृत में इस

प्रथमा के कहीं २ विसर्ग आदि चिह्न रहते हैं। हिन्दी में इस का कहीं भी कुछ चिह्न नहीं रहता।

संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में सम्बोधन के साथ सम्बोधन रूप अर्थ के प्रकाश करने के लिये हे, अरे, इत्यादि शब्द जोड़े जाते हैं। जैसे। उक्त उदाहरण में हे शब्द है। कहीं नहीं भी जोड़े जाते। जैसे। राम मां पाहि। राम मेरी रक्षा करो। इत्यादि।

अजन्त पुल्लिङ्ग शब्द।

हे राम। हे रामो। हे रामाः। हे सखे। हे सखायौ। हे स-  
हे राम। हे दोनों रामो। खायः।

हे रामो। हे सुधोः। हे सुधियो। हे सु-  
हे सर्वे। हे सर्वो। हे सर्वे। धियः।

हे वयः। हे साधो। हे साधू। हे साधयः।  
हे पूर्वे। हे पूर्वो। हे पूर्वे। हे स्वयम्भूः। हे स्वयम्भुवो।

पूर्वोः। हे स्वयम्भुयः।

हे मुने। हे मुनी। हे मुनयः। हे दासः। हे दासरो। हे दासारः।  
हे पते। हे पती। हे पतयः। हे गोः। हे गावो। हे गायः।

कृष्ण मुकुन्द आदि शब्द राम शब्द के, विष्णु आदि अ-  
कारान्त शब्द सर्वे शब्द के, पर आदि शब्द पूर्वे शब्द के, अग्नि  
रवि क्षिति आदि शब्द मुनि शब्द के, विष्णु धामु भानु आदि शब्द  
साधु शब्द के, धामु आदि शब्द दासु शब्द के समान होते हैं।

अजन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द।

हे रमे। हे रमे। हे रमाः। हे सर्वे। हे सर्वे। हे सर्वाः।  
हे रमा। हे दोनों रमायो। हे तिस्रः।

हे रमायो। हे मती। हे मती। हे मतयः।

हे नदि । हे नद्यौ । हे नदाः । हे भूः । हे भूवौ । हे भुवः ।  
 हे श्रीः । हे श्रियो । हे श्रियः । हे दुहितः । हे दुहितरौ । हे  
 हे स्त्रि । हे स्त्रियो । हे स्त्रियः । दुहितरः ।  
 हे धेनो । हे धेनू । हे धेनवः । हे द्यौः । हे द्यौवौ । हे द्यावः ।  
 हे वधु । हे वध्वौ । हे वध्यः । हे नौः । हे नौवौ । हे नावः ।

दुर्गा आदि शब्द रमा शब्द के, विश्वा आदि आबन्त शब्द  
 सर्वा शब्द के, श्रुति स्मृति आदि शब्द मति शब्द के, गौरी वाणी  
 आदि शब्द नदी शब्द के तुल्य होते हैं ।

अत्रन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

हे ज्ञान । हे ज्ञाने । हे ज्ञानानि । हे दधे । हे दधि । हे दधिनी ।  
 हे ज्ञान । हे देनो ज्ञाने । हे दधीनि ।  
 हे ज्ञाने । हे मधो । हे मधु । हे मधुनो ।  
 हे वारे । हे वारि । हे वारिणी । हे मधुनि ।  
 हे वारीणि ।

धन र्वन पल इत्यादि शब्द ज्ञान शब्द के, अस्थि सक्रिय  
 अस्ति शब्द दधि शब्द के, अम्बु आदि शब्द मधु शब्द के  
 समान होते हैं ।

इलन्त पुल्लिङ्ग शब्द ।

हे ध्रु । हे ध्रुग् । हे दुहो । हे पट् ।  
 हे दुहः । हे अष्टा । हे अष्ट ।  
 हे दूहने वाले । हे दोनो दूहने हे समट् । हे सम्राड् । हे स-  
 वालो । हे दूहने वालो । हे सम्राजः ।  
 हे अनड्डन् । हे अनड्डाहो । हे भूभृत् । हे भूभृतो । हे भूभृतः ।  
 हे अनड्डाहः । हे धीमन् । हे धीमन्तो । हे  
 हे चत्वारः । धीमन्ताः ।  
 हे पशु ।

हे गच्छन् । हे गच्छगन्तो । हे युवन् । हे युवानो । हे यु-  
हे गच्छन्तः । वानः ।

हे प्रशान् । हे प्रशामो । हे प्रशामः । हे राजन् । हे राजानो । हे रा-  
हे भुत् । हे भुधो । हे भुधः । ज्ञानः ।

हे अग्निमत् । हे अनिमयो । हे दण्डिन् । हे दण्डिनो ।  
हे अनिमयः । हे दण्डिनः ।

हे प्राङ् । हे प्राञ्चो । हे प्राञ्चः । हे पन्थाः । हे पन्थानो । हे प-  
पूर्वधत् । न्यानः ।

हे उदङ् । हे उदञ्चो । हे वेधः । हे वेधसो । वेधसः ।  
हे उदञ्चः । हे विद्वान् । हे विद्वान्सो । हे वि-

हे महिमन् । हे महिमानो । द्वांसः ।

हे महिमानः । हे गरीयन् । हे गरीयान्सो । हे

हे यज्यन् । हे यज्याने । हे य- गरीयान्सः ।

ज्यानः । हे पुमन् । हे पुमान्सो । हे पु-  
मांसः ।

द्वतन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

हे द्योः । हे दियो । हे दिवः । हे त्विद् । हे त्विद् । हे त्वि-  
हे अकाश । हे दोनां आकाशो । यो । हे त्वियः ।

हे अकाशो ।

हे गीः । हे गिरो । हे गिरः ।

हे चतस्रः ।

हे षापत् । हे षाटो । हे षा-

हे याक् । हे याग् । हे याचो । यदः ।

हे याचः ।

हे षापः ।

हे सक् । हे सग् । हे सजो । हे दिक् । हे दिग् ।

हे सजः ।

हे दियो । हे दिगः ।

पूर शब्द गिर शब्द के तुल्य होता है ।

दलन्त नपुंसकलिङ्ग शब्द ।

हे घाः । हे घारी । हे वारि । हे अहः । हे अही । हे अहनी ।  
हे जल । हे दोनों जलो । हे अहानी ।

हे जलो । हे हविः । हे हविषी । हे हवीषि ।  
हे चत्वारि । हे धनुः । हे धनुषी । हे धनूषि ।

चतुसु शब्द धनुस् शब्द के समान आता है ।

हिन्दी शब्द ।

हिन्दी में सम्बोधन की प्रथमा के एक वचन में पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों प्रकार के शब्द ज्यों के त्यों बने रहते हैं । केवल आकारान्त पुलिङ्ग शब्दों के अन्त आकार को एकार होता है । और बहुवचन में ह्रस्व अकारान्त और दीर्घ अकारान्त शब्दों के अन्त स्यरां को ओकार, और ह्रस्व इकारान्त शब्दों के अन्त ईकार के आगे यो और दीर्घ ईकारान्त शब्दों के अन्त ईकार के ह्रस्व इकार और उस के आगे यो, और ह्रस्व उकारान्त शब्दों के अन्त उकार के आगे ओ, और दीर्घ उकारान्त शब्दों के अन्त उकार को ह्रस्व उकार और उस के आगे ओ, और एकारान्त और ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त आकार के आगे ओ का आगम होता है ।

पुलिङ्ग ।

शब्द-  
हे ब लक  
हे लड़के  
हे मुनि  
हे माली

चतुसु-  
हे बालको  
हे लड़को  
हे मुनियो  
हे मालियो

हे साधु  
हे भालु  
हे चौबे  
हे कोदो

हे साधुओ  
हे भालुओ  
हे चौबेओ  
हे कोदोओ

स्त्रीलिङ्ग ।

हे वात  
हे गैया  
हे तिथि  
हे नदी  
हे धेनु  
हे बहू  
हे सरसों

हे वातो  
हे गैयाओ  
हे तिथिओ  
हे नदियो  
हे धेनुओ  
हे बहूओ  
हे सरसोंओ

इति ।

